

# TYSSSEDAL



**10 år som prøvestein  
på klassekampen**





TYSSEDAL –  
*10 års klassekamp*

Utgjeven av  
Arbeidernes Kommunistparti (m-l)  
i Odda og Tyssedal





## Forord

Det heftet dere no skal ta fatt på er både skarpt og avslørende. Det er et kampskrift mot alt classesamarbid — mot at tillitsmenn lar seg bruke av bedriftsledelsen mot arbeidskameraters interesser.

Det retter seg mot den sosialdemokratiske ledelsen som i mange år forsøkte å få krafta ut av kommunen, men som no prøver å høste av den kamp vi i Tyssedal fører.

Heftet prøver å få fram borgerskapets «myke» diktatur, som med tusen midler kan fortsette undertrykkelsen av arbeidsfolk og som gjennom oppkjøp og bestikkelser har kontroll over betydelige deler av tillitsmannsapparatet. Det viser også LO-ledelsens dobbeltspill, med støtte i ord og motarbeidelse i handling.

Men ikke minst er dette et kampskrift for alle de i Tyssedal, Odda og utover i landet som med hele sitt hjerte har jobba for at Tyssedal skulle vinne. På tross av motgang og vanskeligheter har disse hatt tru på at en bare kan seire når arbeidsfolk organiserer seg og fører kamp på egne premisser.

Så langt vi har klart det er dette et dokumentarisk hefte. Mye av det innsamla materialet er ikke brukt — da ville heftet blitt for stort. Men våre påstander kan dokumenteres.

Vi har en lang vei å gå for å skape et samfunn der produksjon og samfunnsutvikling er til beste for oss «vanlige» folk. Men uansett hvor lang vei det er fram, vil vi ikke nå dit uten å begynne å gå.

Utviklinga framover vil tvinge oss til å føre forsvarskamper for arbeidsplasser og bosetting i dette landet. Jeg håper vårt bidrag kan gi denne kampen økt styrke.

Klarer vi å oppnå noe av dette vil AKP(m-l) inne i fjorden hos oss, være svært fornøyd og vårt arbeid vil ikke ha vært forgjeves.

Jeg mener at det no er helt nødvendig å skjerpe kampen mot classesamarbeidet. Hvis det ikke skjer vil arbeidsfolk stå forsvarsløse mot det angrepet kapitalkreftene har satt i gang.

Lykke til!

*Vidar Våde, Tyssedal*





## Innhold:

|                                                                                      |     |
|--------------------------------------------------------------------------------------|-----|
| Tyssedalsangen .....                                                                 | 9   |
| Kronologisk gjennomgang av Tyssedal-saka .....                                       | 10  |
| Tyssedal — fram til 1973 .....                                                       | 12  |
| Espen Haavardsholm: En tale som ikke blir holdt for jubilentene ved DNN .....        | 14  |
| EEC-tilhengerne trapper opp .....                                                    | 16  |
| 1973 — etterkrigstidas økonomiske høydepunkt .....                                   | 19  |
| Folkeaksjonen som aldri blei starta og kvifor.....                                   | 21  |
| Odda RV sitt valprogram 1975 .....                                                   | 24  |
| Alternativ industri.....                                                             | 25  |
| Kampen i fagforeninga om standpunktet til bygging av nytt aluminiumsverk .....       | 27  |
| Aluminium — teknisk og økonomisk forsvarleg .....                                    | 28  |
| DNA sin strategi .....                                                               | 34  |
| Forslag til handlingsprogram for avd.44 i DNN-saka .....                             | 36  |
| Aluminium vinn gjennom .....                                                         | 37  |
| Status etter 8 år .....                                                              | 38  |
| Mellomspel eller forsmak.....                                                        | 39  |
| Høgre-regjeringa tek over .....                                                      | 40  |
| 19. februar 1982: Ilmenitt-proposisjon .....                                         | 48  |
| Streiken — sommaren -82 .....                                                        | 58  |
| Dagboknotater .....                                                                  | 61  |
| «Tilbake til normalt leie...» .....                                                  | 64  |
| Ny «folkekomite»? .....                                                              | 66  |
| Korleis står vi no — sommaren 1982? .....                                            | 68  |
| Nye permitteringar — oppseiingar — men også vilje til å sloss .....                  | 69  |
| Festforestilling i Tyssedal .....                                                    | 78  |
| Tverrpolitisk plan for å rasera distrikts-Norge .....                                | 80  |
| Ny stor massemønstring .....                                                         | 87  |
| Aluminium? NÅ? .....                                                                 | 95  |
| Aluminiumverket — en lønnsom bedrift som Tyssedal trenger nå .....                   | 96  |
| Kva lærdommar har AKP(m-l) hausta gjennom desse ti åra? .....                        | 109 |
| Korleis oppsummerer AKP(m-l) stoda i dag og kva muligheter har Tyssedal framover? .. | 110 |

## Innhold

|                  |     |
|------------------|-----|
| 1. Innledning    | 1   |
| 2. Bakgrunn      | 2   |
| 3. Mål og formål | 3   |
| 4. Gjennomføring | 4   |
| 5. Resultater    | 5   |
| 6. Oppsummering  | 6   |
| 7. Vedlegg       | 7   |
| 8. Referanser    | 8   |
| 9. Bilag         | 9   |
| 10. Bilag 1      | 10  |
| 11. Bilag 2      | 11  |
| 12. Bilag 3      | 12  |
| 13. Bilag 4      | 13  |
| 14. Bilag 5      | 14  |
| 15. Bilag 6      | 15  |
| 16. Bilag 7      | 16  |
| 17. Bilag 8      | 17  |
| 18. Bilag 9      | 18  |
| 19. Bilag 10     | 19  |
| 20. Bilag 11     | 20  |
| 21. Bilag 12     | 21  |
| 22. Bilag 13     | 22  |
| 23. Bilag 14     | 23  |
| 24. Bilag 15     | 24  |
| 25. Bilag 16     | 25  |
| 26. Bilag 17     | 26  |
| 27. Bilag 18     | 27  |
| 28. Bilag 19     | 28  |
| 29. Bilag 20     | 29  |
| 30. Bilag 21     | 30  |
| 31. Bilag 22     | 31  |
| 32. Bilag 23     | 32  |
| 33. Bilag 24     | 33  |
| 34. Bilag 25     | 34  |
| 35. Bilag 26     | 35  |
| 36. Bilag 27     | 36  |
| 37. Bilag 28     | 37  |
| 38. Bilag 29     | 38  |
| 39. Bilag 30     | 39  |
| 40. Bilag 31     | 40  |
| 41. Bilag 32     | 41  |
| 42. Bilag 33     | 42  |
| 43. Bilag 34     | 43  |
| 44. Bilag 35     | 44  |
| 45. Bilag 36     | 45  |
| 46. Bilag 37     | 46  |
| 47. Bilag 38     | 47  |
| 48. Bilag 39     | 48  |
| 49. Bilag 40     | 49  |
| 50. Bilag 41     | 50  |
| 51. Bilag 42     | 51  |
| 52. Bilag 43     | 52  |
| 53. Bilag 44     | 53  |
| 54. Bilag 45     | 54  |
| 55. Bilag 46     | 55  |
| 56. Bilag 47     | 56  |
| 57. Bilag 48     | 57  |
| 58. Bilag 49     | 58  |
| 59. Bilag 50     | 59  |
| 60. Bilag 51     | 60  |
| 61. Bilag 52     | 61  |
| 62. Bilag 53     | 62  |
| 63. Bilag 54     | 63  |
| 64. Bilag 55     | 64  |
| 65. Bilag 56     | 65  |
| 66. Bilag 57     | 66  |
| 67. Bilag 58     | 67  |
| 68. Bilag 59     | 68  |
| 69. Bilag 60     | 69  |
| 70. Bilag 61     | 70  |
| 71. Bilag 62     | 71  |
| 72. Bilag 63     | 72  |
| 73. Bilag 64     | 73  |
| 74. Bilag 65     | 74  |
| 75. Bilag 66     | 75  |
| 76. Bilag 67     | 76  |
| 77. Bilag 68     | 77  |
| 78. Bilag 69     | 78  |
| 79. Bilag 70     | 79  |
| 80. Bilag 71     | 80  |
| 81. Bilag 72     | 81  |
| 82. Bilag 73     | 82  |
| 83. Bilag 74     | 83  |
| 84. Bilag 75     | 84  |
| 85. Bilag 76     | 85  |
| 86. Bilag 77     | 86  |
| 87. Bilag 78     | 87  |
| 88. Bilag 79     | 88  |
| 89. Bilag 80     | 89  |
| 90. Bilag 81     | 90  |
| 91. Bilag 82     | 91  |
| 92. Bilag 83     | 92  |
| 93. Bilag 84     | 93  |
| 94. Bilag 85     | 94  |
| 95. Bilag 86     | 95  |
| 96. Bilag 87     | 96  |
| 97. Bilag 88     | 97  |
| 98. Bilag 89     | 98  |
| 99. Bilag 90     | 99  |
| 100. Bilag 91    | 100 |
| 101. Bilag 92    | 101 |
| 102. Bilag 93    | 102 |
| 103. Bilag 94    | 103 |
| 104. Bilag 95    | 104 |
| 105. Bilag 96    | 105 |
| 106. Bilag 97    | 106 |
| 107. Bilag 98    | 107 |
| 108. Bilag 99    | 108 |
| 109. Bilag 100   | 109 |
| 110. Bilag 101   | 110 |
| 111. Bilag 102   | 111 |
| 112. Bilag 103   | 112 |
| 113. Bilag 104   | 113 |
| 114. Bilag 105   | 114 |
| 115. Bilag 106   | 115 |
| 116. Bilag 107   | 116 |
| 117. Bilag 108   | 117 |
| 118. Bilag 109   | 118 |
| 119. Bilag 110   | 119 |
| 120. Bilag 111   | 120 |
| 121. Bilag 112   | 121 |
| 122. Bilag 113   | 122 |
| 123. Bilag 114   | 123 |
| 124. Bilag 115   | 124 |
| 125. Bilag 116   | 125 |
| 126. Bilag 117   | 126 |
| 127. Bilag 118   | 127 |
| 128. Bilag 119   | 128 |
| 129. Bilag 120   | 129 |
| 130. Bilag 121   | 130 |
| 131. Bilag 122   | 131 |
| 132. Bilag 123   | 132 |
| 133. Bilag 124   | 133 |
| 134. Bilag 125   | 134 |
| 135. Bilag 126   | 135 |
| 136. Bilag 127   | 136 |
| 137. Bilag 128   | 137 |
| 138. Bilag 129   | 138 |
| 139. Bilag 130   | 139 |
| 140. Bilag 131   | 140 |
| 141. Bilag 132   | 141 |
| 142. Bilag 133   | 142 |
| 143. Bilag 134   | 143 |
| 144. Bilag 135   | 144 |
| 145. Bilag 136   | 145 |
| 146. Bilag 137   | 146 |
| 147. Bilag 138   | 147 |
| 148. Bilag 139   | 148 |
| 149. Bilag 140   | 149 |
| 150. Bilag 141   | 150 |
| 151. Bilag 142   | 151 |
| 152. Bilag 143   | 152 |
| 153. Bilag 144   | 153 |
| 154. Bilag 145   | 154 |
| 155. Bilag 146   | 155 |
| 156. Bilag 147   | 156 |
| 157. Bilag 148   | 157 |
| 158. Bilag 149   | 158 |
| 159. Bilag 150   | 159 |
| 160. Bilag 151   | 160 |
| 161. Bilag 152   | 161 |
| 162. Bilag 153   | 162 |
| 163. Bilag 154   | 163 |
| 164. Bilag 155   | 164 |
| 165. Bilag 156   | 165 |
| 166. Bilag 157   | 166 |
| 167. Bilag 158   | 167 |
| 168. Bilag 159   | 168 |
| 169. Bilag 160   | 169 |
| 170. Bilag 161   | 170 |
| 171. Bilag 162   | 171 |
| 172. Bilag 163   | 172 |
| 173. Bilag 164   | 173 |
| 174. Bilag 165   | 174 |
| 175. Bilag 166   | 175 |
| 176. Bilag 167   | 176 |
| 177. Bilag 168   | 177 |
| 178. Bilag 169   | 178 |
| 179. Bilag 170   | 179 |
| 180. Bilag 171   | 180 |
| 181. Bilag 172   | 181 |
| 182. Bilag 173   | 182 |
| 183. Bilag 174   | 183 |
| 184. Bilag 175   | 184 |
| 185. Bilag 176   | 185 |
| 186. Bilag 177   | 186 |
| 187. Bilag 178   | 187 |
| 188. Bilag 179   | 188 |
| 189. Bilag 180   | 189 |
| 190. Bilag 181   | 190 |
| 191. Bilag 182   | 191 |
| 192. Bilag 183   | 192 |
| 193. Bilag 184   | 193 |
| 194. Bilag 185   | 194 |
| 195. Bilag 186   | 195 |
| 196. Bilag 187   | 196 |
| 197. Bilag 188   | 197 |
| 198. Bilag 189   | 198 |
| 199. Bilag 190   | 199 |
| 200. Bilag 191   | 200 |
| 201. Bilag 192   | 201 |
| 202. Bilag 193   | 202 |
| 203. Bilag 194   | 203 |
| 204. Bilag 195   | 204 |
| 205. Bilag 196   | 205 |
| 206. Bilag 197   | 206 |
| 207. Bilag 198   | 207 |
| 208. Bilag 199   | 208 |
| 209. Bilag 200   | 209 |
| 210. Bilag 201   | 210 |
| 211. Bilag 202   | 211 |
| 212. Bilag 203   | 212 |
| 213. Bilag 204   | 213 |
| 214. Bilag 205   | 214 |
| 215. Bilag 206   | 215 |
| 216. Bilag 207   | 216 |
| 217. Bilag 208   | 217 |
| 218. Bilag 209   | 218 |
| 219. Bilag 210   | 219 |
| 220. Bilag 211   | 220 |
| 221. Bilag 212   | 221 |
| 222. Bilag 213   | 222 |
| 223. Bilag 214   | 223 |
| 224. Bilag 215   | 224 |
| 225. Bilag 216   | 225 |
| 226. Bilag 217   | 226 |
| 227. Bilag 218   | 227 |
| 228. Bilag 219   | 228 |
| 229. Bilag 220   | 229 |
| 230. Bilag 221   | 230 |
| 231. Bilag 222   | 231 |
| 232. Bilag 223   | 232 |
| 233. Bilag 224   | 233 |
| 234. Bilag 225   | 234 |
| 235. Bilag 226   | 235 |
| 236. Bilag 227   | 236 |
| 237. Bilag 228   | 237 |
| 238. Bilag 229   | 238 |
| 239. Bilag 230   | 239 |
| 240. Bilag 231   | 240 |
| 241. Bilag 232   | 241 |
| 242. Bilag 233   | 242 |
| 243. Bilag 234   | 243 |
| 244. Bilag 235   | 244 |
| 245. Bilag 236   | 245 |
| 246. Bilag 237   | 246 |
| 247. Bilag 238   | 247 |
| 248. Bilag 239   | 248 |
| 249. Bilag 240   | 249 |
| 250. Bilag 241   | 250 |
| 251. Bilag 242   | 251 |
| 252. Bilag 243   | 252 |
| 253. Bilag 244   | 253 |
| 254. Bilag 245   | 254 |
| 255. Bilag 246   | 255 |
| 256. Bilag 247   | 256 |
| 257. Bilag 248   | 257 |
| 258. Bilag 249   | 258 |
| 259. Bilag 250   | 259 |
| 260. Bilag 251   | 260 |
| 261. Bilag 252   | 261 |
| 262. Bilag 253   | 262 |
| 263. Bilag 254   | 263 |
| 264. Bilag 255   | 264 |
| 265. Bilag 256   | 265 |
| 266. Bilag 257   | 266 |
| 267. Bilag 258   | 267 |
| 268. Bilag 259   | 268 |
| 269. Bilag 260   | 269 |
| 270. Bilag 261   | 270 |
| 271. Bilag 262   | 271 |
| 272. Bilag 263   | 272 |
| 273. Bilag 264   | 273 |
| 274. Bilag 265   | 274 |
| 275. Bilag 266   | 275 |
| 276. Bilag 267   | 276 |
| 277. Bilag 268   | 277 |
| 278. Bilag 269   | 278 |
| 279. Bilag 270   | 279 |
| 280. Bilag 271   | 280 |
| 281. Bilag 272   | 281 |
| 282. Bilag 273   | 282 |
| 283. Bilag 274   | 283 |
| 284. Bilag 275   | 284 |
| 285. Bilag 276   | 285 |
| 286. Bilag 277   | 286 |
| 287. Bilag 278   | 287 |
| 288. Bilag 279   | 288 |
| 289. Bilag 280   | 289 |
| 290. Bilag 281   | 290 |
| 291. Bilag 282   | 291 |
| 292. Bilag 283   | 292 |
| 293. Bilag 284   | 293 |
| 294. Bilag 285   | 294 |
| 295. Bilag 286   | 295 |
| 296. Bilag 287   | 296 |
| 297. Bilag 288   | 297 |
| 298. Bilag 289   | 298 |
| 299. Bilag 290   | 299 |
| 300. Bilag 291   | 300 |
| 301. Bilag 292   | 301 |
| 302. Bilag 293   | 302 |
| 303. Bilag 294   | 303 |
| 304. Bilag 295   | 304 |
| 305. Bilag 296   | 305 |
| 306. Bilag 297   | 306 |
| 307. Bilag 298   | 307 |
| 308. Bilag 299   | 308 |
| 309. Bilag 300   | 309 |
| 310. Bilag 301   | 310 |
| 311. Bilag 302   | 311 |
| 312. Bilag 303   | 312 |
| 313. Bilag 304   | 313 |
| 314. Bilag 305   | 314 |
| 315. Bilag 306   | 315 |
| 316. Bilag 307   | 316 |
| 317. Bilag 308   | 317 |
| 318. Bilag 309   | 318 |
| 319. Bilag 310   | 319 |
| 320. Bilag 311   | 320 |
| 321. Bilag 312   | 321 |
| 322. Bilag 313   | 322 |
| 323. Bilag 314   | 323 |
| 324. Bilag 315   | 324 |
| 325. Bilag 316   | 325 |
| 326. Bilag 317   | 326 |
| 327. Bilag 318   | 327 |
| 328. Bilag 319   | 328 |
| 329. Bilag 320   | 329 |
| 330. Bilag 321   | 330 |
| 331. Bilag 322   | 331 |
| 332. Bilag 323   | 332 |
| 333. Bilag 324   | 333 |
| 334. Bilag 325   | 334 |
| 335. Bilag 326   | 335 |
| 336. Bilag 327   | 336 |
| 337. Bilag 328   | 337 |
| 338. Bilag 329   | 338 |
| 339. Bilag 330   | 339 |
| 340. Bilag 331   | 340 |
| 341. Bilag 332   | 341 |
| 342. Bilag 333   | 342 |
| 343. Bilag 334   | 343 |
| 344. Bilag 335   | 344 |
| 345. Bilag 336   | 345 |
| 346. Bilag 337   | 346 |
| 347. Bilag 338   | 347 |
| 348. Bilag 339   | 348 |
| 349. Bilag 340   | 349 |
| 350. Bilag 341   | 350 |
| 351. Bilag 342   | 351 |
| 352. Bilag 343   | 352 |
| 353. Bilag 344   | 353 |
| 354. Bilag 345   | 354 |
| 355. Bilag 346   | 355 |
| 356. Bilag 347   | 356 |
| 357. Bilag 348   | 357 |
| 358. Bilag 349   | 358 |
| 359. Bilag 350   | 359 |
| 360. Bilag 351   | 360 |
| 361. Bilag 352   | 361 |
| 362. Bilag 353   | 362 |
| 363. Bilag 354   | 363 |
| 364. Bilag 355   | 364 |
| 365. Bilag 356   | 365 |
| 366. Bilag 357   | 366 |
| 367. Bilag 358   | 367 |
| 368. Bilag 359   | 368 |
| 369. Bilag 360   | 369 |
| 370. Bilag 361   | 370 |
| 371. Bilag 362   | 371 |
| 372. Bilag 363   | 372 |
| 373. Bilag 364   | 373 |
| 374. Bilag 365   | 374 |
| 375. Bilag 366   | 375 |
| 376. Bilag 367   | 376 |
| 377. Bilag 368   | 377 |
| 378. Bilag 369   | 378 |
| 379. Bilag 370   | 379 |
| 380. Bilag 371   | 380 |
| 381. Bilag 372   | 381 |
| 382. Bilag 373   | 382 |
| 383. Bilag 374   | 383 |
| 384. Bilag 375   | 384 |
| 385. Bilag 376   | 385 |
| 386. Bilag 377   | 386 |
| 387. Bilag 378   | 387 |
| 388. Bilag 379   | 388 |
| 389. Bilag 380   | 389 |
| 390. Bilag 381   | 390 |
| 391. Bilag 382   | 391 |
| 392. Bilag 383   | 392 |
| 393. Bilag 384   | 393 |
| 394. Bilag 385   | 394 |
| 395. Bilag 386   | 395 |
| 396. Bilag 387   | 396 |
| 397. Bilag 388   | 397 |
| 398. Bilag 389   | 398 |
| 399. Bilag 390   | 399 |
| 400. Bilag 391   | 400 |
| 401. Bilag 392   | 401 |
| 402. Bilag 393   | 402 |
| 403. Bilag 394   | 403 |
| 404. Bilag 395   | 404 |
| 405. Bilag 396   | 405 |
| 406. Bilag 397   | 406 |
| 407. Bilag 398   | 407 |
| 408. Bilag 399   | 408 |
| 409. Bilag 400   | 409 |
| 410. Bilag 401   | 410 |
| 411. Bilag 402   | 411 |
| 412. Bilag 403   | 412 |
| 413. Bilag 404   | 413 |
| 414. Bilag 405   | 414 |
| 415. Bilag 406   | 415 |
| 416. Bilag 407   | 416 |
| 417. Bilag 408   | 417 |
| 418. Bilag 409   | 418 |
| 419. Bilag 410   | 419 |
| 420. Bilag 411   | 420 |
| 421. Bilag 412   | 421 |
| 422. Bilag 413   | 422 |
| 423. Bilag 414   | 423 |
| 424. Bilag 415   | 424 |
| 425. Bilag 416   | 425 |
| 426. Bilag 417   | 426 |
| 427. Bilag 418   | 427 |
| 428. Bilag 419   | 428 |
| 429. Bilag 420   | 429 |
| 430. Bilag 421   | 430 |
| 431. Bilag 422   | 431 |
| 432. Bilag 423   | 432 |
| 433. Bilag 424   | 433 |
| 434. Bilag 425   | 434 |
| 435. Bilag 426   | 435 |
| 436. Bilag 427   | 436 |
| 437. Bilag 428   | 437 |
| 438. Bilag 429   | 438 |
| 439. Bilag 430   | 439 |
| 440. Bilag 431   | 440 |
| 441. Bilag 432   | 441 |
| 442. Bilag 433   | 442 |
| 443. Bilag 434   | 443 |
| 444. Bilag 435   | 444 |
| 445. Bilag 436   | 445 |
| 446. Bilag 437   | 446 |
| 447. Bilag 438   | 447 |
| 448. Bilag 439   | 448 |
| 449. Bilag 440   | 449 |
| 450. Bilag 441   | 450 |
| 451. Bilag 442   | 451 |
| 452. Bilag 443   | 452 |
| 453. Bilag 444   | 453 |
| 454. Bilag 445   | 454 |
| 455. Bilag 446   | 455 |
| 456. Bilag 447   | 456 |
| 457. Bilag 448   | 457 |
| 458. Bilag 449   | 458 |
| 459. Bilag 450   | 459 |
| 460. Bilag 451   | 460 |
| 461. Bilag 452   | 461 |
| 462. Bilag 453   | 462 |
| 463. Bilag 454   | 463 |
| 464. Bilag 455   | 464 |
| 465. Bilag 456   | 465 |
| 466. Bilag 457   | 466 |
| 467. Bilag 458   | 467 |





*Tyssedal i dag. (Foto: Arne Joramo)*

## Tyssedal-sangen

Høye fjell og høye tinder  
ved Hardangerfjordens strand  
og en bre som evig skinner  
i en herlig jøkelbrann.  
Over land og fjellportal  
se der ligger Tyssedal.

Og der skapte fossefallet  
denne sterke virkefrang  
som til arbeid kaller alle  
under industriens gang.  
Arbeidsgny og fossefall  
klinger stort i Tyssedal.

Kjær er dalen for oss alle  
her vi virket mange år  
og med glede vi vil kalle  
denne dalen heimen vår.  
Hvor i alvor, sang og trall,  
leves liv i Tyssedal.



# Kronologisk gjennomgang av Tyssedal-saka

## 19. mars 1973

Alcan & Baco, eigarane av DNN Aluminium A/S sender uventa ut pressemelding om at DNN i Eydehavn skal nedleggjast, medan DNN i Tyssedal skal halda fram produksjonen inntil vidare.

## 22. juni 1973

Elektrokjemisk Arbeiderforening, avd. 44 av NKIF, gjev ut kvitbok som krev oppretthalding av antal arbeidsplassar og at krafta skal vera i Tyssedal som garanti for framtidige arbeidsplassar. Kvitboka truar med aksjonar om ikkje krava blir innfridde.

## 21. mars 1973

Odda Formannskap stør avd. 44. Set ned eit fagleg-kommunalt utval — DNN-utvalet (seinare Tyssedal-utvalet) — som skal ha kontakten med Industridepartementet.

## 24. juli 1973

Medlemsmøte i avd. 44 gjer vedtak om at samarbeidsavtalen med bedriften skal seiast opp. Situasjonen er spent i Tyssedal.

Regjeringsskiftet hausten 1973 forseinkar forhandlingane som er kome i stand med Industridepartementet. Alcan og Baco er motvillige forhandlingspartnarar. Tida går.

## 14. mars 1974

Industriministar Ingvald Ulveseth rykkjer ut på vegne av Regjeringa og garanterer arbeidsplassane i Tyssedal.

## 1. mai 1974

Største 1. mai-demonstrasjon i Tyssedal i manns minne. 450 i tog og Vidar Våde er 1. mai-talar.

## 21. mai 1974

Telefonsamtale frå departementet som ber om «arbeidsro» — ønskjer ingen lokale utspel før neste møte (26.6.) då det er venta at ei avklaring vil finna stad. DNN-utvalet lover at det ikkje skal skje lokale utspel.

## 10. juni 1974

Underskriftskampanja blant dei tilsette vert stoppa av kritikk i lokal-

pressa. «Folkekomiteen» vert nedlagt før han vert oppretta.

## 25. september 1974

Odda Kommunestyre gjer vedtak som opnar opp for å byta bort krafta mot «alternativ» industri i Tyssedal.

I dei neste månadene og åra vert det lagt fram ei rad «alternativer» — som alle hadde det til felles at mesteparten av Tyssedalskrafta skulle først ut i bytte mot vesentleg færre arbeidsplassar enn dei 400 som var selsatt på DNN Aluminium.

## 18. november 1976

Uravrøysting ved DNN Aluminium synte at 92,24% av arbeidsstokken svara «JA» på spørsmålet om dei

ønskte ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal.

## 1979

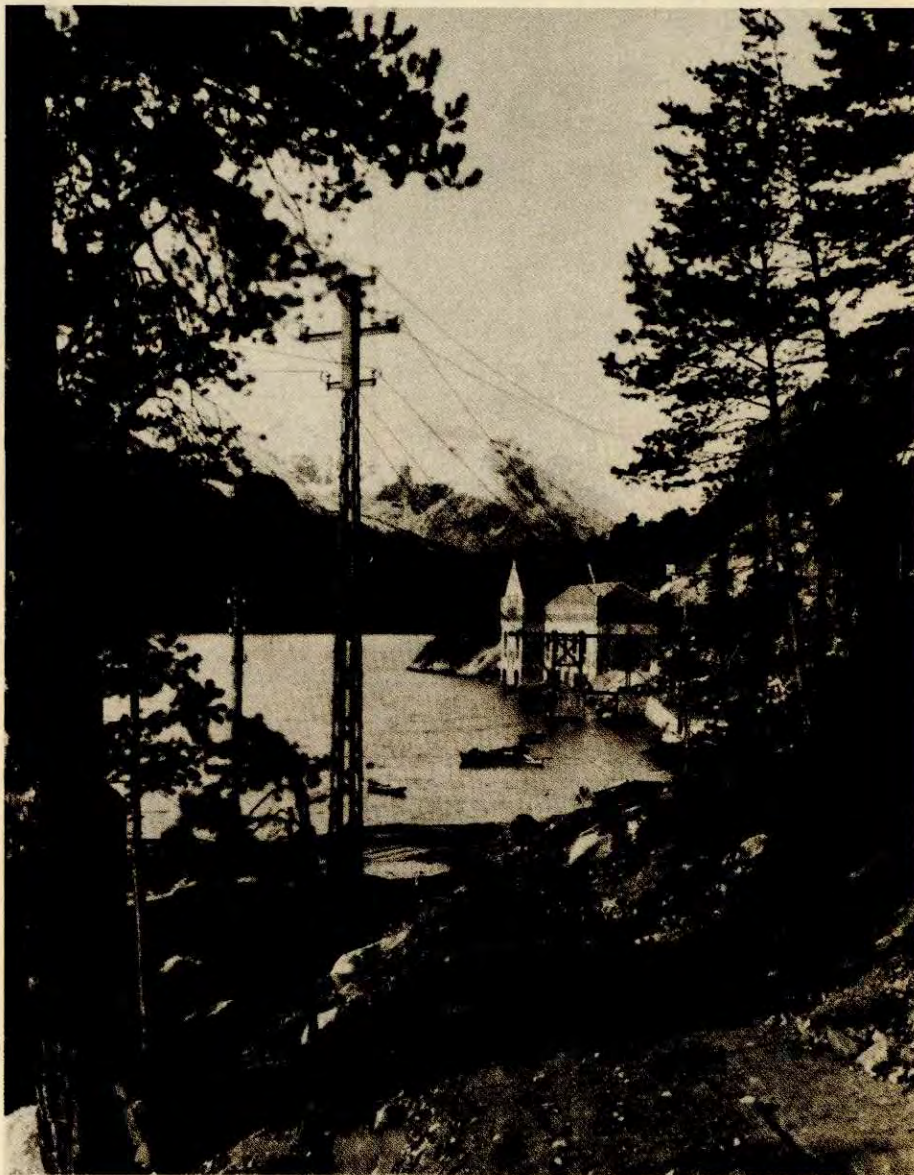
Avd. 44 gjer vedtak som krev ny aluminiumsfabrikk.

## September 1980

Regjeringa sender ut melding om at dei vil fremma forslag om modernisering av aluminiumsfabrikken i Tyssedal.

## 29. mai 1981

Stortinget gjer samrøystes vedtak om modernisering av aluminiumsfabrikken i Tyssedal. Utviding av produksjonen til ca. 60 000 t pr. år og min. 262 tilsette. Oppstart: Hausten 1985.





#### 4. november 1981

Regjeringa Willoch foreslår at ein ikkje løyver 100 millionar kr. til DNN og signaliserer nyvurdering av aluminium-verket. Tyssedal og Odda svarer med generalstreik — lammar heile distriktet.

#### 30. november 1981

DNN får sine 100 mill., men regjeringa lovar å koma attende med ei nyvurdering over nyåret.

#### 19. februar 1982

Regjeringa legg fram proposisjonen som seier Nei til aluminium og Ja til vidare utredningar om eit ilmenitt-smelteverk i Tyssedal.

#### 1. mars 1982

Ca. 75 blir permitterte frå DNN Aluminium.

#### 1. mai 1982

300 i tog i Tyssedal i surt regn og vind med krav om aluminium.

#### 26. mai 1982

Avd. 44 gjer vedtak om å gå til full streik frå 28. mai om ikkje det er fleirtal i Stortinget for aluminium.

#### 28. mai 1982

Full streik på DNN Aluminium.

#### 2. juni 1982

Generalstreik i heile Odda! Full streik også på A/S Tyssefaldene.

#### 6. juni 1982

300 tyssedøler og oddingar til Oslo i demonstrasjon i og utanfor Stortinget.

#### 7. juni 1982

Vedtak om å arbeida vidare med planane om ilmenitt, men Nei til aluminium.

#### 8. juni 1982

Avsluttande streikemøte gjer vedtak om å setta ned eit interimstyre som skal kalla inn til nytt folkemøte for å diskutera vidare organisering av kampen for Tyssedal.

#### 14. juni 1982

Velforeningen Leve Tyssedal vert skipa på folkemøte.

#### August 1982

Trussel om nye permitteringar ved DNN.



#### 19. august 1982

Permitteringane vert gjennomførte — ei veke på arbeid, ei veke heime.

#### 23. august 1982

Velforeninga Leve Tyssedal skipar til folkemøte som vedtar underskriftskampanje. Diskusjonen om å nytta krafta som kampmiddel startar.

#### Oktober 1982

Samrøystes vedtak i styret i avd. 43, fellesstyret i NKIF, Samorg, Leve Tyssedal og avd. 44 som nemner krafta som aktuelt kampmiddel.

#### 3. november 1982

Avd. 44 gjer vedtak om å ikkje nytta krafta no.

#### 11. desember 1982

Premiere på Leve Tyssedal-revyen.

#### 1. januar 1983

Tidlegare medlemmer i avd. 44 som no er på vegarbeid vert overført til Norsk Arbeidsmandsforbund.

#### 28. april 1983

Det vert kjent at Regjeringa vil «utsetta» evt. vedtak om ilmenittverk til hausten.

#### 1. mai 1983

Stor, vellukka demonstrasjon i Tyssedal.

#### 6. mai 1983

2 timer generalstreik i Odda/Tysse-dal. Streikemøte m/apellar på Rådhusplassen i Odda.

#### 9. mai 1983

Leve Tyssedal vedtek m.a. ny Oslo-demonstrasjon når saka skal opp i Stortinget.

#### 10. mai 1983

Odda Samorg vedtek m.a. full støtte til Oslo-turen og krav til LO om å gå i spissen for 1 times generalstreik for Tyssedal.

#### 25. mai 1983

Kr.f. vedtek at Tyssedal-saka må løysast i vår! Fellesstyret i Odda stør Oslo-demonstrasjonen m.m.

#### 26. mai 1983

Fellesmøte AMU/BU v/DNN vedtek at avd. 44 må «Avverge unødige demonstrasjoner» i Oslo.

#### 3.—5. juni 1983

Konferanse i Sulitjelma for einsidige industristader.

#### 8. juni 1983

Fleire hundre demonstrantar reiser frå Tyssedal til Oslo.

#### 9. juni 1983

Stortinget sin Tyssedal-debatt våren —83.



# TYSSEDAL

## – fram til 1973

«Elven Tyssø har sine kilder på den vestlige del av Hardangervidda og faller ut i Sør fjorden, ca. 6 km. nord for Odda. Navnet har elven fått av den eiendommelige form på vannfallet Tyssøstrengene og kommer av oldnorsk 'tvissa' i genitiv 'tyssu', det er den tvedelte...»

Vassdraget tilhørte opprinnelig gårdene Tyssedal, Tyssedalstveit og fjellgårdene i Skjeggedal.»

A/S Tyssøfaldene,  
50 års jubileumsskrift

### Krafta

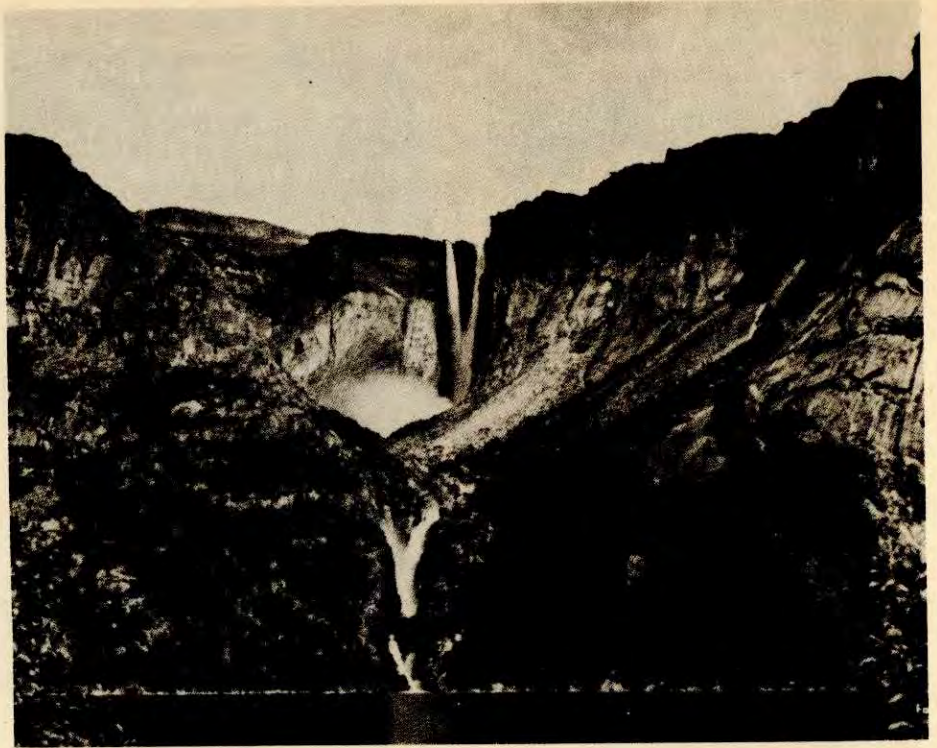
Det første anlegget starta i Tyssedal i 1906 og den nye, moderne kraftstasjonen stod ferdig i 1908, samstundes med Odda Smelteverk. Men kraftutbygginga stoppa ikkje opp med det. Under første verdskrigen auka trongen for aluminium, og i 1906 starta anleggsarbeidet for aluminiumverket til Det Norske Nitridaktieselskap i Tyssedal.

Grunnen til at ein starta aluminiumproduksjon nett i Tyssedal, var kort og greitt at ein hadde ikkje teknologi for å føra den elektriske energien over lengre avstandar. Når det så var underskot på aluminium i 1916, sa det seg nærmast sjølv: For å sikra seg mest mulig fortjeneste (maksimalprofitt) av Tyssedal-krafta, eksporterer vi ho i form av aluminium.

Slik tenkte Sam Eyde, Wallenberg, Pechiney, Alcoa, Baco og Alcan og sikra seg maskimalprofitt av krafta til langt ut i 60-åra.

### Aluminium — lokalsamfunn

Men aluminiumproduksjon var noko langt meir enn kraftutbygging. Her trongs ein stabil, stor arbeidsstokk.



Rallartida var slutt — industriarbeidaren tok over. Tyssedal voks fram som ein liten småby. I 1918 sette ein opp familiebusader i regulerte gater. Etter kvart vaks det fram eit fullverdig lokalsamfunn med dei nødvendige funksjonane: Skule, idrettsanlegg, forretningssenter, dampskipskai, kyrkja og samfunnshus. Innsamling til samfunnshus hadde halde på i 50 år i regi av fagforeningane før bygget kunne takast i bruk først på 1970-talet. Her fins bibliotek, bank, postkontor og kafe.

Sommaren 1983 bur det knappe 1000 menneske i Tyssedal. Av desse har nesten 400 hatt arbeidet sitt ved DNN Aluminium — Nitriden som verket vert kalla på folkemunne.

Tyssedal har frå 1916 vore ein såkalla einsidig industristad. Skjer det noko med arbeidsplassane ved DNN så skjer det noko med Tyssedal. Arbeidsplassane ved aluminiumverket har vore sjølve eksistensgrunnlaget for heile staden. Innbyggjarane har i alle år vore busett i bedrifta sine husvære, ferdast på bedrifta sine vegar, bygd hus og hytter på bedrifta sine tomter — med lån i frå bedrifta.

Største arbeidsplassen utanom DNN Aluminium har vore A/S Tyssøfaldene — kraftprodusenten med sine ca. 70—80 tilsette. Elles er ein del tilsett på bakeriet, i butikkar og andre service-funksjonar. Det fins også ein del folk som dagpendlar mellom Odda og Tyssedal.

### Fagorganisering

I same grad som Nitriden og Tyssøfaldene har stått for eksistensgrunnlaget for Tyssedal, representert den økonomiske basis, har fagforeningane på den andre sida vore det politiske og sosiale senteret på staden. Elektrokjemisk Arbeiderforening, avd. 44 av Norsk Kjemisk Industriarbeider Forbund, er fagforeninga ved DNN. Fagforeninga er stifta i 1915 og hadde over 300 medlemmer 1.1.1982.

Tyssø Elektrikerforening, avd. 43 av Norsk Elektriker og Kraftstasjon Forbund, er fagforeninga ved A/S Tyssøfaldene. Denne foreninga er stifta i 1922 og har pr. i dag ca. 50 medlemmer.

Begge foreningane har gjennom alle år hatt eit nært fagleg samarbeid med fagrørsla elles i Odda kommune. Begge er medlemmer av Odda og Omland faglige Samorganisasjon, og avd. 44 har dessutan samarbeid med dei andre to kjemiske avdelingane ved Zinken og Smelteverket gjennom «Fellesstyret».

Det er ei kjent sak at fagrørsla har stått sterkt både i Tyssedal og Odda. Likeeins er det eit faktum heilt sidan partisplittinga i 1923 at mange kommunistar er blitt valde til faglege tilitsmenn i Tyssedal og Odda. Vi likar gjerne å hevda at Indre Hardanger har ein raud historisk tradisjon som også kjem til uttrykk i det faglege og politiske livet i dag.



### «Lille Moskva»

*«Den revolusjonære fløyen i Arbeidarpartiet hadde sterkaste tilslutnad i dei unge industrisamfunn, og til dei hørde Odda. Odda Arbeidarparti måtte no (1923) velja mellom DNA og NKP. Med stor majoritet slutta dei seg til Kommunistpartiet... Det viste seg ved stortingsvalet i 1924 at kommunistane i Odda hadde til å byrja med eit sterkt overtak. Dei fekk 779 røyster, Tranmælittane 161 og Sosialdemokratane 80 røyster.»*  
(Olav Kolltveit: Det nye Odda.)

Splittinga i arbeidarrørsla synte seg kanskje skarpast i avd. 44. Foreninga blei ekskludert av Norsk Kjemisk først på -30 tallet, og NKIF oppretta ei ny, konkurrerande forening i Tyssedal. Denne skarpe og opprivande kampen nådde klimaks 1. mai 1931 med «Slaget i Skrevet». Dei to fagforeningane i kvart sitt demonstrasjonstog tørna saman i «Skrevet», eit gatekryss i Odda, der det oppstod slosskamp om retten til fagforeningsfana. Striden enda faktisk med fengselsstraffer for kommunistane som var i leiinga for «fleirtalsforeninga».

Innsatsen og offera til Kommunistpartiet under krigen vart ikkje gløymt etter frigjerings. Ved stortingsvalet i oktober 1945 var NKP det største partiet i Odda. Ved kommunevalet i desember fekk det auka oppslutnad og Johan Slåttelid og Bjarne Knudsen, begge frå NKP, vart ordførar og varaordførar.

Det er grunn til å tru at Kommunistpartiet stod enda sterkare i Tyssedal enn i Odda elles. Det er ikkje for ingenting at Tyssedal i lange tider gjekk under namnet «Lille Moskva».

Tilhøvet mellom Tyssedal og «storebror» Odda, er som tilhøvet mellom søsken flest. Stort sett eit nært og godt forhold — i yngre dagar kanskje meir prega av sjølvstende (les: patriotisme) frå Tyssedal si side enn i seinare år. Dette har truleg samanheng med at fleire service-funksjo-

nar ikkje har overlevd i Tyssedal men er flytta til Odda. Slike ting som frisør, spesialbutikkar, kino fins ikkje i Tyssedal i dag. Dette var ei utvikling som skaut fart i 1950- og 60-åra, medan det no synes å ha stoppa. Det at vi har fått 9-årig obligatorisk skulegang, og at i vårt tilfelle, den er

plassert i Odda, er og med og viskar ut skilje mellom Odda og Tyssedal.

Likevel: Det er to ulike lokalsamfunn vi har med å gjera, men gjen- sidig avhengige av kvarandre, der Odda er senteret i Odda kommune, men Tyssedal er Tyssedal.





*Espen Haavardsholm:*

## EN TALE SOM IKKE BLIR HOLDT FOR JUBILANTENE VED DNN

«Et sted omtrent halvveis mellom gaardene Tyssedal og Skjæggedal har elven brudt sig igjennom det faste fjeld, saa den paa en længre strækning løber gjennom en naturlig tunnel. Dette sted kaldes svælget; her findes flere jættegryder. Fossene skal ny være indkjøbt af ingeniør Størmer, der agter at foretage store opdæmninger paa fjældet og udnytte vandkraften i industrielle øiemed.»

Johan Vibe: *Typografisk-historisk-statistisk beskrivelse over Søndre Bergenshus Amt.*  
Kristiania 1896, s. 225.

1.

23.1. Tyssedal: Kollenborg, DNN,  
taler på en tilstelning for 25- og 30-års jubilarer.  
Fabrikken her er gammel.  
På en tegning fra 1906 framstår Tyssefallene  
i et eventyrlig vakkert skjær.  
De er temmet av det nye Norges industri.  
Det fullt opplyste kraftverket stråler,  
Soria-lignende, ut over den nattsvarte Sørfjorden.  
Kapasiteten er nitti tusen kilowatt.

2.

Det er arbeiderne som jubilerer  
ved DNN. Tilstelningen i Tyssedal  
er til ære for dem.  
DNN er et selskap for aluminium  
— folk kaller det bare Nitriden.  
Jeg var ikke der,  
men har lest om det:  
En januarsøndag holder man middag  
for arbeidere fra Tyssedals bedrift.  
De har stått på jobb siden krigen  
— man gir dem vel kanskje medalje.  
Kan hende har de fått litt ekstra fri,  
slik at andre tar skiftet for dem.  
For ovnene går varme og noen må passe dem.  
Hele døgnet må noen passe dem.

3.

DNN griper ordet.  
Jubilantene har spist. Nå er de  
fornøyde. Kollenborg holder en tale  
til ære for dem som er samlet her.  
— Hvem er Kollenborg?  
spør du kanskje.

— Er han tyssedøl?

Det vet jeg ingenting om.

Jeg har bare lest i avisen at Kollenborg talte  
ved middagen.

De andre talene som her ble holdt  
skrev avisene ingenting om.

— Hvem er Kollenborg?

spør du kanskje.

— Er han jubilar?

Det vet jeg ingenting om.

Jeg vet at han talte.

Jeg vet hva han sa.

De andre talene som her ble holdt  
skrev avisene ingenting om.

4.

Januar 72. Søndag.

På fjernsynet lørdag i Brussel  
skrev Bratteli sin protokoll.

Nå begynner kampen om folket  
og kreftene de er sånn:

20% nordmenn er for EEC.

50% nordmenn er mot.

30% nordmenn vil vente og se.

Det er dem det skal kjempes om.

Kollenborg taler i Tyssedal:

Gjennom munnen hans taler andre.

Han uttaler nøye en dødsdom

over DNN's arbeid på stedet her.

Han sier: *Her går det for langsomt.*

*Europas marked er vikende.*

*Tollgrenser har de satt opp der*

*for å ødelegge vår eksport.*

*Nesten all vår eksport*

*går, som dere vet,*

*til land i Europa.*

*Om et halvt år skal dere stemme*

*over Norges inntreden i EEC.*

*Derfor vil jeg dere skal vite nå:*

*Fabrikken her er gammel.*

*I et Norge utenfor EEC*

*har DNN ingenting mer*

*i Tyssedalen å gjøre.*



5.

Slik taler direktør Kollenborg:  
Så går jubilentene hjem.

Og Kollenborg er som en industri-pionér  
— ved Hydro og Elkem og Borregaard  
videreforedler de talen hans: *I et Norge utenfor EEC  
har vi ingenting mer å gjøre.*

Men arbeiderne der i Tyssedal  
går hjem for å tenke seg om.

De nøler noen dager,  
de holder et møte,  
diskuterer en tid  
og går til beslutning:  
400 kroner bevilger de der  
til kampen mot EEC.

6.

400 kroner bevilger Tyssedals fagforening  
til kampen mot EEC.

Det er ikke mye.

*Det skal ikke stå på penger,*  
sier sjefen for Den norske Creditbank  
når han blir spurt hva han vil bevilge.

Vi tror ham, når han sier  
at hans bevilgning, gjennom banken,  
ikke skal stå på penger.

Og 400 kroner er latterlig lite  
mot Creditbankens penger  
— det vet vi også.

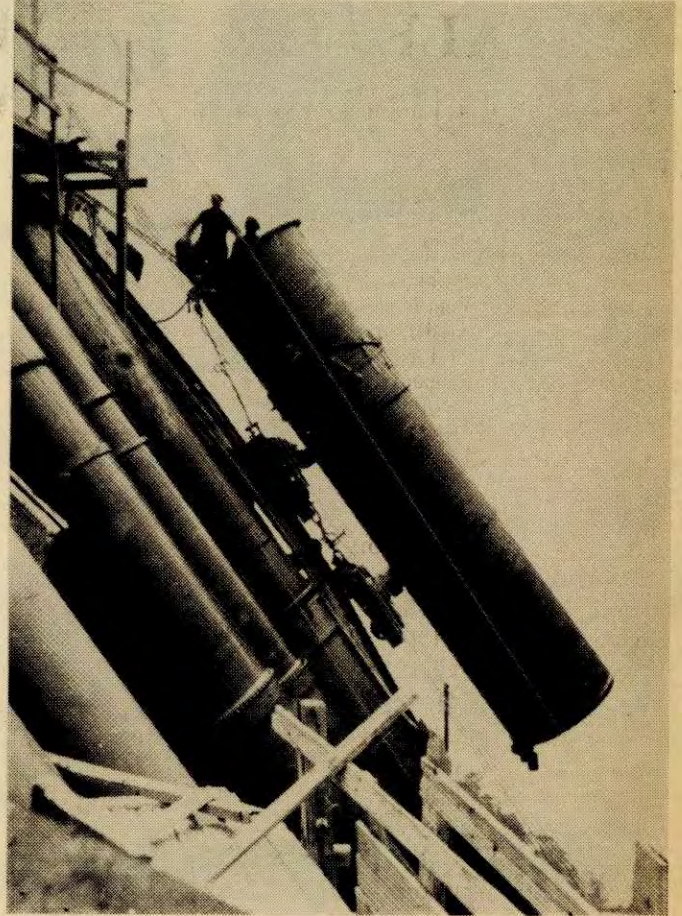
Men 400 kroner bevilger de i Tyssedal  
til kampen mot EEC,  
etter at de der har fått beskjed om  
at fabrikken som er deres brød og hjem  
blir nedlagt av DNN's eiere  
dersom kampen mot EEC lykkes.

7.

Slik tolker aluminiumsarbeiderne i Tyssedal  
DNN-sjefens tale.

Så mye stoler de i Tyssedal  
på eierne av DNN. Her har de stått på jobb  
siden krigen. Dag og natt  
har de holdt ovnene varme.  
Hele sitt voksne arbeidsliv  
har de solgt til bedriften her.  
Og de vet: Foruten DNN  
fins ingen ledig arbeidsplass  
i bygda deres.

Likevel samles de i sin fagforening  
og gjør et klart flertallsvedtak  
til støtte for kampen mot EEC.



Slik tolker aluminiumsarbeiderne i Tyssedal  
DNN-sjefens tale.

Og jeg — som i fjorten dager  
har slått opp i gamle bøker,  
for å skrive en motstandstale  
til jubilentene ved Tyssedals bedrift —  
jeg blir kjent med arbeiderens vedtak  
i en ti øres motstandsavis.

8.

Motstandstalen trenger altså ikke holdes.  
Materialet fra Tyssedalens historie i 60 år  
trenger altså ikke legges fram.  
Å dokumentere DNN's oppførsel  
i dette bygdesamfunnet  
er altså overflødig.

Arbeiderne har selv gått til beslutning.  
Slik er talen blitt.



## EEC-TILHENGERNE TRAPPER OPP

# Trusler om nedleggelse ved DNN Tyssedal

»Hvis Norge blir stående utenfor EEC, må DNN Aluminium nedlegge bedriften i Tyssedal, sa direktør Kollenborg i januar. Dette er det hittil groveste eksemplet på EEC-tilhengers skremslar. Det er blitt et bravurnummer både hos Aftenposten og nå også hos Europabevegelsen. DNN står sentralt i myten tilhengerne vil skape om at arbeidsplassene i aluminiumsindustrien er i fare utenfor EEC.

### HVA ER SANNHETEN?

DNN Tyssedal eies av British Aluminium og ALCAN. Disse utenlandske eierne har i en årekkje unnlatt å sørge for nyinvesteringer, slik at bedriften i dag er håpløst gammeldags. Den bruker nå 2 1/2 gang mer tid på å produsere ett tonn aluminium enn sine konkurrenter! (Hardanger Folkeblad 18/1-72). Samtidig er den internasjonale aluminiumsindustrien kastet ut i en alvorlig overproduksjonskrise. Bl.a. vil EECs aluminiumsindustri ved utgangen av 1972 ha et overskudd på 380 000 tonn. Prisene synker (Aftenposten 29/2-72). I denne situasjonen kommer bedrifter som DNN først i klemme. Dette ser vi av at overskuddet i 1969 var på 15,3 mill. kr., i 1970 på 8,4 mill. kr. og i 1971 bare på 4 mill. kr. Men selv DNN vil klare seg utenfor EEC, om enn med noen problemer. Dette skriver Dag Tresselt, politisk sekretær for handelsminister Kleppe, i sin

utredning om aluminiumsindustrien utenfor EEC. (Hardanger Folkeblad, 18/1-72).

Vi ser altså her at EEC-tilhengerne benytter seg av et svært spesielt tilfelle for å utbasunere aluminiumsindustriens »undergang» utenfor EEC. Dette er skremslarpropaganda på falskt grunnlag.

### HVA KAN VI LÆRE?

Disse falske tonene viser at vi må ta neste framstøt om at arbeidsplassene er i fare utenfor EEC for det det er: løgnpropaganda for å få arbeiderne til å gå inn for EEC.

Vi vet at det kommer flere slike framstøt. I en artikkel i bladet »Norges Industri» 4/72 legger Industriforbundet opp taktikken: »De politiske pro-et-contra-diskusjonene bør droppes. Slik ønsker industriherrene å avgrense diskusjonen. Til hva? Industriforbundet anbefaler at linja til DNN-direktør Kollenborg følges. Konsernledelsen skal selv ta hånd om EEC-motene.

Her skal arbeiderne forklares »hvilkjen betydning et medlemskap vil få for deres egne arbeidsplasser». Direktørene har monopol på informasjon. Både ELKEM og DNN har benyttet trusler om oppsigelser og nedleggelse. Slik håper de å skremme arbeiderne inn i EEC.

### HVA KAN ARBEIDERNE GJØRE?

Hvordan skal arbeiderne møte slike framstøt? Vi kan lære av arbeiderne ved DNN i Tyssedal. Arbeiderkomiteen mot EEC og dyrtid i Tyssedal/Odda inviterte til et åpent møte der EEC ble tatt opp i hele sin bredde som politisk spørsmål. Søkelyset ble satt på angrepet på norsk sjølråderett og den truselen Roma-traktatens 4 friheter er for norske arbeidsplasser. Arbeiderkomiteen gjorde konkrete undersøkelser om bedriftens økonomiske situasjon og kunne vise tilbake direktørens påstander. Hva ble så resultatet? Det ble lite oppmuntrende for EEC-tilhengerne. Arbeiderne sto rake i ryggen mot direktørens skremslar. En resolusjon mot EEC ble vedtatt med 190 mot 3 stemmer (22 avholdt seg fra å stemme). Dette lover det beste for arbeidernes holdning i EEC-kampen.

Arbeiderkomiteen mot EEC og dyrtid i Tyssedal/Odda inviterte til et åpent møte der EEC ble tatt opp i hele sin bredde som politisk spørsmål. Søkelyset ble satt på angrepet på norsk sjølråderett og den truselen Roma-traktatens 4 friheter er for norske arbeidsplasser. Arbeiderkomiteen gjorde konkrete undersøkelser om bedriftens økonomiske situasjon og kunne vise tilbake direktørens påstander. Hva ble så resultatet? Det ble lite oppmuntrende for EEC-tilhengerne. Arbeiderne sto rake i ryggen mot direktørens skremslar. En resolusjon mot EEC ble vedtatt med 190 mot 3 stemmer (22 avholdt seg fra å stemme). Dette lover det beste for arbeidernes holdning i EEC-kampen.

Avd. 44 tok sjølvsagt trusselen om nedlegging alvorleg. Alle var klar over at Nitriden ikkje kunne overleva mange år, utan ei omfattande modernisering — ja, helst bygging av nytt verk. På årsmøtet i fagforeninga 11. febr. 1973 sette ein ned eit utval som skulle laga ei analyse av situasjonen ved DNN og framtida for arbeidsplassane i Tyssedal.

### 19. mars 1973 — kampen startar

Alt 19. mars same år sende selskapet, no eigd av ALCAN og BACO, ut ei pressemelding som gjorde kjent at smelteverket i Eydehavn skulle ned-

legkast og at «selskapets bedrift i Tyssedal *antas* å fortsette driften med den kapasitetsutnyttelse de nåværende installasjoner tillater».

På bedriftsutvalsmøte samme dag, uttalte selskapet sin direktør: «*Det er mulig vi kan holde det gående i flere år. Er man heldig kan driften kanskje fortsette helt til det eventuelt blir mulig å få tilslutning (fra moderselskapene) til bygging av ny fabrikk.*

*Er man derimot uheldig, kan det hende at spørsmålet om nedleggelse, også av Tyssedal, vil melde seg allerede neste år.»*

Dette slo sjølvsagt ned som ei «bombe» i eit lokalsamfunn som

heilt sidan 1930-åra hadde sett på seg sjølv som eit livskraftig og nødvendig lokalsamfunn — ei bedrift og eit tilhøyrande samfunn det måtte vera politisk uråd å leggja ned.

På møte i Odda Formannskap 21. mars set ein ned det såkalla DNN-utvalet (seinare Tyssedalsutvalget) som i første omgang skulle ta kontakt med Industridepartementet.



## Arbeidsplassene i Tyssedal i brennpunktet

Utgitt av Elektrokjemisk Arbeiderforening  
Avd. 44 av N.K.L.F. Tyssedal

### Avd. 44 lagar kvitbok

Alt i juni måned hadde avd. 44 ferdig ei «kvitbok»: «Arbeidsplassene i Tyssedal i brennpunktet», med fagforeninga si analyse av situasjonen, og vi vel å sakså ein del herfrå.

«Bedriftens eiere sa vidare fra seg ansvaret for bedriftens interne økonomiske forhold. Med andre ord: Etter å ha trukket ut fortjeneste i mange år, har de nå overlatt til de ansatte å forsøke å holde driften gående med investeringer i lønns- og driftsforhold innenfor rammen av den lønnsomhet driften har.

Når man vet at produksjonsmateriellet er nedkjørt, at bedriften er lite rasjonell og at eierne ut fra det system som rår innen en bransje som har full kontroll over den vertikale produksjonslinje og dermed har mulighet til å legge fortjenesten der det er

mest hensiktsmessig, da blir fortjenestenivået ved vår bedrift lik null.

Foreningen sa klart fra til bedriftsledelsen at en slik avgjørelse ikke var akseptabel, da bedriften både av lønnsomhets- og miljømessige grun-

ner ikke kunne fortsette i fremtiden. Det måtte foretas en fullstendig refinansiering. Vi fikk til svar at styret i DNN ikke kunne gjøre mer i denne saken, avgjørelsen lå hos de utenlandske eierne.»

**Hardanger Folkeblad**  
LOSSALG 75 ØRE  
TIRSDAG 30. MARS 1973  
NR. 34. 30. (55.) årgang

**Ekstra**  
**ukens tilbud**  
**Tyttebryt**  
**3 kg.**  
**spenn 35,- 21.95**  
**DOMUS**

# EYDEHAVN NEDLEGGES TYSSEDAL FORTSETTER

DNN Aluminium i Tyssedal vil fortsette driften. DNN Aluminium i Eydehavn vil bli lagt ned!

De ansatte ved begge bedrifter ble orientert om de vedtak som selskapet til nå har gjort i går ettermiddag. I Eydehavn ble orienteringen gitt av adm. direktør E. Kallenberg. I Tyssedal av direktør K. Røed.

Klokka 1500 i går ble ordførar Elvar Tveit orientert om situasjonen, og en pressemelding ble samtidig sendt ut fra bedriften. Ordførar Elvar Tveit orienterte formannskapet i et ekstraordinært møte i går kveld.

Samtidig hadde avd. 44 innkalt til medlemsmøte der også konene til de ansatte var stiltende for å bli orientert om det som var skjedd tidligere på dagen.



**HD NYTT**  
LÅRDAG 9. september 1972

**Industriministeren: Vi ønsker ingen nedleggelse av DNN:**  
**Nytt al-verk i Tyssedal**  
**realiseres best innen EF**

Det er klart at regjeringen og Industridepartementet vil ha vanskeligheter for å akseptere en nedleggelse av DNN Aluminium i Tyssedal, og vi ønsker alle muligheter undersøkt for en videreføring av bedriften i Sørjord.

Det er industriminister Finn Lied som kommenterer situasjonen for DNN Aluminium i Odda og eventuelt slyggingsplaner for bedriften, til Bergens Arbeiderblad.

Alle med kjennskap til aluminiumsindustrien, også de ansatte ved bedriften, vil være klar over at den eksisterende bedrifts konkurransevorte er dårlig, og at den eksisterende bedrift, uansett tilknytningsform til EF, før eller senere vil komme i vanskeligheter.

Når det gjelder et eventuelt nyanlegg er det klart at sjansen for å få dette til er liten i EF enn ved å stå i landet.

Norske myndigheter generelt og Industridepartementet spesielt vil alltid se det som en hovedoppgave å sikre trygge arbeidsplasser overalt i landet.

Det er dette som danner bakgrunnen for vår anbefaling av medlemskapssammenheng som den beste mulighet for å fremme dette, sier industriminister Finn Lied.





#### «VÅR KONKLUSJON PÅ SAKEN ER:

Vi er klar over at de topografiske forhold tilsier at det aldri skulle vært bygget et smelteverk i Tyssedal. Men bedriften ligger nå en gang her, og slik man i dag bygger aluminiumsverk, med effektive renseanlegg og innebyggede ovner, skulle vi kunne leve videre med en slik bedrift. Den kamp Nitridarbeiderne fører er av stor betydning for industrisamfunnet Odda. Samfunnet Odda er bygget opp omkring de tre store kjemiske bedriftene Odda Smelteverk A/S, Det Norske Zinkkompani A/S og DNN Aluminium A/S. Det vil være en katastrofe for dette samfunnet om en av disse bedrifter skulle nedlegges og arbeidsplassene gå tapt.

Ut fra den situasjon som vi er blitt

påtvunget reiser vi et ufravikelig krav som kan deles i 3 punkter:

##### **Pkt. 1.**

For sikring av de fremtidige arbeidsplasser på stedet øremerkes DNN's energikvote fra A/S Tyssefaldene for bruk i Tyssedal.

##### **Pkt. 2.**

Eierselskapene tar avgjørelse om de er villig til å foreta en refinansiering i en moderne bedrift som kan sikre våre arbeidsplassers fremtid i Tyssedal.

##### **Pkt. 3.**

Dersom vårt krav i pkt. 2 ikke blir innfridd, krever vi av regjeringen at det blir fremmet forslag om endring i konsesjonsloven som setter staten i stand til å frata konsesjonærene deres rettigheter.

Blir ikke våre krav innfridd er vi tvunget opp i en alvorlig konfrontasjon og åpen kamp mot de som har ansvaret for den situasjonen som er oppstått. Og vi legger ikke ansvaret alene på moderselskapene og deres misbruk av rettigheter, men også på de politiske myndigheter som har muliggjort dette.

Vi har intet valg. Vi er innstilt på kamp. Vi forventer at de fagforeninger vi samarbeider med, vil støtte oss med sin markering og at andre foreninger gir oss en offentlig solidaritetserklæring.

Tidspunktet vil bli gjort kjent i god tid.

Tyssedal, 22. juni 1973.»



Dette var i 1973. Kanskje høgdepunktet i etterkrigstida sine 30 år lange oppgangstider og teorier om den krisefrie kapitalismen blomstra langt inn i det ein tradisjonelt har kalla «venstresida» i norsk politikk.

I dag skildrar den sosialdemokratiske økonomen Hermod Skånland etterkrigstida på denne måten: «Systemet virket over all forventning i femogtjue år. I 1970 var produksjonen i de industrialiserte land 2,4 gonger så høyt som i 1950. Regnet pr. hode hadde produksjonen steget med 115 pst.» Og Skånland held fram: «Hva var det så som var så spesielt ved denne lange vekstperioden etter krigen? Ved avslutningen av den annen verdenskrig lå USA mange hestelengder foran den øvrige delen av verden med hensyn til teknologisk nivå... ved gjenoppbyggingen og den senere ekspansjon kunne andre land dra nytte av den amerikanske teknologi og dermed oppnå en kraftig produktivitetshøyning. Utover i 1960- og 70-årene ble USAs teknologiske forsprang gradvis redusert og gikk på enkelte områder, f.eks. i bilproduksjonen, over til et etterslep...

En annen viktig faktor var at sammenliknet med prisnivået for industrivarer sank prisene på de fleste råvarer, og hvor de ikke sank, ble råvarene ofte erstattet med syntetiske industriprodukter. Industrilandene fikk en realinntektsøkning som følge av bedret bytteforhold overfor råvareproduserende land.»

På godt norsk betyr dette at ved å tyna landa i den 3. verda, makta kapitalistane i dei industrialiserte landa å rana til seg ein aukande andel av den meirverdi-massen som blei skapt i verda. I heile etterkrigstida fram til slutten av 1960-åra var råvareprisane stadig fallande. Ikkje minst gjaldt det noko så viktig som oljeprisen, som faktisk var direkte fallande fram til det store omslaget i 1973.

«Vi kan være imponert over hvordan dette systemet har fungert, det er liten grunn til å være imponert over hvordan det fungerer i dag. Og hittil har det fungert bare stadig dårligere. Vi kan håpe at alt igjen vil begynne å gå bedre, så og si av seg selv, men det er egentlig vanskelig å se hva man skal kunne basere et slikt håp på.» (H. Skånland: Inntektspolitikens dilemma, Cappelen 1981.)

## 1973 – etterkrigstidas økonomiske høgdepunkt

Dette var altså den nøkterne, sosialdemokratiske vurderinga av kapitalismen pr. 1981. Lite har dette til felles med sosialdemokraten sine rosenkyer ti år tidlegare der fantasien — eller vurderingar basert på utviklinga i 25 høgst spesielle etterkrigsår

— let kapitalismen bokstaveleg tala få veksa seg inn i «sosialismen».

Det er altså i 1973, høgdepunktet i ein menneskealder lang oppgangsperiode, vi finn starten på det som seinare er kalla Tyssedal-saka. Tretti år der alt har gått framover, er den

OSLO, DEN 13. juli 1973.  
YOUNGLOST 11 VE

Avd. 44,  
Elektrokjemisk Arbeiderforening,  
herr John Andersson,  
Samfunnshuset,  
Boks 138,  
5770 TYSSEDAL

### Situasjonen ved DNN Aluminium A/S, Tyssedal.

Vi viser til foreningens skriv av 2.ds. med vedlegg om situasjonen ved DNN Aluminium A/S, Tyssedal, hvor foreningen ber om forbundets/Landsorganisasjonens kommentarer til dette vedlegg.

Som det fremgår av forbundets skriv har vi sendt skrevet til LO og bedt om deres uttalelse.

Vi har idag mottatt svar fra LO's juridiske kontor, og vi vedlegger kopi av dette skriv til foreningen.

Saken har idag vært behandlet i den hjemmneværende administrasjon som gir uttrykk for at vi er enig i LO's syn, at de tre siste avsnitt i den uttalelse foreningen har utarbeidet (og som de har latt trykke opp i 1500 eksemplarer) må utgå, da det vil skape komplikasjoner såvel for LO som for forbundet.

Det er bare å beklage at foreningen allerede har trykt opp denne uttalelse med de tre avsnitt som LO fraråder. Ellers vil vi uttale at vi deler foreningens syn forøvrig i uttalelsen.

Når det gjelder spørsmålet om økonomisk støtte til trykkingen av uttalelsen, vil dette bli behandlet på førstkomende forbundsstyremøte, ca. midten av august.

Vedlegg.

Med hilsen  
Norsk Kjemisk Industriarbeiderforbund  
*Leif Andresen*  
Leif Andresen



dette resultat, er det på grunnlag av en helhetsvurdering av aksjonens karakter. Selv om aksjonen riktig nok har generelle samfunnspolitiske sider, er det ingen tvil om at den framstår som et press mot arbeidsgiveren på et spørsmål som gjelder investeringer, et område som klart ligger innenfor bedriftens normale styringsrett.»

Det er verd å merke seg at før dette (9.6.73) sendte LO ut ei pressemelding som gav avd. 44 full støtte i kampen for sikring av arbeidsplassene.

Vi let studentane **Terje Rønho** **vd** **og Reidar Tømmernes**, forfatterane av oppgåva «Tilfellet Tyssedal» få sleppa til med ein kommentar:

«Til slutt sier Halvorsen: 'Dersom heftet blir trykt i den form det foreligger, er det store muligheter for at Norsk Arbeidsgiverforening vil reagere overfor Landsorganisasjonen og forbundet (NKIF).'

Dette svaret viser den virkelige

støtten LO ville gi arbeiderne i Tyssedal. Lokalsamfunnet og arbeidsplassene er i fare for å forsvinne på grunn av en økonomisk, kortsiktig politikk fra Alcan og Baco's side. Tyssedal-arbeiderne ønsker å bruke sitt eneste og mest effektive kampmiddel som er streik. De ønsker også at andre arbeidere skal styrke deres kamp for å få kravene igjennom igjennom sympatistreiker og aksjoner. LO tar avstand fra dette fordi det er tariffstridig. Istedet godtar LO v/Halvorsen den økonomiske politikken Alcan og Baco har ført i Tyssedal. LO tar ikke avstand fra den inesteringspolitikken Alcan og Baco har drevet i Tyssedal, fordi sitat: 'Investeringer er et område som klart ligger innenfor bedriftsnormal styringsrett.'

LO stiller seg klart i mot Tyssedal-arbeidernes kamp for trygge arbeidsplasser og opprettholdelse av lokalsamfunnet.»

ryggdekning tyssedølene har til å møte trusselen om nedlegging av hjørnesteinsbedrifta i lokalsamfunnet, dermed nedlegging av samfunnet.

Lite veit ein om at kampen som må til vil vara langt inn i andre ti-året. Lite veit ein om dei mange illusjonane som skal brista. Lite veit ein at tidene vil endra seg så drastisk, at 80-åra rir kapitalismen som ei mare med dei omfattande krisene sine.

Likevel — det skal snart syna seg at tyssedølene representerer noko meir enn eit trua lokalsamfunn. Eit kvart barn av industriarbeidaren har opplevd klassesolidariteten. Tyssedølen er stolt over å tilhøyra arbeiderklassen og den raude fana og sosialismen er noko anna enn eit minne om ein gammal draum, men har faktisk også gjennom 1960- og 70-åra, for ein god del menneske i Tyssedal gitt perspektiv ut over den daglege striden i fagforening- og partiarbeid.

### «I sekretariatet...»

Våren 1973 er Tyssedal blitt rysta i grunnvollane sine, folk har vore sjokkert, men innstiller seg no på kamp etter grundige drøftingar og vedtak på medlemsmøter i fagforeninga.

Avd. 44 tek naturleg nok kontakt med forbundet sitt, Norsk Kjemisk, og ber om politisk og økonomisk støtte til å gi ut den såkalla «kvit-bok» juni 1973.

Vi vel å visa faksimile av svaret som er undertekna Leif Andresen, formann i forbundet. («De siste tre avsnitt» er fagforeninga sin trussel om kamp dersom krava ikkje vert innfridde.)

LO-advokat Steinar Halvorsen skriv m.a. i den vedlagte juridiske utgreiinga:

«Jeg har vurdert spørsmålet og kommet til at en aksjon som denne ville bli vurdert som tariffstridig. Dette ville medføre ansvar for såvel organisasjonene som de enkelte arbeidstakere. Når jeg kom fram til

REGJERINGEN HAR TALT:

## TYSSEDAL FÅR GARANTERT ARBEIDSPLASSENE

Kravene fra DNNs eiere avvist —

Jan Gravdal

I et møte i går vedtok regjeringen å forplikte seg til å opprettholde industrisystemet i Tyssedal. Og slik forpliktelse er bare betrakte som en garanti, sier statssekretær i Industridepartementet, Reidar Engell Olsen til Haugesunds Avis. Samtidig er det klart at de nå så omtalte krav fra eierne av DNN Aluminium

blir avvist. I hvertfall i den form de har i dag. — Hvis ikke eierne renonserer på kravene vil vi måtte se oss om etter andre muligheter, sier Engell Olsen. — Garantien fra Regjeringen sier ingenting om antall arbeidsplasser, men jeg er enig i at det nærmest ligger i sakens natur at det må dreie seg om en størrelsesorden som kan sammenliknes med det som allerede er.

Engell Olsen innrømmer

at det er industriselskaper som har vist interesse for kraften i Tyssedal, men han ønsker ikke å gå inn på detaljer i det arbeidet Industridepartementet er i gang med.

Haugesunds Avis har imidlertid antydnet for at både Norsk Hydro og Ardal og Sunndal Verk kan være svært så aktuelle i denne sammenheng. Etter pålitelige

opplysninger vi har fått skal begge disse selskapene ha meldt seg som interessenter.

For Odda og Tyssedal betyr vedtaket i Regjeringen at uvissheten stort sett er over. Man kan nå føle seg trygg på at sysselsettingen i Tyssedal vil bli opprettholdt, bare det er et meget stort fremskritt i denne ulykkelige saken som har vart så lenge.

14. mars 1974

Industriminister Ingvald Ulveseth rykkjer ut på vegne av Regjeringa og

garanterer arbeidsplassane i Tyssedal.

Industriminister Ulveseth:

## Tyssedal skal selv få velge

Ingen konkrete alternativer ennå

Jan Gravdal

for øyeblikket ikke eksisterer noe konkret alternativ som Regjeringen kan vise fram.

må gjennom en vanskelig prosedyre enten man liker det eller ikke.

— Kan det selv om ALCAN

holde arbeidsplassene. Når det gjelder kraft så er jeg enig med det som er hevdet fra Odda om at den må nyttes på en fornuftig



Våren 1974 var tyssedølane budd på kamp, noko 1. mai-demonstrasjonen det året vitnar om. 450 personar i toget fortel om det største 1. mai-toget i Tyssedal si korte historie. Vidar Våde, AKP(m-l), var talar i Tyssedal og vi prentar siste delen av talen hans.

*«Det er ikke nok at noen få tillitsmenn på Nitriden sliter seg ut med kontakter og møter. Det eneste som vil gi resultater er at alle Tyssedøler aktivt blir med i denne kampen.*

*Skal vi vinne fram må vi stille krav. Vi må sette i gang en underskriftskampanje der vi forlanger at Alcan og Baco innen en bestemt tidsfrist starter arbeidet med å bygge ny bedrift. Hvis dette ikke blir gjort må vi forlange at myndighetene fratar disse alle rettigheter i Tyssedal og overlater disse til andre som kan og vil skaffe arbeidsplasser her. Hvis myndighetene sier de er maktesløse pga. konsesjonslovgivningen i Norge, da må vi kreve at konsesjonslovene skal forandres slik at rovdrift på samfunn lik Tyssedal ikke lenger er mulig. Hvis myndighetene vegrer seg vet vi hvem de ønsker å støtte.*

*Vi må skape en folkeopinion om denne saken. Vi må be om støtte og solidaritet fra arbeidskamerater i Odda, solidaritet fra arbeidskamerater på hele Vestlandet, om mulig solidaritet fra arbeidere i hele Norge.*

*Bare på denne måten kan vi sikre Tyssedals framtid.*

*Tyssedøler — til kamp mot nedlegging av Tyssedal!*

Men det som skjedde nå var at det fagleg-kommunale utvalget stadig vekk reiste på møter i Oslo, kom attende med nye løfter og nye signaler. Alt gjekk føre seg over hovudet til den vanlege tyssedøl og Nitrid-arbeidar.

Oppmuntra av den store oppslutnaden i 1. mai-toget og kampviljen blant folk, tok ein del tyssedøler og medlemmer av det nystifta AKP(m-l) initiativet til å danne ein «folkekomite» som skulle ha som første oppgåve å setta i gang ein underskriftskampanje retta mot regjering og Storting. Her må det raskt leggjast til at initiativtakarane på 13 personar utgjorde stor politisk breidde, men stod saman i ønsket om å gjera det som kunne gjerast for å sikra framtida for Tyssedal.



## Folkeaksjonen som aldri blei starta og kvifor...

DNN-saken går videre:

H.A. 1/6 74

### Tyssedal vil danne folkekomite

Underskriftskampanje til støtte for det faglige, kommunale utvalg

Det er satt i gang en underskriftskampanje i Tyssedal i DNN-saken. En gruppe bestående av 13 personer med direkte og indirekte tilknytning til DNN har tatt initiativet til kampanjen som skal munnne ut i et almannamøte hvor det er meningen å velge en folkekomite.

Imidlertid har dette styret som disse 13 har dannet allerede vedtatt å utsette kampanjen inntil man har fått avklart forholdet til fagforeningen ved DNN.

— Bakgrunnen for kampanjen skulle være kjent nok, sier en av de 13 — Vidar Våde. — Vi ønsker en bevisst og massiv opinion blant folk i Tyssedal som kan støtte opp om de krav og det arbeid det faglig/kommunale utvalg (DNN-utvalget) driver. Dessuten ønsker vi å få et styre som representerer hele spekteret av befolkningen i Tyssedal, ikke

bare de ansatte ved DNN. Vi er mer enn glad om noen av fagforeningens tillitsmenn ønsker å komme med i denne folkekomiteen. Jeg vil gjerne få understreket Interimsstyrets intensjoner er ikke å få valgt en komite som skal spille solo i denne saken. Intensjonene er å få en komite som kan gi verdifull støtte til DNN-utvalget. Det er derfor ingen grunn til å være redd for at dette skal skape forvirring. Det er heller ingen grunn til å oppfatte dette tiltaket som noen mistillit verken til DNN-utvalget eller til fagforeningen. Imidlertid vil vi gjerne lære av det som er sagt fra Knaben: «Den største feilen vi gjorde var at vi la hele ansvaret over på noen få, i stedet for å mobilisere hele befolkningen.» Vi ønsker et så nært samarbeid som mulig med fagforeningen, sier Våde.



Industridepartementet  
Akersgt. 42  
OSLO 1

AD DNN ALUMINIUM A/S, TYSSedal

.....  
Det er ingen grunn til å legge skjul på at det fra lokalsamfunnet, fagforening o.a. gjør seg gjeldende en sterk utålmodighet. En avklaring er derfor nødvendig, og denne bør komme snarest. En ber derfor om et omgående svar på dette brev. Når dette svar foreligger, vil en om nødvendig ta muntlig kontakt med departementet.

Odda, 9. mai 1974.

For DNN-utvalget

Einar Tveit,  
ordfører.

## «Sterk utålmodighet»

1. mai-toget i Tyssedal gav gjenlyd langt inn i Industridepartementet.

9. mai 1974 sender DNN-utvalget eit brev til departementet som dei avsluttar på denne måten:

## Ein telefonsamtale

Reaksjonen i departementet let ikkje venta på seg. 21. mai kjem det telefon frå statssekretær Reidar Engell-Olsen til utvalgsformannen, ordfører i Odda, Einar Tveit.

Når så folkekomiteen prøver å få organisert seg, inviterer til eit nært samarbeid med avd. 44, er ikkje fagforeningsformann og medlem av DNN-utvalget, John Andersson, i tvil om kva holdning han skal ha til komiteen.

TELEFON FRA STATSEKRETÆR REIDAR ENGELL-OLSEN 21.5.1974

VEDRØRENDE VÅRT BREV TIL INDUSTRIDEPARTEMENTET AV 9. MAI 1974.

Reidar Engell-Olsen antok at man ville komme fram til en avklaring i siste halvpart av juni, og at utvalget ville få innkalling til industridepartementet om lag 20.-25. juni for å bli informert.

Statssekretæren henstilte til utvalget ikke å foreta seg noe på lokalt hold før dette møtet. Et lokalt utspill nå vil vanskeliggjøre departementets arbeid, og understreket sin uttalelse under møtet i Oslo om at departementet måtte få nødvendig ro til å arbeide med denne saken, som er meget vanskelig og komplisert.

Statssekretæren ville ikke komme med et skriftlig svar på Odda kommunes brev av 9. mars d.å. før et møte i Oslo, men at vi tok dette telefoniske svar.

NOTAT v/E. Tveit

Fagforeningsformann ved DNN John Andersson sier til Hauge-sunds Avis:

— Personlig mener jeg at en underskriftskampanje kan være av det gode. På den måten kan vi få fram den opinion vi forsåvidt allerede vet eksisterer. Jeg har imidlertid hele tiden hatt et klart inntrykk av at man i Tyssedal hele tiden har hatt forståelse for det arbeid og de arbeidsmetoder DNN-utvalget har benyttet. På den bakgrunn kan jeg ikke riktig forstå nødvendigheten av et nytt utvalg. Et utvalg som etter det jeg forstår vil stille bestemte krav og tvinge fram svar på disse innen bestemte tidsfrister. DNN-utvalget har hele tiden arbeidet med DNN-saken, men det er ikke alltid det kommer fram opplysninger av en slik betydning at det har særlig hensikt å informere om det. Jeg kan imidlertid fortelle at Industridepartementet nettopp har gitt utvalget svar på et brev vi sendte i begynnelsen av mai. I dette brevet etterlyste vi blant annet svar på tidligere stilte spørsmål om konsesjonsforholdene, og om hvordan departementet har stilt seg til de krav elerne satte fram tidligere i år.

DNN-utvalget vil få et møte i Industridepartementet i tidsrommet 20.—25. juni, uten at jeg kan ha noen formening om hva som vil komme fram der.

# Tyssedal-saken foran sin løsning?

## Store industriinteresser inne i bildet Utsatt kampanje kan forkludre saken

*Arbeid. 10 juni 1974*



Jan Gravdal

En underskriftskampanje som er planlagt i Tyssedal i forbindelse med DNN-saken er utsatt, begrunnelsen er at interimstyret på 13 personer ønsker først å ta kontakt med fagforeningen. Siden er det meningen at kampanjen skal

munne ut i et folkemøte hvor det skal velges en folkekomite som representerer hele spekteret av befolkningen på stedet, sier en av initiativtakerne, Vidar Våde til Hauge-sunds Avis. Det er videre meningen å sende ut opprop til Stortinget med forskjellige krav.

Tiltaket blir møtt med

skepsis — mildest talt. Både i det faglig/kommunale DNN-utvalg og Industridepartementet ser man på aksjonen med uro.

Statssekretær Reidar Engell Olsen sier til Hauge-sunds Avis: — For det første kan en slik aksjon bare ødelegge

tok at man ville komme fram til en avklaring».

## Styremøte i avd. 44

Følgjande vedtak blei gjort på styremøte i avd. 44 tirsdag 11. juni kl.



10.30 på fagforeningskontoret:

«Styret finner ingen grunn til et møte med initiativtakerne for dannelse av en event. 'folkekomite' i Tyssedal.

DNN-saken stilles i bero (hva angår medl.m. etc.) inntil representanter fra DNN utv. har vært i departementet og fått informasjon om sakens utvikling. Redegjørelse om dette framlegges umiddelbart etter for medlemsmøte. Dette medlemsmøte bestemmer hvordan fagforeningen skal forholde seg til saken.» (Samrøystes vedteke.)

## Fra kamp til samarbeid

Og dermed var folkekomiteen nedlagt før han egentlig var starta. Medlemmene av DNN-utvalet — også representantane frå avd. 44 — inntok i praksis ei haldning som var særst positiv til eit nært samarbeid med departementet og svært negativ til samarbeid med alle gode krefter i Tyssedal. Saka er at dei tillitsvalde representantane går bort frå *kamplinja* til fordel for *samarbeidslinja*. Og står ein på samarbeidslinja så er det forkastelig å mobilisera folk til aksjonar og kamp — hovudpoenget lokalt vert då å halda makta og kontrollen over opinionen for å hindra at tyssedølene sjølve skulle ta over makta.

Vår påstand er at slikt samarbeid vil vera på premissene til borgarskapet, staten — og at arbeidsfolka *alltid* taper på det.

Nedlegginga av «folkekomiteen» representerer eit skilje i Tyssedal-saka som vi vil stoppa litt opp ved.

Den første perioden då kampfana var høgt oppe, er no slutt. Leiarane i fagforeninga (og kommunen) har gjeve klare signal om at no er det samarbeidslinja som rår.

Etter dette blei det innført ei rekkje skadelege «prinsipper» eller idar som pga. at det ikkje blei reist kamp mot dei, vart ståande som «sannheit».

- «Tyssedal-saka er bare avd. 44 si sak», jfr. intervjuet med Vidar Våde, H.A. 10.6.74

- Tilslutning til «det arbeid og de arbeidsmetoder DNN-utvalget har benyttet», fagforeningsformann John Andersson i samme avis.

Det som vi aldri vil få svar på er om det ville ha vore rett — eller ville det vore grunnlag for — å reisa den

politiske kampen der og då. Ikkje brydd seg om motstanden som kom fram i lokalavisene, men oppretta den folkekomiteen det verkeleg var trong for i Tyssedal i resten av 1970-åra.

Det kan vera interessant å sjå kva syn ein mann som John Andersson har på denne saka i ettertid. Sitatet er frå eit fleire år for tidleg sigersintervju i Haugesunds Avis, 30.9.1980 — og vi tek med eit gullkorn:

«— På et tidspunkt dukket det opp tilløp til en folkeaksjon i AKP(m-l)-regi. Så dere dette som en fare?

— Ikke som en fare, men som en kjedelig episode som knapt på noe punkt gagnet saken.»

## Hardanger Folkeblad

Utkommer i Odda  
mandag, onsdag, fredag.  
TLF. 42 222.

Organ for  
Det norske Arbeiderparti.  
Redaktør  
STEINAR GULLVAG

## Folkekomite på sidelinjen

Et utvalg personer i Tyssedal har funnet det nødvendig å reise en folkeopinion for å framtvinge en løsning på Tyssedalsaken. Initiativtakerne skal i første rekke samle underskrifter. I neste omgang er det hensikten å etablere en «folkekomite» som skal informere om Tyssedalsaken og arbeide for samfunnets framtid. Dette høres ganske tilforlatelig ut. De fleste er enige i at Tyssedalsaken må finne sin løsning, og av et toppoppslag i Hardanger Folkeblad i dag, går det fram at Industridepartementet for tida arbeider meget aktivt for dette. I løpet av denne måneden vil det ligge resultater på bordet dersom alt går som man håper.

Av forståelige grunner må de forhandlinger som nå pågår i departementet skje i fortrolighet. Kommunen og fagforeningen har imidlertid mottatt informasjon som er i samsvar med det som i dag publiseres i Hardanger Folkeblad.

Regjeringen har tidligere — for første gang i historien — gått til det skritt å garantere framtida til samfunnet i Tyssedal. Garantien er ment som en sikkerhet for samfunnet og de som bor der.

Nå sier en av initiativtakerne til aksjonen at de ikke stoler på en slik garanti. Og siden man har funnet det nødvendig å aksjonere nå, må vi gå ut fra at de øvrige som er med på oppropet til folk i Tyssedal, er av samme oppfatning. I og for seg er det alvorlig nok og bidrar ytterligere til å bygge opp under de strømninger som danner bakgrunnen for eksistensen til Anders Langes Parti og AKP (m-l).

Dersom initiativtakernes oppgave imidlertid er å styrke det arbeide som fagforeningen og DNN-utvalget driver, kan det ha sin berettigelse. Men til det trengs intet selvstendig utvalg som skal arbeide på siden av de organene som allerede er involvert i Tyssedalsaken.

Imidlertid er det ting som tyder på at initiativtakernes hensikt er en annen. I et brev fra initiativtakerne som skal stiles til regjeringen og som Vidar Våde i dag betegner som et diskusjonsgrunnlag, vil man sette bestemte frister for løsningen av DNN-saken. Det trues med vidtrekkende aksjoner, om så ikke skjer.

Poenget er at det ikke er fagforeningen som for øvrig ikke er kontaktet i sakens anledning, men en såkalt folkekomite som skal iverksette slike aksjoner. Vi går ut fra at det her dreier seg om aksjoner som må omfatte arbeidstakerne ved DNN Aluminium. Vi kan ikke annet enn se dette som et forsøk på å spille fagforeningen ut over sidelinjen. For at kampen skal føres videre av andre organer med politisk styring over fagforeningen.

Vær med og  
spør i  
QJAKO

Hardanger Folkeblad

Tyssedalsaken mot sin avklaring i slutten av måneden?  
**Industridepartementet forhandler med meget seriøse interessenter**



Folkeaksjonen i Tyssedal:  
**Unevndig med enda et utvalg**  
Fagforeningen ikke kontaktet

Underskriftskampanje i Tyssedal  
**Skal munne ut i en egen «Folkekomite»**  
Stoler ikke på Begeringsgarantien, sier Vidar Våde

**SISTE: AKSJONEN i Tyssedal er avblåst**





## Odda RV sitt valprogram 1975

### TYSSSEDAL - ET OFFER FOR UTENLANDSK MONOPOLKAPITAL OG IMPERIALISME

Grunnen til at RØD VALGALLIANSE har laga et eget programavsnitt for Tyssedal, er den helt spesielle situasjonen som har oppstått på grunn av DNN-saka og usikkerheten omkring Tyssedals-samfunnets framtid.

Ved å ta for oss dette lokalsamfunnet kan vi lære mye om monopolkapitalens diktatur og sosialdemokratens forræderi mot arbeiderklassen. Gjennom dette vil vi lettere se betydninga av en revolusjonær arbeiderpolitikk.

DNA's etterkrigspolitikk med sin ødeleggende sentralisering, ramma Tyssedal for fullt. I løpet av de siste 20-30 åra har omlag 15 forskjellige service-institusjoner og samfunnsfunksjoner blitt lagt ned eller overført til Odda. Som svar på protestene fra folket her, har de lokale DNA-folka framholdt at 'slik er nå engang utviklinga'.

Staten har nå kjøpt DNN-Aluminium og dermed også 40% av aksjene i A/S Tyssedalsdane. Den lokale DNA- og SV-ledelsen forsøker å framstille dette kjøpet som en "redningsaksjon" for Tyssedalsamfunnet. DNA-regjeringas praksis gir ingen grunn til å tro dette, tvert imot. Daglig skjer det større eller mindre innskrenkninger uten at staten griper inn for å redde noe som helst. At staten overtar DNN Aluminium er ikke noe annet enn at ei "monopolbedrift" har kjøpt ut andre monopoler. De tidligere eiere, Alcan og Baco, har tjent kolossale summer på den billige krafta, og profitten har blitt ført ut av landet etterhvert. Produksjonsmidla har ikke blitt fornya etter slitasje, men lappa på. Arbeidsplassene har ikke blitt utvikla eller trygga. Dette er etter sunt folkevett klart i strid med konsesjonsbestemmelsene, men i steden for å stille monopolene til ansvar for denne uhyrlige rovdrafta, gir staten dem altså ei gavepakke på 35 mill. dollars som "kjøpesum".

Staten har ved overtakelsen av DNN Aluminium sikra seg kontroll over omlag halvparten av kraftproduksjonen til A/S Tyssedalsdane. Dette er statens egentlige interesser i denne saka. Like lite som tidligere har arbeiderne ved bedrifta noen garanti for arbeidsplassene. Uklarheten om hva som kommer til å skje når DNN Aluminium legges ned, er fortsatt like stor. Det gjelder hva slags arbeidsplasser som kommer i steden, hvor mange det blir og hvor det kommer til å legges. Det er også høyst uklart hvilke planer staten har for krafta når ovnene på DNN Aluminium engang kjølner for godt. Hvorfor alt dette hemmelighetskremmeriet? Ville staten ha vært så hemmelighetsfull dersom den hadde sittet på en positiv overraskelse?

I en situasjon som denne er det eneste folk i Tyssedal kan stole på sin egen vilje til å kjempe for sine interesser. RØD VALGALLIANSE vil støtte Tyssedølene i denne kampen og ta initiativ for ei brei organisering. Uten organisering for kamp, vil en bli et lett bytte for taktikken og manipulasjonene fra statens side.

### KAMP FOR Å BEHOLDE ARBEIDSPLASSENE I TYSSSEDAL

Betingelsen for at Tyssedal også i framtida skal kunne bestå som et sjølstendig samfunn, er at folket som bor der også har arbeidet sitt der. Det finnes ikke noen fullgode garantier for at det blir oppretta nye arbeidsplasser som erstatter de ca 380 på DNN Aluminium når denne legges ned. Det er derfor stor fare for at Tyssedal kan bli et sovesamfunn for folk som arbeider andre steder.

Kampen for å beholde like mange arbeidsplasser i Tyssedal må skjerpes. Ikke en watt av krafta som i dag blir nytta ved DNN Aluminium må føres vekk før det foreligger konkrete planer for ny industri, samt en skriftlig, bindende garanti for at den blir etablert. Når disse bygges ut, skal det sikres et stedets kvinner og ungdom også skal ha arbeid.



Vi har ovanfor referert «kvitboka» sitt ufråvikelege krav om at krafta skal nyttast i Tyssedal til sikring av framtidige arbeidsplassar.

### På møte i Hydro...

Faktisk medan «kvitboka» er under trykking, uttaler John Andersson, formann i fagforeninga, følgjande i eit møte DNN-utvalget hadde med Hydro 19. juni 1973:

*«Kommunen er i en gitt situasjon innstilt på å nytte kraften som bytemiddel for et tilfredsstillende antall arbeidsplasser, dersom aluminiumsproduksjonen opphører. Således kunne en være interessert i en høyforedlingsbedrift.»*

For å seia det med Hans Rotmo i Vømmøl:

*«Forhandlinger føres i lukkede rom/Kva vert det forhandla om?/«På nuværende tidspunkt er det for tidlig å gi beskjed/— Kor lenge skal vi høyra det?»*

### Glidning på standpunkt

Den politiske haldninga fagforeningsformannen gjev uttrykk for her, blei ikkje gjort til offisiell politikk før på møte i Odda kommunestyre 25. september 1974. Eit omfattande og langt vedtak, endar opp på denne måten:

- 7) I tillit til Regjeringens garanti for at sysselsettingen i kommunen skal være upåvirket av en closing eller nedleggelse av nåværende produksjon i Tyssedal, vil Odda kommune stå til at Industridepartementet fortsetter arbeidet med sikte på å overta DNN Aluminium A/S sine rettigheter i Tyssedal. I samråd med kommunen og arbeidstakerne sine organisasjoner må arbeidet med å skaffe alternative arbeidsplasser forseres.

Vedtaket vert også kopla saman med avslag til ideen om å reisa eit silisiumverk i Tyssedal, eit verk som blei avvist først og fremst pga. eit avskrekande arbeidsmiljø, men også antal arbeidsplassar.

Det er all grunn tli å rekna med at alle lokale utspel og vedtak vert synkronisert av DNN-utvalget. Og vi ser at avd. 44 gjer vedtak 30.9.74 og seier m.a. følgjande:

«Den produsksjonen vi har i dag, har et lite tilfredsstillende arbeidsmiljø. Når denne bringes til opphør, både mener og tror vi at en må søke å komme over i annen type industri som ikke har disse miljømessige problemer.»

Vi registrerer ei klar glidning vekk frå tidlegare standpunkt, vekk frå

## Alternativ industri...

### NOTAT

MØTE 19. JUNI 1973

STED : Hydro - Oslo

TIL STEDE : Generaldirektør Holte i Hydro, direktør Heggenhougen og fra Odda kommune - ordfører Einar Tveit, John Andersson og kontorsjef Ulf Seter.

Tveit Redegjorde for situasjonen ved DNN Aluminium A/S i Tyssedal, eierinteressene (BACO/ALCAN) og stilte spørsmålet om hvilken interesse Hydro eventuelt måtte ha dersom eierne av DNN Aluminium A/S fant ikke å kunne fortsette aluminiumproduksjon i Tyssedal.

Holte Fikk på forespørsel oppgitt eierforholdene ved A/S Tyssefaldene. Han mente forøvrig at Tyssedal ikke var noe sted for en moderne aluminiumsbedrift. Stedet var i det hele tatt lite egnet.

Andersson Kommunen er i en gitt situasjon innstilt på å nytte kraften som bytemiddel for et tilfredsstillende antall arbeidsplasser, dersom aluminiumsproduksjonen opphører. Således kunne en være interessert i en høyforedlingsbedrift.

mentasjon på kva forvirring og kva skade linja med «alternativ industri» påførte tyssedølene. Dei som stod fram og skulle vere leiarane hadde manøvrert saka inn i eit spor der einaste utgangen var at staten fekk krafta og Tyssedal sat att med ingenting.

I 1976 blei det tvinga gjennom ein uravstemning på Nitriden som synte at over 92% av dei tilsette ønskte ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal, medan avd. 44 ikkje sette fram krav om nytt verk.

«kvitboka» sin klare argumentasjon for ny aluminiumfabrikk og inn i det diffuse «alternativ industri» som alle snakkar om, men ingen veit kva er.

Nedanfor viser vi ein del doku-

## Vil Reidar Larsen nedlegge Tyssedal?

Aksel Fossen: har Larsen nye bedrifter i lommen?

Sosialistisk Valgforbunds representant Reidar Larsen har i en rekke innlegg i frontaledebatten stått til frontalanse på aluminiumsindustrien i Norge. Den burde nedtrappes når det gjelder leveranse av råaluminium og halvfabrikata.

Med mindre det dreier seg om

videreforedlingsanlegg må all annen industri ha fortrinnsrett framfor aluminium når det gjelder tildeling av industri. Larsen mente at det må bygges annen industri på disse stedene.

Arbeiderpartirepresentanten Aksel Fossen gikk til kraftig an-

grep på Sosialistisk Valgforbunds syn. — Hvor mange nye bedrifter har Larsen i lommen, spurte Fossen. Rjukan har erfaring for den ulykke som vil ramme industristeder dersom Gustavsen anvisninger skulle bli fulgt. Jeg trodde virkelig at alle var klar over at alternativet til å la være å mo-

derisere industrien var nedleggelse.

Jeg ser vel at en for en del av industristedene snarest må foreta en omstillingsprosess, men en generell nektning av kraften til denne industri er en meningsløs tanke.

Arbeiderne ved DNN aluminium



## Allianse mot Tyssedal

Det som er skjedd no er at det er oppretta ein utruleg allianse som har som fremste mål å rana krafta vekk frå tyssedølene utan at dei er sikra arbeidsplassar. Denne «alliansen» er ikkje noka organisatorisk kraft, men er ein *politisk* allianse som faktisk i denne perioden står direkte i motstrid til Tyssedal sine interesser.

Følgjande grupperingar stod i denne perioden *saml*a på spørsmålet om å føra krafta ut av kommunen i bytte mot A/S Alternative Arbeidsplasser:

**Det norske borgarskapet — in-**

**kludert DNA i Regjeringa, Industri-**  
**departementet m/statssekretærene**  
**Reidar Engell-Olsen og Trygve Tam-**  
**burstuen, Gøthe-utvalet, Tyssedal-**  
**utvalget (tidl. DNN-utvalget) med si-**  
**ne framtredeande DNA-politikarar**  
**frå Odda og leiande tillitsmenn i avd.**  
**44 som også var kjende som partipo-**  
**litikarar frå SV, samt SV si stortings-**  
**gruppe med Reidar Larsen som for-**  
**grunnsfigur som medlem i Industri-**  
**komiteen.**

Som sagt — dette var ikkje ein allianse med møter på kammerset der ein diskuterte korleis ein skulle ta

knekken på Tyssedal. Poenget er at i nett denne perioden, 1974—1979, var desse grupperingane samde om at Tyssedal-saka skulle «løysast» ved å føra krafta ut og evt. andre arbeidsplassar inn. Aldri har tyssedølene hatt så mange og sterke motstandarar som då. Likevel tørde DNA-regjeringane ikkje å ta den politiske risikoen det likevel var, å gjennomføra det dei hadde som målsetting: Føra krafta ut og la regjeringsgarantien bli mest mogeleg uthola.

*På springskift i hall B på Nitriden. (Foto: Kjell Gjersest)*





På årsmøtet i avd. 44 i 1975, blei Ånund Alterskjær, formannskapsmedlem frå DNA, vald til formann. Han var i alle år ein varm tilhengar av ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal.

Her er eit kort utdrag frå protokol-len frå medlemsmøte 18.9.1975:  
«Han (Alterskjær) tok vidare opp spørsmål om avd. hadde fraskrevet seg al.fabrikk og ba om å få klargjort om ordet al.industri ikke må nevnes. ... Den vidare debatt ga ingen avklaring.»

Første veka i januar 1976 gjekk Alterskjær ut i pressa og annonserte at avd. 44 no primært gjekk inn for ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal.

Dette blei handsama på medlemsmøte 27. januar 1976. Ifølge Andersson sitt innlegg på møtet, hadde Alterskjær sine utsegner skapt «sterk bestyrrelse i DNN-utvalget» og «DNN-utvalget hadde bedt om at foreningen måtte ta et møte for å avklare saken». «Han pekte på at ingen av tillitsmennene ville gå mot ny al.fabrikk i Tyssedal — men pekte på at det ikke var det samme som at foreningen primært skulle arbeide for ny al.fabrikk. Dette ut fra at det var lite realistisk å tenke seg at staten skulle bevilge 700 mill. kr. til dette formål.»

Alterskjær «mente det var vanskelig å erstatte de 380 arb.pl. en har i dag, og etter hans mening var det bare fortsatt aluminium som kunne erstatte dette.»

### AKP-linja i 1976

Den tredje linja på møtet var prega av at AKP(m-l) ikkje hadde teke stilling til kva type industri som kunne erstatta dei 380—400 arbeidsplassane og som sikra at krafta stod som garantien for desse arbeidsplassane.

«Moldøen: Hele industrien er nå inne i konjunkturvansker, men vi må sloss for 380 arb.plasser og her må mobiliseres, det er lite hjelp å hente i samarbeid med kommunen og ind.dep. Staten har ansvaret... Fagforeningen har gjort en god jobb fram til hvitboken, men nå er en falt som offer for samarbeidet kommune/staten. Det er på tide å danne en komite av folk med tillit.»

Og her er vedtaket som blei gjort:  
«Foreningen vil med utgangspunkt i å sikre arbeidsplasser og bosettingsmønsteret i Tyssedal, seriøst drøfte

## Kampen i fagforeninga om standpunktet til bygging av nytt aluminiumsverk

Dette er konklusjonen i Habberstad-rapporten

### Bare prosessindustri kan skaffe Tyssedal arbeidsplasser nok!

— Hvis man ikke bygger ny prosessindustri i Tyssedal, vil man neppe kunne skaffe arbeid på stedet til mellom 100 og 200 mann som i dag arbeider ved Nitriden.  
Dette er den grimme kon-

klusjon som konsulentfirmaet Habberstad har trukket av sine undersøkelser av arbeidskraftsituasjonen i Tyssedal og de industrielle mulighetene på stedet. Rapporten fra konsulentfirmaet, er av en eller

annen grunn hemmeligstempelt, men konklusjonen begynner etter hvert å bli kjent i vide kretser og har gitt næring til nye spekulasjoner.

Over til side 14



Ånund Alterskjær mener aluminium fortsatt bør være aktuelt i Tyssedal.

alle tilbud, forslag og prosjekter som ivaretar denne målsetting. Bortsett fra dette er, som foreningen tidligere har avvist, planen om å reise et silisiumverk i Tyssedal.

Møtet vil på ny understreke denne beslutning. Møtet vil stadfeste og understreke den betydning som vi legger i Regjeringsgarantien for opprettholdelse av sysselsettingen i Tyssedal, en garanti som vi ser på som uvurderlig i denne vanskelige overgangstid med sine spesielle konjunkturvansker.»

Følgjande forslag frå Nils Moldøen falt mot 3 stemmer:

«Fagforeningen står fast på kravet om 380 arbeidsplasser innen relativt kort tid og vil organisere medlemmene til kamp for dette kravet.»

Utspelet til Alterskjær ga i alle fall følgjande to resultat:

— Ny aluminiumsfabrikk var formelt ikkje ute av biletet og skulle vurderast på linje med andre «tilbod».

— Og AKP(m-l) tok for alvor til å lura på om det ikkje var nødvendig å konkludera argumentasjonen: Var

det andre alternativ til aluminium som både skulle nytta krafta og sikra 380 arbeidsplassar?

De fagorganiserte gir med denne uttalen egentlig full støtte og full tillit til det arbeid som drives i industridepartementets regi. Men det kom ganske klart til uttrykk på møtet at frustasjonen er til å ta og føle på. Og det hersker ingen tvil om at det er ganske mange av de fagorganiserte som nå kan tenke seg en hardere linje. Imidlertid valgte medlemmene å se situasjonen i lys av dagens virkelighet, både politiske og markedsmessig.

Haugesunds Avis 28.1.1976



# Aluminium – teknisk og økonomisk forsvarleg

Seinhaustes 1976 får ein gjennomført uravrøstinga om synet på ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal.

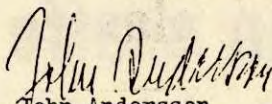
## Uravstemning - DNN ALUMINIUM A/S

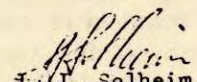
"Ønsker du at det skal bygges et nytt Al-verk i Tyssedal?"

92.24 % svarte ja  
3.58 % svarte nei  
3.88 % stemte blankt  
0.30 % av stemmene ble forkastet  
Fremmøte: 82.7 % av alle ansatte

Dersom det tidligere i enkelte kretser kan ha vært tvil om de ansattes ønskemål, så skulle dette nå være klargjort.

Bedriftsutvalget v/DNN Aluminium A/S

  
John Andersson  
Form.

  
J. Solheim  
Skr.

Denne avstemninga gjev klare signal om kva folkemeininga i Tyssedal er i denne saka og departementet får press på seg til å laga ei analyse av mulighetene for plassering av eit moderne aluminiumsverk i Tyssedal. ASV lager analysen som konkluderer med følgjande:

Etter oppdrag av Industridepartementet har Ardal og Sunndal Verk a.s. analysert mulighetene for plassering av et moderne aluminium elektrolyseverk med tilhørende avdelinger på DNN Aluminium A/S sitt industriområde i Tyssedal.

Analysen viser at det er fullt mulig med ASV's nyeste teknologi å plassere et elektrolyseverk med en årskapasitet på opptil 92.600 t Al på det nevnte tomteareal.

Med en krafttilgang på 856 GWh er det mulig å produsere 58.800 t Al pr år med nevnte ASV-teknologi.

Det er forutsatt en planleggings- og byggeperiode på 3 år med oppstartning av anlegget i første halvår 1981 med full drift fra 1.juli 1981.

Bemanningen for dette anlegg er anslått til 315 ansatte totalt.

Intern rente for dette anlegg, før skatt, vil være:

9,7 % med investeringsavgift  
11,2 % uten investeringsavgift

## Bønn til Industrideptet

Dette vart ammunisjon for aluminium-tilhengarane i Tyssedal, og det var ikkje til å unngå at fagforeninga vedtek samrøystes å senda ei bønn til industridepartementet:

UTTALELSE ENSSTEMMIG VEDTATT PÅ AVD. 44's MEDLEMSMØTE  
mandag den 21.2.1977

-----  
Vi er kjent med at det nå foreligger teknisk/økonomiske beregninger for et nytt aluminiumsverk på 58800 årstonn, som tilsvarende den energimengde selskapet disponerer. Disse beregninger er etter vårt skjønn positive, og vi finner det derfor riktig og gi dem vår fulle tilslutning.

Vi forventer at Industridepartementet er av samme mening, og ber om en hurtig avgjørelse - også ut fra bedriftens nåværende situasjon.

Kjell Johannessen  
sekr.

John Andersson  
form.



Industridepartementet er ikkje den instansen som er mest var for at bønner vert høyrde, så vi tek med utdrag frå medlemsmøte-protokollen 8. juni 1977.

«Sak 2. DNN-saken. Ref fra møte med Industridepartementet.

Formannen refr. fra møte i Tyssedalsutvalget 3. juni i Odda om følgende saker fra møtets dagsorden.

1. Elkem-Spikerverkets kjettingprosjekt
2. Hafslunds ferrolegeringsverk
3. ÅSVs elektrolyseverk
4. Andre bedrifter som er kontaktet.»

### Regjeringsgarantien halvert?

Situasjonen var no vanskeleg for alle partar. Kva innverknad situasjonen hadde på dei saka galdt, var det få som fann verdt å nemna. Nitriden gjekk for bortimot full maskin, og folk hadde enno arbeid.

Industridepartementet og DNA stod no i fare for å bli avslørt. Regjeringsgarantien omfatta i si tid 380 arbeidsplassar — no la dei fram skisser til løysing med ca. 200 arbeidsplassar samt at krafta skulle først vekk. Dept. definerte også etableringa av Kongsberg Våpenfabrikk i Odda (110 arbeidsplassar) inn i garantien, sjølv om berre 2—3 av dei tilsette ved DNN var kompetent til å få arbeid der. Og det viktigaste: DNA-regjeringa og Industridepartementet nekta å gå inn for bygging av nytt aluminiumsverk, sjølv om det no var påvist at det både ville vera teknisk og økonomisk forsvarleg.

DNA lokalt hadde det kanskje enda vanskelegare. Offisiell politikk til Odda herreds Arbeidspati var til ei kvar tid identisk med DNA-regjeringa sin politikk. Men i Tyssedal var det ei gruppe medlemmer rundt tidlegare fagforeningsformann Ånund Alterskjær som stod standhaftig på kravet om aluminiumsfabrikk i Tyssedal.

AKP(m-l) stod på same kravet. Medan Tyssedalsutvalget, og dermed også leiinga i Odda kommune, avd. 44 (og dermed også SV i Odda), la seg på ei «vente og se»-linje som betydde i realiteten å spela spelet til Engell-Olsen.

Regjeringen angrer på DNN-garantien

HA 17.8.79.

## Løsning i løpet av høsten?

AV JAN GRAVDAL

— Hadde DNN-saken oppstått to år senere er det tilsomt om Regjeringen hadde gitt noen garanti for opprettelse av arbeidsplassene i Tyssedal. Den avtalen Odda har fått med myndighetene er meget eksklusiv og en slik avtale vil Regjeringen umulig kunne gå inn på andre steder. — Det er statssekretær i Industridepartementet Reidar Engell Olsen som sier dette til Hauge-sunds Avis.

— Løsningen av DNN-saken er vel like rundt hjørnet nå? —  
— Det vil jeg ikke uttale meg

— Det vil jeg heller ikke uttale meg om  
— For en tid tilbake ble det

— Det er sagt at vi tidlig i høst håper på å holde et møte i DNN-utvalget hvor det skal

DNA i valkampen 77: videreforedling og krafta ut av Tyssedal.

Industridepartementets opplegg i DNN-saken:

## Tyssedal får 200 arbeidsplasser – ÅSV får kraften

### Råaluminium urealistisk framtid

## «Alternativt» Tyssedal med svensk-tysk hjelp

REPORTASJE: ARNE HESJEDAL

— Jeg kan ikke se at det i dag har noen hensikt å bruke tid og krefter på å fortsette en diskusjon om primæraluminiumproduksjon i Tyssedal. Å få Stortingets godkjenning for bygging av et nytt aluminiumverk tror jeg ikke vil være politisk mulig. Reidar Engell Olsen, statssekretær i industridepartementet og formann i Tyssedalsutvalget, opplyser dette i et intervju med Bergens Tidende. Fra myndighetenes side satses det nå mye på å legge til rette grunnlaget for et videreforedlingsverk i Tyssedal. Sentralt i dette arbeidet står forhandlinger med Sverige og Vest-Tyskland med sikte på å oppnå langsiktige leveringsavtaler for videreforedlete aluminiumsprodukter «i bytte» for energi. Statssekretær Reidar Engell Olsen håper at droftingene skal føre til en avklaring i løpet av august—september.



### Avd. 44: «Vente og se»

To døme:

Tillitsmannsmøte i avd. 44  
27.11.1978.

«Etter en bred diskusjon hvor samtlige deltok satte formannen frem følgende forslag:

1. Det utarbeides en uttalelse som går mot en avtale hvor ÅSV får rettigheter til energien før en akseptabel plan for nyetablering er fremlagt.

2. Det blir krevd et nytt møte i det stedlige Tyssedalsutvalg (DNN-utvalget) hvor saken blir tatt opp.

Moldøen satte fram følgende forslag:

1. Går imot videreforedlingsplanene med 200 arbeidsplasser som løysing av DNN-saken.

2. Går inn for råaluminium + videreforedling så lenge det sikrar 400 arbeidsplassar.

3. Inntil DNN-saken er løyst skal 'Nitriden' gå som før, og vi krev nødvendig opprustning av fabrikkene.»

(Formannen, J. Andersson, sitt forslag blei vedteke mot 1 stemme.)

Vi let fagforeningsformannen sjølv leggja fram sitt syn og taktisk linje i det vi saksar frå årsberetninga i 1979.





## DET KONGELIGE INDUSTRIDEPARTEMENT

STATSSEKRETÆREN

Ordfører E. Tveit  
Odda kommune

5750 ODDA

Oslo, 26.10.78

## «DNN saka

*Avd. 44's politikk i denne saken er fortsatt at vi vil se en utredning av alternativ industri. Disse utredninger må inneholde antall arbeidsplasser — arbeidets art — økonomiske analyser — og en klar garanti for fremtiden.*

*Vi har fortsatt krafta og kan om vi kommer til det standpunkt at fortsatt aluminiumsproduksjon er det eneste riktige, ensidig gå inn på en slik linje.»*

Mellom disse to møta — tillitsmannsmøte i nov. 78 og årsmøtet i febr. 79 — var mykje skjedd innan avd. 44. Mange var irritert over og misnøgd med Tyssedalsutvalget sine stadige påstandar om kor urealistisk det var å krevja nytt aluminiumsverk i Tyssedal, spesielt etter at ÅSV-rapporten slo fast at det både var teknisk og økonomisk forsvarleg.

**Febr. 1979: Viktig årsmøte**

Mange stilte seg tvilande til om leiinga i fagforeninga for det første var villig til å gå inn for nytt aluminiumsverk, for det andre om dei var i stand til å gå i spissen for å få kravet innfridd.

Situasjonen tvinga no fram ein «allianse», eit samarbeid på tvers av andre skiljelinjer — for å få reist kravet om aluminium i fagforeninga. Alterskjær og Moldøen, som var gruppeformann i 1. og 2. skiftgruppa, (den største ved DNN) samla heile 1. og 2. skiftgruppa bak følgjande forslag til årsmøte i avd. 44:

## «DNN-saken.

*Fra den tid trusselen om nedlegging av arbeidsplassene i Tyssedal kom i 1973 og fram til i dag, er det lagt fram en lang rekke forskjellige planer/ideer for løsning av DNN saken.*

*Avd. 44 sin holdning har vært å få utreda flest mulig alternativer for på den bakgrunn kunne foreta et reelt valg til beste for våre medlemmer og til beste for Tyssedalslssamfunnet. Samtidig har vi bestemt avvist enkel-*

*te 'prosjekt' som har betydd reduksjon av antall arbeidsplasser eller medført økte miljøproblemer. Vi mener tiden nå er inne til en oppsummering.*

*Av de framlagte planer er det eneste alternativet vi kan gå inn for en ny råaluminiumsfabrikk med tilhørende videreforedlingsanlegg.*

*31. jan. 1977 avga ÅSV en innstilling som konkluderte med at råaluminiumsproduksjon (60 000 årstonn) var både teknisk og økonomisk forsvarlig i Tyssedal.*

*Vi går inn for at disse planene nå blir satt ut i livet.*

*Vår begrunnelse er at et råaluminiumsverk med tilhørende videreforedling er det eneste alternativet som tar vare på Tyssedals aktiva — arbeidskrafta og den elektriske krafta.*

*Vi har ansvaret for at våre medlemmer har arbeid etter en nybygging. Vi kan ikke akseptere arbeidsledighet.*

*I tillegg kan våre medlemmer produsere aluminium, mange har hatt DNN som eneste arbeidsplass i livet, og det ville bety enorme problemer med en evt. omstilling til ny industri. Sist men ikke minst sikrer vi den elektriske krafta som blir produsert i Tyssedal, også i framtida blir brukt i*

*På forrige utvalgsmøte 3.6.77 konkluderte Tyssedalutvalget med at arbeidet med å skaffe ny industri til Odda-området skulle konsentreres om prosjekter innenfor videreforedling. Utvalget mente det i første omgang var naturlig å ta kontakt med Årdal og Sunndal Verk om dette.*

*På denne bakgrunn bekreftet ÅSV sin interesse for forhandlinger med Industridepartementet med sikte på å få klarlagt på hvilke betingelser ÅSV kan disponere kraften til DNN mot å påta seg ansvaret for ny virksomhet med beskjeftigelse anslagsvis 200 personer i Odda-området.*

*Reidar Engell Øyksen*

*Tyssedal. Når vi nå krever et nytt råaluminiumsverk, betyr det at vi også sier nei til Industridepartementets/ÅSVs planer om ensidig satsing på videreforedling i Tyssedal. Dette betyr en reduksjon av arbeidsstokken på ca. 50%, store omstillingsproblemer for de som måtte få arbeid og at den elektriske krafta ville bli borte fra Tyssedal for alltid.*

*Vi krever derfor at Industridepartementet legger om de planlagte forhandlinger med ÅSV, til å gjelde nytt råaluminiumsverk med tilhørende videreforedlingsanlegg i Tyssedal.» (Forslaget falt med 49 mot 116 stemmer.)*

*Mykje kan seiast om forspelet til dette årsmøtet. I AKP(m-l) såg vi ganske raskt etter årsmøtet at det var feilaktig å sausa spørsmålet om aluminium saman med valet av tillitsvalde på årsmøtet. Det var også ein taktisk feil ikkje å ta omsyn til at fagforeningsleiinga faktisk endra standpunkt framfor dette årsmøtet. Frå å gå i mot kravet om ny aluminiumsfabrikk i nov. 78 til å seia følgande på Årsmøtet, f.eks. 79:*

*«Styret ser ikke bort i fra at fortsatt aluminiumsproduksjon i Tyssedal kan være det eneste riktige.*

*Styret i DNN bevilget på styremøte den 2. feb. 1979 kr. 50 000,— til re-*



9. februar.

## DNN-saka

*vurdering av eksisterende planer. De vil, dersom Ind.dept. ikke motsetter seg en slik vurdering, foreligge om kort tid. Når dette foreligger vil vi kreve at DNN's styre/administrasjon får fullmakt til å legge fram en finansieringsplan. Når alt dette foreligger kan vi vurdere å gå ut med krav om at planene realiseres.»*

Ein annan interessant ting er at styret i Odda herreds Arbeidarparti blanda seg direkte inn i samarbeidet mellom DNA-medlemmer og medlemmer av AKP(m-l) og gjorde krav om at medlemmene i DNA måtte slutta opp om leiinga i fagforeninga — både i DNN-saka og på spørsmålet om gjenval. Hardanger Folkeblad span-dere til og med ein leiarartikkel på saka.

DNN—saka er igjen kommet i fokus. Det er også grunn til å tro at en avklaring er i sikte. Det endelige resultat vil imidlertid være avhengig av en rekke faktorer.

Vi for vår del har ikke lagt skjul på at fortsatt aluminiumsproduksjon må være å foretrekke framfor en mer konjunktur-sårbar videreføring. Et stort flertall av de ansatte ved bedriften har også gitt uttrykk for at de primært ønsker fortsatt produksjon av råaluminium.

Vi må likevel ikke innrette oss slik at vi får en fastlåst situasjon som ikke gir rom for alternative løsninger. Hovedmålet må hele tiden være trygge arbeidsplasser og et livsdyktig lokalsamfunn i Tyssedal.

Statsgarantien gjelder fortsatt. Vi har også den tiltro til statsmyndighetene at de vil legge adskillig vekt på de ønsker og meninger de ansatte ved bedriften har. Graden av denne tiltro vil være avhengig av den enighet som rår på arbeidsplassen. Får vi episoder eller situasjoner som river opp samholdet vil dette alene kunne vanskeliggjøre arbeidet med å finne en tilfredsstillende løsning.

Vi vil gjerne ha sagt dette fordi DNN-saka vil bli et hovedtema på årsmøtet til avdeling 44 neste uke. Vi håper det må bli et årsmøte som samler og som ikke river opp det fellesskap som tross alt er tilstede.

*Årsmøte ved DNN's fagforening:*

## Aktivistene i Tyssedal led dundrende nederlag

*AUF-formann ønsket AKP i stedet for partifeller*

AV JAN GRAVDAL

Styret i fagforeningen ved DNN aluminium i Tyssedal ble gjenvalgt med et overveldende flertall under årsmøtet i går kveld. «Sammenvergelsen» mot det sittende styret led samtidig et sviende nederlag. De siste ukene før årsmøtet har det vært drevet en voldsom aktivitet fra en fløy bestående av ledende folk fra Arbeiderpartiet og folk fra AKP(m-l) for å få skiftet ut det sittende styre. Og igjen er det

Arbeiderpartiet det politisk sett hardest går ut over. Under årsmøtet gikk formannen i AUF Ove Nicolaysen sterkt inn for å få skiftet ut sin partifelle Olav Albertsen med Nils Moldoen fra AKP (m-l). Det er i sannhet mye underlig som kanskje på det lokalpolitiske plan. Fraksjonsaktivistene led altså et dundrende nederlag på det best besøkte årsmøtet i nyere tid ved DNN. Samfunnssalen i Tyssedal var fylt til randen av DNN arbeidere. Aksjonen mot styret hadde utgangspunkt i DNN-saken.

AKP/DNA. Samfunnssalen i Tyssedal aluminiumsbedrift i Tyssedal og godtar ingen annen løsning. Et forslag om at styret skulle arbeide for en slik løsning ble behandlet, men vedtaket fikk en annen utforming enn det «sammensvergelsen» håpet på. I vedtaket heter det at styret ikke ser bort fra en aluminiumsfabrikk, men at man vil avvente resultatet av en ny vurdering av eksisterende planer på ny aluminiumsfabrikk. DNN's styre har bevilget 50.000 kroner til en slik vurdering, og fagforeningen vil ta

standpunkt når vurdering med finansieringsplan foreligger. Vedtaket fikk overveldende flertall.

Et politisk forslag om forholdet mellom Vietnam og Kampuchea ble avvist på årsmøtet.

John Andersson fortsetter som formann i foreningen, det samme gjør Olav Albertsen som nestformann og Kjell Johannessen som sekretær.

## Tapte årsmøtet — men vann aluminium?

Styret i DNN Aluminium gjorde vedtak om øyemerking av 50 000 kr. til oppdatering av planene for ny aluminiumsfabrikk. Og oppdateringa syntet at det no var enno meir lønsamt å byggja nytt verk i Tyssedal.

No starta toget og dei som ville vera med måtte henga seg på. I juni månad gjekk til og med DNA i Odda inn for aluminium, og føre kommune- og fylkestingsvalet i september 1979 gjekk samtlege kommune- og fylkesparti inn for reising av nytt aluminiumsverk i Tyssedal.

Men DNA-regjeringa gjekk framleis i mot.



## ALUMINIUMSVERK TIL TYSSedal?



Å sikre arbeidsplassene er det viktigste, sier Kjell Folkvord fra RV i Tyssedal.

Sjel om Industridepartementet nå vil foreta ei «grundig vurdering» av om det skal bygges et nytt aluminiumsverk i Tyssedal, så betyr det ikke at arbeidsplassene i Tyssedal er sikra. Rød Valgallianse i Tyssedal sier klart fra: «Stol ikke på departementets grundige vurderinger!»

## — Ikke uten kamp, sier Rød Valgallianse

Industridepartementet vurderer for tida å bygge et nytt aluminiumsverk i Tyssedal. Prosjektet gjelder en fabrikk med en årsproduksjon på rundt 80.000 tonn. Drifta av denne fabrikk skal være basert på den kraftmengda som DNN i Tyssedal disponerer i dag, dvs. 856 millioner Kilowatt.

Det har lenge vært et krav fra befolkninga at arbeidsplassene i Tyssedal må bli sikra. Den eneste garantien de har for at det skal skje er at krafta som blir produsert i distriktet ikke blir ført vekk.

Blir krafta ført vekk, blir bygda nedlagt, har det vært hevda.

Kjell Folkvord fra Rød Valgallianse i Tyssedal sier til Klassekampen at en hele tida har gått inn for ei løsning der arbeidsplassene blir sikra, uten at strømkrafta som blir produsert i Tyssedal blir ført vekk fra bygda.

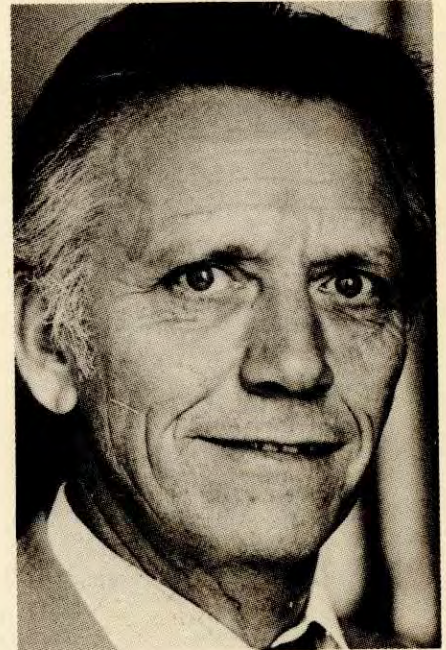
Han understreker at krafta er den eneste garantien de har for arbeidsplassene i distriktet og hvis den blir ført ut av bygda så er heller ikke regjeringsgarantien av de 400 arbeidsplassene som de fikk i 75 vordt noe.

Rød Valgallianse går inn for at det nye aluminiumsverket blir bygd, da det vil sikre 300 arbeidsplasser, sier Kjell Folkvord, men dette aluminiumsverket blir neppe bygd uten at vi

fører en knallhard kamp for det. Det er ikke lenger enn 14 dager til at Reidar Engell-Olsen uttaler seg slik til Hardanger Folkeblad på en slik måte at det blir oppfatta som om regjeringa helst vil føre krafta ut av området.

Med saker som Tandberg i friskt minne, så er det klart at denne kampen ikke kan vinnes uten hardt press fra lokalbefolkninga.

Mot slutten av måneden ventar en at det såkalte Myrvold-valget vil legge fram ei innstilling om prisen på elektrisk kraft, og denne innstillinga vil ha stor innflytelse på spørsmålet om nytt aluminiumsverk i Tyssedal.



Etter valet blei det utskiftingar i regjeringa. Lars Skytøen blei industriministar og Trygve Tamburstuen skulle overta både statssekretærposten og politikken etter Reidar Engell-Olsen.

## RV-programmet i 1979

### Forsvar Arbeidsplassene.

Den særegne situasjonen med relativt liten arbeidsledighet kan fort snu for Oddas vedkommende. Kampen for å sikre arbeidsplassene er derfor viktig også i åra som kommer. Spesielt avgjørende blir kampen for arbeidsplassene ved DNN.

Rød Valgallianse krever:

- Ny aluminiumsfabrikk med tilknytt videreforedlingsverk i Tyssedal.
- Dette er det eneste som kan sikre full sysselsetting i Tyssedal.
- Dette vil sikre at krafta blir i Tyssedal som garanti for arbeidsplassene også i framtida.
- Arbeiderne ved DNN kan aluminium og en ny fabrikk vil medføre minst omstillingsproblemer.

Rød Valgallianse ser faren for at de nyvurderte planene for aluminiumsfabrikk i Tyssedal kun blir brukt i valgkampøyemed for deretter å havne i en skuff i departementet.

Derfor vil vi arbeide for størst mulig oppslutning om parolen

- Ikke en watt ut av Tyssedal - bygg aluminiumsfabrikk straks !

RV støtter alle aksjoner for å hindre at krafta blir ført ut av Tyssedal.

Bygginga av Oksla kraftstasjon åpner for rasjonalisering og nedskjering av arbeidsplasser. Rød Valgallianse støtter kravet om:

- at antallet arbeidsplasser ved A/S Tyssefaldene blir opprettholdt
- at den gamle stasjonen i Tyssedal fortsatt blir kjørt med vannet fra Mågeli.



Statssekretær Trygve Tamburstuen: 13.7. 30/10 77

## Videreforedling mest realisisk

BT ODDA Etter industridepartementets mening er en bedrift som skal videreforedle aluminium den mest realistiske løsning når det gjelder fremtidig industrivirksomhet i Tyssedal. Regjeringen har allerede gitt de nødvendige fullmakter til at mulighetene for å bygge en slik bedrift kan utredes i samarbeid med Elkem-Spigerverket, bekrefter statssekretær Trygve Tamburstuen overfor Bergens Tidende. Noe endelig vedtak om en videreforedlingsbedrift er likevel ikke tatt.

Jang:

## Gyngehester –

Skal Odda, for ikke å snakke om Tyssedal, få aluminium? Og blir det videreforedling eller blir alt ved det gamle, men flunkende nytt? Dessuten – er ikke ASV med lenger. Og heller ikke Norsk Hydro? Elkem Spigerverket har vært med tidligere, men var uønsket og er med igjen. I mellomtiden blir Tyssedalsutvalget orientert. Og de ansatte. Omhvasomhelst. Kjettingfabrikk for eksempel.

DNN-saken med andre ord. Verdens lengste industrisak av en regjering med verdens største bonanger. Det var Nordli via Ingvald Ulveseth som ga Tyssedal garanti for arbeidsplassene i hine hårde dager. Eller var det Bratteli? Jo, han var det. Like fullt er det garantert for arbeidsplassene.

Kommunestyret i Odda ville ikke ha prosessindustri i 1974, de ville ha videreforedling eller noe annet godt og skikkelig som ikke griset til fjorden og lufta. Det samme sa de ansatte den gang. Siden har det blitt mer interessant med smelteverkindustri likevel. Dessuten er videreforedling dårlig butikk. Råaluminium derimot – det er gode greier. Det er her Gøthehjengen i industridepartementet har gått skoene av seg: Hva mener man i Tyssedal og hvorfor? Har vi mandat til å gi Odda og Tyssedal produksjon av manillatau, elektroniske traktorer eller kan det bli snakk om masseproduksjon av gyngehester?

I mellomtiden kvitter man seg med et par utenlandske storselskaper, lar

staten kjøpe hele greia. Og da kan vel staten fortsette. Host opp en milliard kroner til et smelteverk i Tyssedal, forelegg det hele for Stortinget og bli glad og fornøyd hvor alle kan få arbeide der de hører hjemme på samme skift som før. Ungdommen kommer etter med all sin utdannelse og vil jobbe rundt Sønderbergovner i ren skjær nostalgisk iver. Å lage råaluminium er livet. Dessuten er det vår egen kraft, hentet fra gråsteinsura oppe i fjellet av blodige rallarer som jobbet 28 timer i døgnet på to loftskiver og 14 flasker brennevin uten tresmak hele året. Uten ferie og feriepengene. Gift med kokka eller søstra til kokka som hadde kommet svømmende inn fjorden en junidag i 1901.

Det er slikt det blir råaluminium av. Omsider. Hva i huleste skal Tyssedal med en kjettingfabrikk? Eller gyngehester? Det var råaluminium de ville ha disse svenskene som var så steinharde at de spiste jern og dreit kjetting. De kunne drevet sin egen kjettingfabrikk før de døde av rust. Eller tæring som det også ble kalt.

Gøtheutvalget, Tamburstuen og Skytøen har historien mot seg. Det må bli råaluminium. Bare spør . . . ja, hva er det nå han heter igjen? DNN-saken blir trolig løst en gang. Og da kan direktøren tapetsere veggene i de nye kontorlokalene med alt avisvrøvel som er spydd ut til et utmattet folk opp gjennom årene.

Slik summerer avd. 44 opp situasjonen på årsmøtet 12. februar 1980:

### «DNN-saken.

ÅSV hadde på oppdrag fra Ind.dept. saken til vurdering fram til mai måned. Dette med bakgrunn i at ÅSV ga uttrykk for at de mente å ha muligheter til å løse saken innenfor foredling av aluminium. I slutten av mai måned derimot, ga de beskjed om at de ikke maktet dette, men at de var villig til å modernisere bedriften i Tyssedal.

I et møte med Ind. dept. den 13. juni ble det innrømmet av departementet, at de ikke hadde greid å løse saken, og at de nå skulle se på moderniseringsplanene. I denne forbindelse var «Gøtheutvalget» på besøk i Tyssedal den 8.—9. august. Vi så optimistisk på dette, men ga Industridepartementet beskjed i dette møte, at vi ikke lenger var villige til å diskutere alternativer. 16. nov. derimot kom Ind. dept. med en pakked løsning i El-kems regi, som omfattet Tyssedal, Mosjøen og Lista. Denne sak ble behandlet på medlemsmøte den 19. nov. hvor man fattet vedtak om å gå imot disse planene, og søke å utvide samarbeidet med Mosjøen, Lista og Forbundet som var enige med oss. Videre også øve press på det politiske plan. Vi har etter dette hatt møte med Lista, Mosjøen, Forbundet, Hordaland Fylke og formannen i Jern & Metall Jan Balstad. Tyssedalsutvalget har gitt en enstemmig innstilling til kommunen om å gå imot planene, men de politiske kontakter må utvides videre til bl.a. Industrikomiteen og Hordalandsbenken i Stortinget.»



# DNA sin strategi

Når staten kjøpte attende DNN Aluminium frå Alcan og Baco — gjort gjeldande frå 1. januar 1976 — kjøpte dei ein gammal, utrangert aluminiumsfabrikk. Men først og fremst kjøpte dei 40% av den elektriske krafta som A/S Tyssefaldene produserer.

Frå same tid har staten hatt som hovudlinje for sin politikk i Tyssedal-saka at krafta måtte først ut av distriktet slik at ein kunne skaffa maksimalprofitt ut av energien. For å få til dette var det naudsynleg å gå bort frå garantien om 400 arbeidsplassar i Tyssedal, evt. redusera han gjennom å definera alle andre nye arbeidsplassar i distriktet som del i garantien.

## Spjitt og hersk

Ved sida av trenering av saka, seigpining av tyssedølene og medviten bruk av «spjitt og hersk»-taktikken (gjennom Tyssedalsutvalet, Odda herreds Arbeiderparti, fagforeningsleiinga) — fekk DNA og resten av borgarskapet ein heilskapleg *angrepspolitikk* ovanfor Tyssedal.

Til og med så seint som 16. november 1979, klarer Tamburstuen med god hjelp frå forhandlingsdirektør Odd Gøthe, å splitta dei lokale representantane i Tyssedalsutvalet. Etter at ein føre valet syntest å stå samla tverrpolitisk på kravet om nytt aluminiumsverk, skulle det ikkje mykje til før «gamleordføraren» Einar Tveit, SVs formannskapsmedlem Finn Handegård og Eilif Eitrheim (DLF) gav etter for presset.

## Møte i Tyssedalsutvalget i Haugesund 16. nov. 1979

Etter denne debatt ble det foretatt prøveavstemning blant de lokale medlemmer av Tyssedalsutvalget. Prøveavstemningen gav slikt resultat:

- 1) Brudd — 4 stemmer (Helgesen,



## DET KONGELIGE INDUSTRIDEPARTEMENT

STATSSEKRETÆREN

Brev til Årdal DNA

6.9.1977

Tyssedal-kraften vil ved fremstilling av primeraluminium i et moderne anlegg på Sunndalsøra gi omtrent samme antall arbeidsplasser, 200-250, som det er aktuelt å skaffe ny beskjeftigelse for i Tyssedal. Det vil således ikke bli aktuelt på grunn av en eventuell omdisponering av kraften å overføre arbeidsplasser

Brev til ordfører E. Tveit

26.10.1978

På forrige utvalgsmøte 3.6.77 konkluderte Tyssedalutvalget med at arbeidet med å skaffe ny industri til Odda-området skulle konsentreres om prosjekter innenfor videreføring. Utvalget mente det i

Med dette som utgangspunkt vil Regjeringen be Forhandlingsutvalget for nye industritiltak å oppta innledende drøftinger med ASV om overtagelse av DNN's kraft mot å forplikte seg til å reise ny industri. Mandat for Forhandlingsutvalget kan først utformes når sonderingene med ASV har avklart om det er grunnlag for videre forhandlinger.

På møte i Tyssedalutvalget var det enighet i prinsippet om at de nevnte drøftinger med ASV skulle opptas.

Brev til funksjonærutvalget ved DNN

7.12.1978

"At Forhandlingsutvalget for nye industritiltak opptar innledende drøftinger med ASV om overtakelse av DNN's kraft mot å forplikte seg til å reise ny industri i området. Prinsippet om at kraften skal føres ut av distriktet for å skaffe alternative arbeidsplasser ble knesatt allerede i 1975 ved statens hjemkjøp av aksjene i INN."

Brev til Tyssedalsutvalget

22.6.1979

Jeg vil således presisere at det har vært og fortsatt vil være en klar forutsetning for Regjeringens garanti at det kan arbeides videre med en modell der en søker etablering av alternative arbeidsplasser mot å disponere kraften utenfor kommunen. De lokale representantene i Tyssedal-utvalget har da også vært inneforstått med at det ble innledet forhandlinger med ASV om etablering av arbeidsplasser innenfor videreføring av aluminium i Tyssedal mot at ASV kunne disponere DNN-kraften ved sine eksisterende verk. Utvalgets tilslutning 19.6.79 til fullmakt for Forhandlingsutvalget for nye industritiltak innebærer at en fortsatt kan bearbeide en slik problemstilling.

Departementet har mottatt til orientering brev av 13.3.79 fra Arbeidskontoret for Indre Hardanger der det heter at etableringen av Kongsberg Våpenfabrikk på Eitrheim tydeligvis ikke er noe alternativ til DNN ettersom bare 3 personer har gått over til den nye bedriften.

Dette rører imidlertid ikke ved det forhold at etablering på Eitrheim inngår som deler av løsningen på den sysselsettingsgarantien som ble gitt.

*Reidar Engell Olsen*  
Reidar Engell Olsen





*Massefabrikken ved DNN Aluminium.  
(Foto: T. Bølstad)*

Stensland, Johannessen, Andersson).

2) Ta saken hjem til behandling i kommunestyret/fagforeninger — 1 stemme (Alterskj ær).

3) Kreve primært aluminiumsproduksjon, men gå med på utredning av videreforedlingsprosjekt med garanti for arbeidsplassene — 3 stemmer (Eitrheim, Tveit, Handegård).

...

De lokale medlemmer sto etter dette tilbake med 2 alternativer, nemlig:

1) Krever aluminium. Ser ingen grunn til utredning av Elkem-prosjektet.

2) Krever aluminium, men er villig til utredning av Elkem-prosjektet.

Fem av utvalgsmedlemmene stemte for pkt. 1, mens 3 stemte for pkt.

2. Dette resultat ble meddelt departementets representanter i den påfølgende fortsettelse av Tyssedalsutvalgets møte.

Det er og verd å merka seg følgjande replikkveksling på Haugesund-møtet:

**«Stensland: — Gøthe gir uttrykk for et embetsmannsutvalgs mening. Må vente at den politiske ledelse i departementet ser mer distriktsvennlig på saken...»**

**Gøthe: —Forhandlingsutvalget arbeider ikke som embetsmannsutvalg, men på grunnlag av en regjeringsinstruks.»**

3 dager før Haugesund-møtet, på tillitsmannsmøte i avd. 44, la Moldøen — på bakgrunn av diskusjonar i AKP og blant arbeidskameratar, fram eit forslag til «handlingsprogram» for fagforeninga i Tyssedal-saka.



# Forslag til handlingsprogram for avd. 44 i DNN-saken

Det politiske målet for «handlingsprogrammet» er å sikra maksimalt press på staten frå fagforening, lokalsamfunn, distrikt og interessegrupper elles i Norge, for å gjera det politisk uråd for staten å koma utanom ein ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal.

Tiltak:

## I Vedtak

— Fagforeninga, avd. 44, gjer eit klårt og kvasst vedtak som sler fast kravet om at aluminiumsfabrikken blir bygd no, og at krafta aldri skal førast ut av Tyssedal.

## II Informasjon

— Fagforeninga må gå ut i massemedia og forklara situasjonen vi er komne opp i. Vi må dessutan be om støttefråsegner frå fagrørsla i Odda, men også frå fagforeninga i resten av landet. Vi må krevja at forbundet, NKIF, stør oss og at dei øver press på Industridepartementet i denne saka. Det same må vi krevja ovanfor Landsorganisasjonen.

— Fagforeninga må ta kontakt med massemedia for å prøva få dei til å prioritera og følgje denne saka. Dette må gjelda pressa uansett partipolitisk tilknytning. Dei NRK-folka som tidlegare har teke opp DNN-saka bør no kontaktast igjen for å følgja opp der dei slapp sist.

## III Støttearbeid

— Styret tar initiativ til at Odda kommunestyre fattar vedtak i saka i tråd med fagforeninga sitt syn. Om naudsynt må leiarane for dei politiske partia i kommunen kontaktast for å sikra samrøystes vedtak.

— Fagforeninga følgjer opp vedtaket 2.11. i Hordaland Arbeidarparti med å øva det naudsynlege presset på dei andre partia i fylket som sikrar

liknande vedtak. Det bør og sikrast gjennom dei lokale partilaga i Odda.

— Fagforeninga tar kontakt med Stortingsrepresentantane frå Hordaland og gjer greie for situasjonen i Tyssedal, våre krav, kva støtte dei har, og krev deira støtte i kampen for Tyssedal.

— Fagforeninga må følgja opp samarbeidet med dei kjemiske fagforeningane i Mosjøen og på Lista. Det må og vurderast å dra resten av fagforeningane i al.industrien med.

## IV Vidare press

— Fagforeninga krev at den politiske leiinga i departementet saman med Odd Gøthe stiller på møte i Tyssedal. Det bør vera eit ope møte der alle tyssedøler og pressa kan vera til stades eller eit medlemsmøte i fagforeninga der ektefellene vert invitert til å vera til stades.

— Fagforeninga må halda nær kontakt med andre organisasjonar i Tyssedal og i den grad det er råd, dra dei med i arbeidet. Det gjeld idrettslaget, Røde Kors, songkora, lærarråd, foreldrelaget ved barneskulen etc. Eit tiltak kan vera å skipa til ein kulturkveld der desse institusjoane er med og der kampen for Tyssedal står i sentrum.

— Styret tar initiativ til at fagforeningane på Nitriden, Zinken, Smelteverket og Tyssefaldene (og kanskje andre) samlar seg om politisk streik (demonstrasjonsstreik) på avd. 44 sine krav.

— Fagforeninga bør ta kontakt med fagforeninga på Tyssefaldene for å diskutera konkrete mottiltak i tilfelle freistnader på å føra krafta bort.

## V Interne tiltak

— Styret må sikra ei organisering av

medlemmene slik at handlingsprogrammet er gjennomførbart. Det vil truleg bety at styre/tillitsmannsutvalet må få med seg interesserte (og dyktige) medlemmer som i grupper får ansvar for t.d. eitt punkt i handlingsprogrammet. Det er desutan viktig at alle medlemmer som ser seg i stand til å ta eit tak (eller fleire) for Tyssedal, får høve til det.

Styre/tillitsmannsutvalet har ansvaret for rettleiing og kontroll av det arbeidet som evt. gruppene har ansvar for.

— Avd. 44 sitt studie-utval får i oppgåve å utarbeida eit studieopplegg på DNN-saka, og evt. lagar ei argumentsamling. Dette vil ha stor betydning for aktiviteten og innsatsen spesielt for nye medlemmer.

— Styret skal informera medlemmene når nye utspel skjer, enten i matpausar, gruppemøter eller medlemsmøter. Det kan også nyttast oppslag, løpesetlar etc.

Dette forslaget er meint som eit diskusjonsforslag frå mi side. Det vil difor bli lagt ut til gjennomsyn og diskusjon på bedriften og deretter fremma som forslag på tillitsmannsmøte/medlemsmøte.

Dette er ikkje noko «prestisjeforslag» frå mi side, viktige tiltak frå fagforeninga si side manglar sikkert, andre forslag som står her er sikkert mindre viktige, andre er truleg fornuftige forslag.

Difor er eg interessert i kva du meiner. I alle høve vil eg stå på at fagforeninga treng eit handlingsprogram i DNN-saka.

Nils Moldøen

Vi siterer frå foreningsprotokollen:

«Formannen gikk i gjennom de forskjellige punkter og pekte på at forslaget er analogt med den politikk avd. 44 har ført og fører fortsatt.»

Praksis både før og etter har synt at forslaget til Moldøen aldri var leiinga i avd. 44 sin politikk.



## Aluminium vinn gjennom

Medan Tamburstuen og Gøthe på vegne av DNA-regjeringa trør vidare i gamle spor, no med vidareforedlingsprosjekt i samarbeid med Elkem, var det ikkje lenger politisk råd for lokale politikarar å støtta seg på linjene frå Industridepartementet.

At kravet om einskapleg oppslutning om aluminiumskravet stod sterkt, vitnar ikkje minst desse linjene frå medlemsmøteprotokollen til avd. 44 5. febr. 1980:

«Moldøen/Andersson la fram følgende forslag: — Tamburstuen inviteres umiddelbart til et møte i Tyssedal for DNN sine ansatte. Dersom ikke departementet sier Ja til å modernisere verket innen 27. februar skal avd. 44 jobbe for en generalstreik i hele Odda. Enstemmig.»

Følgjande høyrer også med til historien:

«Styremøte torsdag 28. 2. 80. Moldøen tok opp spørsmålet om generalstreik evt. før påske og før regjeringa sin behandling av saken — dette spørsmålet fikk ingen tilslutning...»

Men samrøystes vedtak fekk ein både i fagforening og i kommunestyret.

### Regjeringa resignerer

Først 20. juni 1980 kom dei første signala på at DNA-regjeringa hadde resignert. På eit ope møte om industripolitikk og kraftkrevande industri, uttalte industriminister Lars Skytøen som si personlege meining at krafta bør nyttast i Tyssedal.

Enighet i Odda kommunestyre: *H.A. 14/2 80*

## Krafta skal bli i Tyssedal

DNN-saken samtidig med energimeldingen?

Full enighet var det i Odda kommunestyre om å avvise Industridepartementets etterhvert så kjente forslag til læring...

fortsette å gå sterkt inn for videreforedling og eksport av DNN-krafta

**ENSTEMMIG FAGFORENINGSVEDTAK:**

## — Fortsatt aluminiumproduksjon i Tyssedal

... karakteriserer den viktigste i den nettopp påbegynte valgperioden.

Blant annet derfor mente Siensland det var viktig å beholde DNN-krafta i Odda fordi kraft var den største lokaliseringfaktor re-

Haugesund (NTB): Fagforeningen i DNN Aluminium (bildet) i Tyssedal går i en uttalelse til Industridepartementet enstemmig inn for fortsatt produksjon i Tyssedal. Storting og Regjering. Særlig SVs John Andersson var opptatt av dette. Andersson trodde for øvrig at DNN-saken kunne komme opp til behandling i Stortinget sammen med Regjeringens ener-

18. september blei det så lagt fram ei regjeringserklæring om at DNN Aluminium A/S skulle moderniserast — i praksis betydde det at regjeringa gjekk inn for at det skulle byggast ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal.

Sjølvsagt blei det mange Oslo-reiser, diplomati og korridorpolitikk både i departement og Storting, men 29. mai 1981 gjorde Stortinget samrøystes vedtak om modernisering av DNN Aluminium A/S. Det skulle

VI OLAV, Norges Konge,

gjør vitterlig:

Stortinget blir innbudt til å gjøre følgende vedtak:  
På statsbudsjettet for 1981 bevilges under kap. 978 DNN Aluminium A/S:  
Post 90: Aksjekapital kroner 50 000 000.  
Tilråding fra Industridepartementet ligger ved i avtrykk.

## Flaggene til topps i Tyssedal

Industriminister Lars Skytøen:

## «Kraften må bli i Odda»

DNN-saken må løses med råaluminium

reisast heilt ny fabrikk, med nuytvikla teknologi tilpassa data-alderen. Fabrikken skulle startast opp hausten 1985 og antal tilsette var rekna til 300 ved oppstart. Ingen skulle bli oppsagt. Antal tilsette skulle reduserast gjennom «naturleg avgang» og alle skulle sysselsettast i anleggsperioden.

HAUGESUNDS AVIS 11/6 80



## Status etter 8 år

For tyssedølene har kampen heile tida dreia seg om grunnlaget for å oppretthalda arbeidsplassane, dermed heile lokalsamfunnet med alt det innebar av kultur, idrett, skule. Kort sagt — dei verdiane menneske vil halda i hevd avdi vi er menneske plassert historisk med ei fortid og ei framtid — og treng ein slik historisk, kulturell identitet om vi skal kunna nytta evnene våre fullt ut.

Heilt sidan starten på kampen, har det vore klart for dei fleste at det kun var bygging av ny aluminiumsfabrikk som kunne sikra eksistensgrunnlaget frmaover.

Vår påstand er at tyssedølene har vore villig til å slost for dette kravet, dersom einskapen lokalt hadde vore større, både når det gjeld kravet og korleis ein best fremmer kravet.

AKP(m-l) har hatt som linja frå første stund at folk i Tyssedal sjølv måtte organisera og føra kampen. At ein samlar alle gode krefter i ein felles kamp for Tyssedal, at ein nyttar former for aksjonar der tyssedølene sjølv deltar — underskriftsaksjonar, politiske streikar, demonstrasjonar — at ikkje eit fåtal politikarar og tilitsmenn skal ha jobben med å ordna opp åleine.

Opp mot dette har først og fremst DNA-regjeringane i 1970-åra stått. DNA-regjeringa, personifisert ved statssekretærene Reidar Engell-Olsen og Trygve Tamburstuen i Industri-departementet, har stått for ein konsekvent politikk tvert imot interesse- og rettane til Tyssedal-folket. Gong på gong har dei prøvd å få ført krafta ut or kommunen, få redusert sysselsettingsgarantien til det halve.

Metodane dei har nytta for å få gjennomslag for politikken sin, har vore meir raffinerte enn dei som skulle bli nytta av Høgre-regjeringa seinare.

Først og fremst spela dei på lojali-

teten til DNA-regjeringa i Odda herreds Arbeidarparti, dermed også leiinga i Odda kommune der DNA har hatt ordføraren.

Dei har knytta nært samband til medlemmene av Tyssedalsutvalget, dermed også leiinga i fagforeninga, avd. 44, som stadig vekk har vore i «viktige møter» i departementet. Desse «arbeidar-leiarane» har faktisk hatt som sin viktigaste funksjon å hindra at utolmodet og forbannelsen skulle koma til uttrykk ved at folk sjølv slost for retten sin. Dette har skjedd dels etter direkte påtrykk frå departementet (jfr. folkekomite-episoden) — dels ut frå eigen politisk tankegang og ideologi.

Sist, men ikkje minst, har dei hatt Hardanger Folkeblad — lokal arbeidarpartiavis, som til ei kvar tid har stått til full disposisjon for DNA-regjeringa, Odda kommune og Tyssedalsutvalget. Hardanger Folkeblad har vore hovudmidlelet ein har nytta for å sikra kontroll over tyssedølene, og hindra at kamplinja skulle styrka seg i Tyssedal.

Men nå fekk ein likevel — trass sterk motstand — vedtak om ny aluminiumsfabrikk i Tyssedal. Korleis kan det ha seg?

Etter vår vurdering er hovudgrunnen at ein lokalt har hatt ein opinion som heile tida har stått på standpunktet om at det Tyssedal treng er ein ny aluminiumsfabrikk (jfr. over 92% av dei tilsette på DNN i 1976). Denne opinionen har hatt talsmenn som har stått fram og argumentert og agitert for dette synet gjennom mange år.

Med å fremma mindretalsforslag i fagforening og kommunestyre år etter år, og dermed utsetta seg for eit stort politisk press (ikkje minst personlege bakvaskingar) makta ein å pressa standpunktta både i fagforening og kommunestyre så langt i ret-

ning aluminium, at når det så beviselig var både teknisk og økonomisk råd å bygga verket i Tyssedal — var det politisk *uråd* å koma utanom kravet.

Ein annan grunn ligg i det vi kan kalla forskjellen på Arbeidarpartiet og Høgre. Forskjellen ligg *ikkje*, som vi skal sjå seinare, i at dei to partia fører ulik politikk, har ulike mål med politikken sin i Tyssedalsaka osv. Forskjellen ligg først og fremst i at dei to partia har ulikt verljargrunnlag, har ulike veljargrupper, også interessegrupper, å ta omsyn til når politikken, standpunktta til dei ein-skilde sakene skal utformast.

Slik Tyssedalsaka hadde utvikla seg, medrekna dei garantiane DNA-regjeringane hadde utbasunert, ville det vera ein *for* stor politisk belastning for Arbeidarpartiet å gå i mot eit samrøystes lokalsamfunn med ei relativ sterk fagrørsle, med stor sympati elles i opinionen og ikkje byggja den fabrikk som kunne innfri dei mange løftene som var gitt gjennom 8 år.

Vi har no dokumentert at dette ikkje var DNA sin politikk, men det var politisk *uråd* å koma utanom. Det er no grunn til å minna om følgjande frå første ASV-rapporten 31.1.1977:

*«Det er forutsatt en planleggings- og byggeperiode på 3 år med oppstartning av anlegget i første halvår 1981 med full drift fra 1. juli 1981.»*

Aluminiumsverket som DNA i 1983 prøver å hausta politiske poeng for, kunne om DNA i 1977 hadde vilt, stått ferdig til bruk på det tidspunktet vedtaket om al.verket blei gjort.

Det same kunne skjedd om leiinga i avd. 44 hadde stått på kamplinja, stått på kvitboka frå —73 sitt program.





## Mellomspel eller forsmak...

1. september gikk fagforeningsformann John Andersson, kommunepolitiker for SV, over i funksjonærstilling ved DNN. Han blei no tilsett som verneleiar og gikk naturlig nok av som tillitsmann. Nestformann Olaf Albertsen, medlem i DNA, tok over.

Første dagen Olaf Albertsen hadde som heiltids fagforeningsformann, blei han informert om at bedrifta såg seg nøydde til å permittera 150—200 tilsette i anleggsperioden for det nye aluminiumsverket.

Den nye fagforeningsformannen slo alarm, sjølv om bedriftsleiinga ba

**VEDTAK PÅ MEDLEMSMØTE TIRSDAG 22.9.1981**  
**BESKJEFTIGELSE AV ANSATTE VED DNN. ALUMINIUM**  
**I BYGGEPERIODEN**

Permittering av inntil 200 ansatte i 3 år vil føre tøl enorme problemer for våre medlemmer og deres familier, for Tyssedal samfunnet og for Odda kommune. Dette er sjølsagt uråd for oss å akseptere.

VI STILLER DERFOR KRAV TIL EIERNE v/INDUSTRIDEPARTEMENTET OM AT DET INNEN 6. OKTOBER BLIR FREMLAGT GATANTI FOR AT INGEN BLIR PERMITTERT I ANLEGGSPERIODEN.

Olaf Albertsen  
Formann

Thor Høegh  
Sekretær

om at «saken ble behandlet internt foreløpig».

Måten både staten og bedriftsleiinga hadde handsama saka på var

skandaløs, folka på Nitriden blei forbanna og både styre- og medlemsmøte i avd. 44 reagerte skarpt.

Forslag om å gjera vedtak om aksjonar blei nedstemt med knapt fleirtal, men pressa som var til stades på medlemsmøte utelukka ikkje at det ville koma til aksjonar om ikkje regjeringsgarantien frå 1974 også skulle gjelda i anleggsperioden.

Men for å visa kva haldning den nye fagforeningsleiinga hadde, syner vi faksimile av «Notat fra møte med forhandlingsutvalet 25.9.1981» — 2 dagar etter det skarpe vedtaket på medlemsmøtet.

Resultatet blei til slutt at ca. 75 personar blei permittert frå 1. mars 1982 — utan at ansiennitetsprinsippet blei følgt.

### NOTAT

fra møte med forhandlingsutvalget avd. 44 25.09.1981 kl. 1000

Tilstede: O. Albertsen, H. Fedje, I. Haugland, J.J. Solheim, R. Helgesen, O. Vølle

#### Sak 1. Permittering av ansatte

Solheim uttrykte sin skuffelse på grunn av de uttalelser avd. 44 hadde gitt pressen. Han mente at den informasjon som til enhver tid kunne gis, var gitt. En burde kjenne til at forutsetningen og siktemålet hele tiden har vært at færrest skulle permitteres. Han mente videre at de krasse uttalelser som var kommet til uttrykk i pressen mer skadet enn gavnet de diskusjoner som allerede var i gang med myndighetene for å finne en løsning på problemet.

Albertsen sto på sin uttalelse at informasjonen hadde vært mangelfull, men sa at fagforeningen og DNN kanskje burde ha snakket sammen før pressen ble koblet inn.

Albertsen mente at ved permitteringer burde det tas hensyn til ansiennitet, men at de ikke ville stå beinhardt på den.



Willoch lager statsbudsjett ...



## Høgre-regjeringa tek over

Etter at Stortinget hadde gjort sitt samrøystes vedtak i slutten av mai, var både leiinga ved DNN og leiinga i fagforeninga i ferd med å innstilla seg på 3—4 år med anleggsdrift og omorganisering av arbeidsstokken i samband med det.

I september månad stoppa ein ca. halvparten av aluminiumproduksjonen og tok så smått til å riva søndre del av fabrikk. Arbeidsmiljø-problema i den delen som var i produksjon, auka berre på og alle såg fram til at heile «mølla» stoppa opp ved juletider.

Så dersom tankegangen er at det er og har vore krigstilstand mellom Tyssedal og staten, så var det eit velvald tidspunkt statsstyresmaktene slo til på: Lokka tyssedølene til å riva fabrikk sin ved å gjera vedtak om at det skal byggjast ny. Når så fabrikk er nedriven — gi beskjed om at det ikkje blir noko av den aluminiumsfabrikk likevel...

### Revurderinga av planane

Torsdag 29. oktober 1981 prentar Dagbladet ei rad usaklege og demagogiske artiklar om Tyssedal på 2. sida si. Hovudpoenget for Dagbladet var at det enno var råd å hindra «skandale-vedtaket» om Tyssedal å bli sett ut i livet.

I debattprogrammet «På sparket» same kveld, kjem statssekretær i Industridepartementet, Arnulf Ingebrigtsen, med utsegner i retning av at leiinga i departementet er innstilt på å revurdere planane for Tyssedal.

Om trusselen om permitteringar kom som eit sjokk på Tyssedal, er det vanskeleg å finna ord til å skildra kjenslene no. Folk var overraska, spørjande og forbanna.

Avd. 44 kalla inn til ekstraordinært styremøte fredag i arbeidstida og fatta eit vedtak som fordømte «den kampanje som er satt i gang for å stoppe moderniseringen av aluminiumsverket i Tyssedal». Moldøen reiste spørsmålet om spontane aksjonar, men fleirtalet ville avventa situasjonen.

Utover fredagen kunne både NRK og pressa stadfesta ryktene om at regjeringa ville fremma forslag om ingen løyvingar til DNN Aluminium på statsbudsjettet som skulle leggjast fram onsdag 4. november.

Arbeidsutvalet i Odda og Omland faglige Samorganisasjon kalla inn til ekstraordinært styremøte søndag kveld. Styret var samde om at no måtte eit samla lokalsamfunn reagere og gjekk inn for ein lokal generalstreik onsdag 4. november kl. 9—11. Formennene i dei tre kjemiske fagforeningane og ordføraren i Odda,

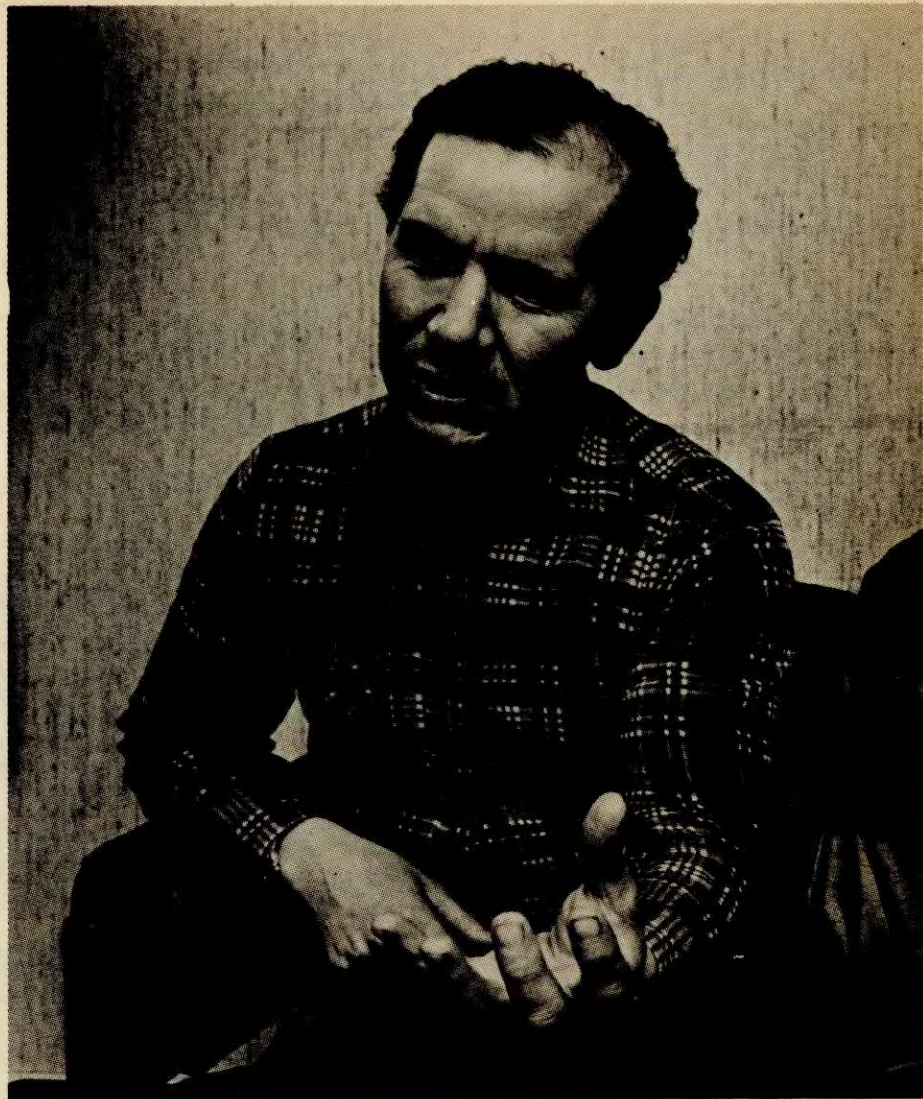
Leiv Stensland (DNA), var invitert til møtet. Formannen i avd. 61, Hans Sekse, RV-representant i Odda kommunestyre, og ordføraren (det var dei som hadde høve til å koma) gav begge uttrykk for at dette var naturlege og nødvendige rekasjonar. Redaktøren i Hardanger Folkeblad blei kontakta og han gav lovnad om å koma ut med ekstrautgåve på tysdag 3.11. for å mobilisera til streiken.

Formannen i avd. 44 kom seint til møtet og gav uttrykk for skepsis i og med at fagforeninga ikkje hadde handsama saka. Han åtvara Samorg mot å ta over saka frå fagforeninga.

Samorg-styret meinte at situasjonen hadde endra seg drastisk sidan fredag og at det no var heilt naudsynleg å reagere hurtig. Likevel ville ikkje Samorg gå ut med vedtaket før fagforeninga gav grønt lys og støtta opplegget.

Ekstraordinært styremøte på kontoret 1.11. kl. 18.00  
Seinje om å oppmøda til  
politisk streik i distriktet  
torsdag f.k. frå kl. 9.00 - 11.00 si utlysning  
Hardanger Folkeblad vil koma  
med ekstrautgåve søndag om  
saka. Alle vedtak på dette møtet  
vert iverksatt når i fall avd. 44  
gjev grønt lys.





*Kjell Folkvord:*

## **EIN TIDLEG NOVEMBERDAG**

*(Mel: Farewell to Carlingford, Dubliners)*

Det var ein tidleg novemberdag  
i nitten åtti ein  
Vi måtte ta fram faner og flagg  
og stille kvar og ein.

For då stod kampen om DNN  
i Odda og i Tyssedal  
og vi kjem kje til å gi oss førenn  
aluminiumen renn  
aluminiumen renn.

Og vinden kasta orda fram  
når folk på plattforma stod.  
Vi merka ikkje regnet som rann  
og hørte kvart eit ord.

For då stod...

Kring talarstolen stod dalens barn  
og lærte utenat  
om klassestatens lange arm  
og om ordet «kamerat».

For då stod...

Og her vart snakka om Willochs svik  
som legg Nitriden kald  
men då faukt i veret nevane, slik!  
Til eit LEVE TYSSDAL!

For då stod...

Vi stod ved porten til DNN  
i streik for Tyssedal.  
og dei hørte kongens kvinner og menn  
vårt krav om kapital.

For då stod...

Det var ein tidleg novemberdag  
i nitten åtti ein.  
Vi måtte ta fram faner og flagg  
og stille kvar og ein.

For då stod kampen om DNN  
i Odda og i Tyssedal  
og vi kjem kje til å gi oss førenn  
aluminiumen renn, aluminiumen renn!







HAUGESUNDS AVIS

Torsdag 5. novem

Tyssealsaken:

# Selv ferjene sto

Utsettelse er stans

Oppslutningen om aksjon

Banker, forretnings, ka-  
feer, kontorer, skoler — alt  
var stengt. Politiske partier,  
organisasjoner, fagforenin-  
ger, kommunalt ansatte på  
alle plan. Je selv bedriftsle-  
dere streiket, berengt sto det  
på alle dører. Midt i folke-  
mengden sto forretningsfolk  
som aldri nevnte hadde  
tenkt at de skulle komme til  
å delta i en streik.

Åsen Hagen, lokalrådsformann

DNN-reportasje

Vidar M. Solheim  
Arvid Møller  
Jan Gerdal  
Kjell Strand (foto)

ODDA sentrum hadde aldri vært i  
så stort hater hjemme i i ODMA.  
Forretningen er en av de eldste —  
jeg var aldri i tid. Saken er så al-  
vorlig for oss alle at vi ikke må og  
vil støtte med det vi kan. —  
Kontorveg Ulf Sævi i ODMA  
kommune hadde streiket dør til utti-  
konor i Streik fra 11.11.  
En av ferjene mellom kinnarvik

og Kinnarvik ble innsett i samme  
tidpunkt. Arbeiderne ved Hus-  
land i Østfoldfabrikk la ned  
arbeidet.

Funksjonsforstyrrelsen ved  
DNN, NITON, andring ved DNN,  
alle sluttet opp.  
Idun Østerhus, formann i NITON  
sluttet opp om kampen og skal  
gjøre det til sine slutt. —  
Samtidig ansatte i entrepren-  
firmaet Tor Furubølmen A/S  
streiket. Furubølmen er i gang med  
anleggsarbeidene i Tysseal. Og  
for alle: Selv ikke en utsattel-  
se av bygningen vil bli godart. En  
utsattelse ser alle på som det sam-  
me som full stans.



Kjennsmann Åsen Hagen var aldri i tid. — Vi holdt streik og det gjorde hele lokale næringslivet i kommu-  
nen. Dette gjelder om alle.

## Høyre-forslaget en politisk skandale

Aksel Fossen med harde ord i Stortinget om regjeringens DNN-utspill

— Bare Stortinget kan nå hindre  
en politisk skandale, og bevare  
var en fælleslader stortingstrep-  
sentant Aksel Fossen. Aksel Fossen  
Stortingets spørsmåle onsdag.  
Han hadde tatt industriministerens  
spørsmål om stans av Tysseal-  
prosjektet, men fikk ikke noen nye  
signaler. Industriministerens svari  
var bare til den redigeringen som  
er i budsjett og som altså kosta-  
kroner og ny vurdering av hele alu-  
miniumstøttingen i Tysseal.  
I en replikk til statsråden brukte  
stortingstrepresident Aksel Fossen  
harde ord.

— Statsrådens vurdering er ikke  
i tråd med internasjonale og natio-  
nal ekspertise. Statsråden svar er  
en gjenopplagte av de uholdbare ar-  
gumenter som tidligere gikk til av-  
sone. — Sævi: beviset i ystingene  
der spill som er satt i gang på tross  
av en ekstremt storingsvedtak,  
sa Aksel Fossen. Han anset. Og  
han mente at det nå er avslørt at  
kampen om Tyssealstakrafta ikke  
er slutt.

— Dermed Stortinget sluttet opp  
om regjeringens standpunkt vil ar-  
beidet i Tysseal stoppe, sa han  
med stående alene i brevis. De 600  
til stansende vil i beste fall bli berørt til  
å arbeide i en halv måned ved  
der, det er en umulighet, sa Aksel

Fossen. Han fremholdt at den ene  
ste måten å hindre en skandale på  
er å gi bedriften den nødvendige  
akseptkapitalen. Jeg ber om det for  
Tysseal-folket i skyld, sa han.  
I en samtale med Haugesunds  
Avis påpeker stortingstrepresident  
regjeringen holder at DNN i Tys-  
seal må tilføres kraft utenfra. I  
ODDA-regionen — produserte, det  
dobbelt så mye kraft som det be-  
hovs. Vi eksporterte altså en vesen-  
lig del av kraft. Det er også grunn til  
å se på Høyres rolle som den store  
bedriften som skal utlyses som  
forvarer av endomretten, det er  
ber bygget til kraften. Den har  
kompeten og endomretten, men i

dette tilfellet synes ikke Høyre å  
være særlig opptatt av dette fak-  
tet. Det dreier seg om hele folket  
endomretten, sier Aksel Fossen  
videre.  
— I en proposisjon blir det også  
sagt at miljøforholdene er endret?  
— Dette er også blitt sagt. Det er  
aluminiumbedrift ikke berørt i  
løpet av fire måneder. Vi visste alt  
om dette da saken ble behandlet i  
Stortinget. Det er da også grunn til  
å påpeke at den aluminiumbedrift  
ble den helt eneste i landet.  
re selv om produksjonen ikke fra  
18-40.000 tonn.

Tysseal har ingenting å tape:

## «Den brente jords taktikk»

Oddasamfunnet vil slåss med alle midler

Oddas befolkning, og i befolkningen vært noen  
særligsthet som er hører  
hjemme i Tysseal, kom-  
mer til å kjempe med alle  
midler som finnes for å  
beholde DNN Aluminium.  
Til sammen var over  
2000 oddinger møtt fram i  
henholdsvis Tysseal og  
Odda da streiken startet i  
går morges.  
— Så samlet har ikke

Det, og det gjelder ikke bare alu-  
miniumfabrikken, det gjelder be-  
ligene som er bygget, det gjelder  
angakort, musikk korpet, det  
gjelder fridagstidene inne i felles-  
Nær det gjelder mer — det gjelder  
og så alle de andre samfunne-  
ar som har basert seg på industri.  
Derne blir en prøveten. Vi slåss  
for flere enn oss selv. —  
Leif Stana, som i fiktur med Va-  
de sitter i kommunestyret, viste til  
Tysseal.

fabrikken henvise, til alle de pen-  
gane samfunnet har hentet fra in-  
dustriell samfunnet ODDA. Han la ik-  
ke skjul på sin misnøye om at han  
kunne det svært vanskelig være and-  
rer som vil sikre seg krafta fra  
Tysseal.

Mellom 1500 og 2000 mennesker  
var samlet i ODDA sentrum da  
Byrå Sævi fra Haugland og kontro-  
holdt sin appell. En endelig bevis-  
gjorde at folk ikke fikk med seg  
det han sa, heller ikke fagfore-  
ningsformann Olav Albertsen.  
Til gjengjeld rokk oddingene  
i da ODDA Musikk lag spilte opp  
med Oddasangen.



— Vi har krafta og kontrollen med  
krafta. Den skal vi beholde i Tys-  
seal, det er det det handler om.  
sa formannen i Tysseal Elektris-  
keforening Kjell Skar i sitt inn-  
legg på appell plauen.  
Og det er ingen tvil — i Tysseal  
vil man gjøre alt som er i samsa-  
men av kraft om det skulle bli  
nødvendig. — Det brente jords-  
taktikk kan komme til å bli en na-  
turlig. Olav Albertsen, fagfore-  
ningsformann ved DNN, gjorde et  
sterkt innlegg med sin appell.  
— Vi står med ryggen mot vegg-  
en, vi skal komme, det skal Wal-  
deshjertrengsten la merke, sa  
Albertsen.

Tårne rant

Engasjementet er solidt i  
Tysseal og ODDA i denne saken.  
Tårne rant i tårne kringene på  
Høyre, høytlydende alumi-  
numarbeidere da de sto på  
appellplauen.

Mange hadde under, blant annet  
Synnøve Moland, formann i Alu-  
dal Hatt opp i det så langt Nils  
Molander sa. — Industriforene-  
ber, nevnte, sa Tysseal-kraft  
vekk. — Så samlet i kampen.  
Valde Vake — Beviset må være  
med uttrykk i krafta her, for  
med plura på Nordland, som er  
gjort av det vil være i en fagforening

Kjell Skar. — Det er var for til å fortsette det våre bevisførelse og fortsette har bygget opp.



ODDA sentrum i går formiddag. Bortimot 2000 mennesker var til stede da Byrå Sævi og Olav Albertsen holdt sin appell i ODDA Musikk lag  
delakt. Blant annet spilte de Oddasangen.



# UNDERVEIS



## Legg ned Tyssedal!

### Verknadene av streiken

Tyssedal fekk denne dagen ei enorm pressedekning. Radio, TV og heile den norske pressa var til stades og formidla både argumenta og viljen til å slost for aluminiumsverket til folk over heile landet.

Verknadene skulle ikkje utebli.

Same dagen måtte industriminister Jens Halvard Bratz innrømme at han forsto det var sterke kjensler i lokal-samfunnet i denne saka, men...

Kristeleg Folkeparti og Senterpartiet var raskt ute med forsikringar om at dei ikkje ville støtta Høgre i denne saka, men ville røysta for forslaget frå den avgåtte regjeringa om 100 millionar kr. til DNN Aluminium.

Fleire ti-tals fagforeningar kom med støttevedtak. Landsmøtet i NOPEF støtta og lova å gå ut i aksjonar om nødvendig. Aluminiumarbeidernes Samarbeidskomite gjorde liknande vedtak.

30. november då saka var oppe til avrøysting i Stortinget, syntte det seg at berre Framstegspartiet slo følge med Høgre; og DNN fekk løyvd dei 100 mill. dei skulle ha ifølgje det samrøystes Stortingsvedtaket i mai.

### SV — som aktivistar for Bratz

Industridepartementet tok nederlaget i første runde med knusande ro, og gav melding om at dei ville fremma ein ny proposisjon om saka i januar der ein då ville leggja fram forslag om annan industri enn aluminium i Tyssedal.

Dei makta å mobilisere store deler av næringslivet og andre borgarlege økonomiske og politiske autoritetar til eit korstog mot dei bortskjemte, egoistiske pressgruppene i Tyssedal som kun ville produsere det som bestefaren produserte. Til og med ungdomspartia til H, Sp og Kr.f., folk i miljø-rørsle, og SV på Universitetet i Oslo, blei mobiliserte på paroler som «Legg ned Tyssedal».

### Arbeidsplasser

kan bli for dyre,

NB

mener SV-er

Anta nå at Folkerådet i Tyssedal likevel fikk tildelt disse midlene på bakgrunn av tidligere lovnader om aluminiumsverk, men med frie hender til å forvalte dem på den måten de selv fant best. Da ville det neppe bli bygd noe aluminiumsverk. Funksjonærer og arbeidere som tillot seg å kreve noe slikt, ville sannsynligvis gjort seg mektig upopulære i kommunen. Mer sannsynlig er det at vi ville fått andre aktiviteter som skogreisning, utbedring av boliger, bygging av nytt kulturhus, fiskeavl i fjorden, utbygging av turistnæringen, forbedring av veier og transportsystem osv. — kort sagt aktiviteter som ville gitt mye mer igjen for den økonomiske innsatsen.

VÅRT LAND Torsdag 3. desember 1981

## Nei til storsatsing på kraftkrevende industri Parti-ungdom vil stoppe Tyssedal-bevilgningen

Av ERLING BØ

Vurder Tyssedalsprosjektet på nytt!

Dette er den klare melding fra de politiske ungdomsorganisasjonene til sentrumpartiene. Senterungdommen, Kristelig Folkepartis Ungdom og Unge Venstre er skuffet over at deres respektive moderpartier ikke fulgte regjeringen Willochs forslag om å sløyfe bevilgningene på 100 millioner kroner til aluminiumsindustrien i Tyssedal.

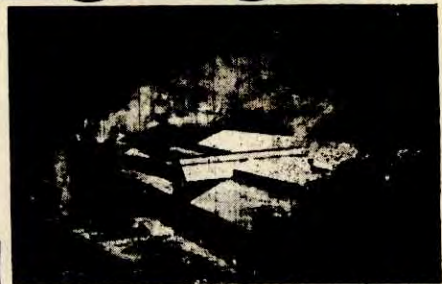
Det er energipolitiske vurderinger som er hovedgrunnen til at ungdomsorganisasjonene er misfornøyd med bevilgningen til DNN Aluminium i Tyssedal. Som kjent vil prosjektet disponere elektrisk kraft i Tyssedal som tilsvarer nesten to Alta-utbygginger.

Og når regjeringen i sitt forslag garanterte at det ville bli opprettholdt de nødvendige

nytt til våren, så vi ser en liten åpning og et håp om at det vedtaket som nå er gjort ikke skal bli det endelige, sier Skjerve.

Unge Venstres leder Jesper Simonsen uttrykker overfor Vårt Land også uenighet med sitt moderpartis støtte til utbyggingen i Tyssedal.

— Vi ønsker generelt en omlegging for å komme bort fra



Det er energipolitiske vurderinger som er hovedgrunnen til at ungdomsorganisasjonene er misfornøyd med bevilgningen til DNN Aluminium i Tyssedal.

tinget å følge regjeringen i disse ungdomsorganisasjonene

absolutt!

La oss derfor innrømme at Høyre denne gangen har rett, selv vi som

arbeidsplasser er en ekstrasagvanset selv oljerike Norge ikke har råd til. Ba-

nok til å betale de 260 arbeidernes full lønn i en overgangperiode til andre

tid på å mer lige på uduks kom 900.00 over 1990, sitet tillegg kuter ikke smelt (Nors som l kan !

Dagbladets kronikk 24. november 1981

Dag Poleszynski:

## Nedlegg DNN Aluminium

har Høyre så langt ned i vrangstrupen som komme kan. Selv kan jeg nemlig se

re rentene av dette beløpet ville kastet av seg 192 millioner i året (12% rente) el-

arbeidsplasser var funnet, eller la oss si til å gi 3600 sysselsatte i diverse ut-



## Full beredskap for Tyssedal

Retter finansdebatten i Stortinget synes det klart at Høyre-regjeringen ikke har svar på å oppgi fleirtal for å stryke dei påtenkte 100 mill. kr. til akrylhospital for DNN. Det er viktig å få skilt fast at det er den skarpe reaksjonen fra lokal-samfunnet, spesielt den kraftfulle akryl-sjonadagen 4. november, som har påført deltagere vart runnen i Tyssedal — ikke på Stortinget!

Av NILS MOLDØEN

Slaget ikke

Mer  
enda  
hva  
vun  
nne  
pen



«Leve Tyssedal» ropte DNN-arbeiderne og applauderte appellen fra fagforeningsmedarbeider Vidar Våde under demonstrasjonen i november.

## DNN - eller de store mot de små

AV VIDAR VADE, TYSSedal

kanskje ikke alle er klar over at den norske... Torstein Dahle, som etter vår mening klart viser hvorfor

Høyre må avvises.

A.K.P. (M-L) ODDA OG TYSSedal

★ KLASSEKAMPEN Fredag 22. januar 1982, nr. 18

Industriministeren sitter på tre hemmelige alternativer til nytt aluminiumsverk i Tyssedal. I pressen kjører regjeringen ut at det andre mot nytt aluminiumsverk. Svært

## DNN bør fortsette med aluminium

AV IVAR GJELLESVIK

Professor Terje Hansen har svart klart, og det er nei. Fantasileis industripolitikk, og dessuten en tragedie for Odda kommune, sier han. Professor Hansen har regnet ut at kraften fra A/S Tyssedal, ca 850 GWh (850 mill. kWh) kan selges til statskraftverkene for 50 mill. kroner, og er generøs nok å tilby Odda/Tyssedal halvparten. Disse 25 mill. kroner skal etter hans regnestykke brukes til å opprette subsidierte arbeidsplasser i Odda kommune.

## Professoren og Tyssedal-saka

AV NILS MOLDØEN, SEKRETÆR I ODDA OG OMLAND FAGLIGE SAMORGANISASJON

19.11.81

Høyre-regjeringen har fått godt selskap i sitt korstog mot Tyssedal og DNN Aluminium. Økonomar og industriherrar legg for dagen eit voldsomt engasjement for å over-

opplevd at staten på tallause har prøvd å få ført krafta ut striktet, har følt på kroppen manglande realisme i Hanses forslag. Vi er fullstendig klå

### Kampen i media

Folk både i og utanfor fagforeninga forstod tidleg at det var viktig å koma ut i pressa for å tilbakevisa løgner og andre påstander som departementet fekk pressa fram. Ein del skreiv innlegg sjølve, fekk andre til å uttala seg for Tyssedal.

Fagforeninga fekk gjort svært lite med slikt, sjølv om det blei fremma forslag om å gi ut landsomfattande løpeseddel. Ein sette rett nok ned eit informasjonsutval, utan at nokon har sett resultat etter det.

Ved juletider, etter at bedriftsleinga gav tidlegare sekretær i avd. 44 lov til å skriva i arbeidstida, kom det ut ei informasjonsbrosjyre om gangen i saka. Brosjyra var forsåvidt grei, men hadde ikkje med noko om kva planar og krav fagforeninga hadde og ingenting om oppmoding til støttearbeid.

### Elektrokjemisk Arbeiderforening

Avd. 44 av NKIF, Tyssedal

#### DNN SAKEN

På grunn av at Regjeringen Willoch vil stoppe moderniseringen av DNN Aluminium A/S i Tyssedal — og påstander i massemedia og fra enkelte politikere om at lokalsamfunnet Tyssedal har vært lite samarbeidsvillig, til alternativ løsning av DNN saken ser vi det nødvendig å komme med denne redegjørelse.

#### HISTORIKK

DNN Aluminium A/S har drevet aluminiumsproduksjon i Tyssedal siden 1916.

Selskapet ble startet i 1912 under navnet Det Norske Nitridaktieselskap (DNN) med aluminiumfabrikk i Eydehavn 1914 og Tyssedal som ble startet opp i 1916. Selskapet var frem til 1947 landets største aluminium produsent men utviklet seg senere til å ha landets minste og desidert mest umoderne aluminiums fabrikk.

### «Venta og sjå»

Som nemnd ovanfor, hadde spørsmålet om permitteringar skapt mykje frustrasjon og resignasjon hjå tyssedølene som hadde opplevd gløden i 4. november-streiken.

Når media i same tidsrommet flaut over av løgner som fagforeninga ikkje makta tilbakevisa, eller i det heile hadde linjer for å møte offensiven, gjorde ikkje det saka betre. Fagforeningsleinga hadde lagt ned kampen mot permitteringane, brot på



HA 1.2.82

Tyssedal:

# Resignasjonen har meldt seg

## Kombinasjon — videreføring/kraftsalg?

AV JAN GRAVDAL

— Dukker det opp en stortingsproposisjon som inneholder forslag til videre utredninger om alternativ industri i Tyssedal, vil det neppe bli hverken forstått eller godtatt i samfunnet her inne. Frustrasjonen er til å ta og føle på blant arbeidstakerne, i dag har de jo ingen bedrift å arbeide i i det hele tatt.

Stanses aluminiumsprosjektet for å erstattes med nye utredninger, er jeg redd resignasjonen vil melde seg for fullt. De ansatte ved DNN har vært

utrolig tålmodige, nå kan det ikke skjules at resignasjonen har meldt seg.

Ingen har fulgt Tyssedalsaken nærmere enn John Andersson, mange årig fagforeningsformann ved DNN, medlem av Tyssedalsutvalget og nåværende verneombud ved bedriften.

— Vi er nødt å få en samtale med industridepartementets ledelse snarest, det er en rekke spørsmål som krever svar, ikke bare spørsmålet om hva man tar sikte på å få i gang her inne. Personlig må jeg innrømme at jeg har liten tro på at stortingsproposisjonen vil inneholde noe konkret alternativ. Skulle den gjøre det, er det klart at vi må stille oss åpne. Da må vi gå tilbake til utgangspunktet vi hadde i 1974, den gang var det jo full enighet om at det var alternativ industri man burde satse på. Det er bare så vanskelig å fatte at den nåværende regjering skal ha klart det tidligere regjeringer ikke klarte på flere år.

400 millioner

— Uttalelsene fra departementets ledelse er forvirrende.

Statsråden sier noe, statsekretæren nærmest det motsatte. Begge sier at Årdal og Sunddal Verk er inne i bildet. Det siste har jeg vanskelig for å forstå, iverfall om man mener ÅSV skal gå inn i et selskap i Tyssedal som skal investere i en ny fabrikk. Allerede i utgangspunktet vet man at det vil være nødvendig med en investering på 400 millioner kroner. Selskapet skal kjøpe ut rettighetene til kraften som for seks år siden ble betalt 175 millioner kroner for og det er nødvendig å kjøpe ut aksjekapitalen på 215 millioner kroner. Det under meg stort at ÅSV skal gå inn i et slikt forhold. Selskapet vil iverfall ikke kunne gjøre det uten å få store vansker med sine arbeidstakere der selskapet allerede er etablert, sier John Andersson.

Salg av kraft

Industridepartementet er «tett» når det gjelder Tyssedal. Man vet ikke hva man «samtaler» om. Men det er nærliggende å tro at det kan komme på tale å etablere et selskap hvor den viktigste ingrediensen blir salg av kraft. Med et slikt produkt skulle det være mulig å komme fram til overskudd på driften, nær sagt hva man måtte tape på et eventuelt videreføringprodukt.

John Andersson kommenterer dette ved å stille seg tvilende om storsamfunnet vil godta en slik løsning.

Lokalpolitikere og arbeidstakernes tillitsmenn går i allefall en vanskelig tid i møte. Ikke bare må de arbeide med å få til en best mulig løsning i Tyssedal, de må også stadig forsvare seg mot synspunkter som bygger på fullstendig gale premisser, og de må forsvare seg fordi de gjør noe så ufint overfor de tallefere i hovedstaden at de kjemper for eksistensgrunnlaget i et svakt distrikt.

ansienitetsprinsippet og kampen om opinionen. Truleg hadde dei svært få idear om korleis ein slik kamp skulle først, og svært lita tiltru til at det hadde noko for seg.

Hovudgjermålet denne vinteren var å venta og sjå, venta på den nye proposisjonen. Samstundes stod både tidlegare og noverande fagforeningsformann fram i avisintervju i lokalpressa under overskrifter som «Resignasjonen har meldt seg» o.l. Alle lesarane måtte få inntrykk av at no var kampen slutt i Tyssedal, no hadde ein gitt opp.

Ikkje eit ord om kampen, ikkje eit ord om førebuing til den avgjerande styrkeprøven som dei alt då måtte vita ville koma med Regjeringa.

Vår påstand er at dei første som gløymde erfaringane frå 4. november og dei første som resignasjonen slo ned i, var dei som var valde til leiarar for kampen.

### Tyssedal som prøvestein

På eit møte i Bergen 4. februar kallar formann i Høyre, Jo Benkow, Tyssedal for ein prøvestein på om industripolitikken skal kunna omsettast i praktisk politikk.

Ein månad tidlegare, 5. januar 1982, sette Høyre-regjeringa ned eit utval, det såkalla Buvik-utvalet, som etter eigne ord har sett på «problemer og muligheter på ensidige industristadane». Utvalet fekk følgjande mandat frå regjeringa Willoch:

1. Klarleggja dei problema som næringslivet på dei ensidige industristadane har som følge av endringane i deira økonomiske føresetnader — og klarleggja kva for strukturelle verknader dette kan få. M.a.o. greia ut korleis krisa i den kapitalistiske økonomien vil slå ut for industrien på dei ensidige industristadane.

2. Vurdera tiltak som tek sikte på å omstilla produksjonen i hjørnesteinsbedriftene.

3. Vurdera fleire utviklingsstrate-

giar for dei ensidige industristadane, m.a.:

— innføring av alternative arbeidsplassar

— omlegging av eksisterande produksjon

— planlagt reduksjon i bemaninga — samanknytning med ein større regionalt arbeidsmarknad.

4. Utvalet skulle vurdera om ein kan tilpassa dei verkemidlane ein nyttar i dag betre til problema på dei ensidige industristadane, og leggja fram konkrete forslag til endringar.

Utvalet skulle også utgreia kva for økonomiske og administrative konsekvensar desse forslaga ville få. Ein klar føresetnad frå regjeringa si side



*Jeg ser mørkt på mulighetene for å oppnå noe i industripolitikken dersom det ikke blir flertall for et mer fornuftig og nøkternt Tyssedal-prosjekt enn hva den forrige regjering la opp til, sa Jo Benkow i Bergen.*

# — Tyssedal en prøvestein

— Tyssedal-saken vil bli en prøvestein på om partiene nå er i stand til å omsette i praktisk politikk den kursendring i industripolitikken alle sier de er enige i. Jeg vil se mørkt på mulighetene for å oppnå noe i industripolitikken dersom det ikke blir flertall for et mer fornuftig og nøkternt Tyssedal-prosjekt enn hva den forrige regjering la opp til. Dette sa Høyres formann og parlamentariske leder, Jo Benkow, på et møte i Bergen igår.



ging av nytt aluminiumsverk i Tyssedal.

Vi har hatt som linja sidan starten på denne saka, at skulle ein vinna fram måtte folk sjølve ta aktivt del i kampen. Å senda toptillitsmenn og politikarar i delegasjonar og forhandlingar var inga hjelp i utan at dei hadde folk i ryggen som var mobilisert til kamp og aksjonar.

Partiarbeidet har vore prega av sama haldninga. Her er det kollektivet som gjennom diskusjon har utvikla både analyse og taktikk. Vedtak er blitt fatta etter at vi har prøvd standpunktta gjennom undersøkingar og diskusjonar med arbeidskameratar og naboar. Vi har prøvd å få fatt i synspunkta til flest råd og nytta oss av desse når partiet sine taktiske linjer skulle utformast. Dette har gjort at våre medlemmer bokstaveleg tala har representert den vanlege tyssedøl sine interesser m.a. i motsetning til fagforeningsleiinga. Enkeltmedlemmer som har stått fram på møter og i media, er regelrett produkt av mange, lange møter og diskusjonar i partilaget. Dette kollektive ansvaret for saka innad, har også vore ein stor styrke på den måten at det har vore råd å setta politikken ut i livet i eit breidt spekter. Når linja har vore klar, har ein så kunna tilpassa dette fagforening, Samorg, kommunestyre, skriving, trykking og spreining av løpesetlar, avisinnlegg osv. osv.

I år etter år fremma våre medlemmer forslag om aksjonar og streikar i

alle trulege og utrulege variantar. Og år etter år blei vi nedstemt. Vi blei forsøkt latterleggjort og vi blei utskjelt, men vi held fram med å agiterte for kamplinja fordi vi er og var klar over at det er einaste måten ein kan opppnå resultater på. Og dessutan var det jo slik at tyssedølene, og ikkje minst arbeidarane på Nitriden, hadde vore meir enn villige til å gå til aksjonar dersom den valde fagforeningsleiinga hadde gitt dei lov til det.

AKP(m-l) i Odda og Tyssedal har vore svært bevisst at ein har vore med i ei landsomfattande rørsle, og har drege nytte av det. Ved sida av våre egne løpetlar som ofte har vore på plass med siste nytt lenge før fagforening eller Hardanger Folkeblad har vore i stand til å informera (og dessuten gitt til kjenne vårt syn og våre forslag til kva som bør gjerast), har vi gjort flittig bruk av Klassekampen. Klassekampen har følgd denne saka sidan 1973 og er den riksavisa som utan samanlikning har skrive mest og best om Tyssedal.

Det lokale partilaget har fleire gonger har besøk av formann og sekretær i Fagleg Utval, noko som har styrka det lokale arbeidet vårt, men også har gjort sitt til at vi har kunna mobilisert partikameratar over heile landet til støttearbeid for Tyssedal. Det er eit faktum at mykje av solidaritetsarbeidet for Tyssedal kjem som resultat av enkeltkameratar sin innsats rundt om i fagforeningar over heile landet.

var at: «Det ikke er rom for tiltak som samlet medfører vesentlig belastning på de offentlige budsjetter.»

M.a.o. utgangspunktet for dei forslaga til omstilling av industrien i over 100 einsidige industrisamfunn, er at staten ikkje skal ha økonmiske utlegg og forpliktelsar av noko særleg omfang. Børene, ulempene av ei eventuell omstilling skal i all hovudsak berast av industrien og befolkninga på dei einsidige industristadene.

Buvik-utvalet si innstilling, som blei lagt fram 9. mars 1983, er på sentralt LO-hald karakterisert som eit «rent bestillingsverk fra H-regjeringen». Det kan ein sjølvsagt hevda om alle statlege utvalsinnstillingar. Men det som verkeleg er interessant er at innstillinga representerer borgarskapet sin hovudstrategi for å tilpassa industrien på dei einsidige industristadane til det som alltid er borgarskapet si hovudmålsetting: Sikra maksimal profitt av investert kapital. Ei politisk distansering på hovudmålsettinga har LO-leiinga vakta seg vel for å koma med til no (juni 1983) — tvert om har LO-sekretær Jan Balstad vore med i utvalet og med på utvalet sine viktigaste konklusjonar.

Slik sett er det opplagt at Benkow har rett i at Tyssedal er ein prøvestein. Men ikkje berre for borgarskapet. Tyssedal er ein prøvestein også for den norske arbeidarklassen, for fagrørsla i Norge — ein prøvestein på om kampevnen og solidariteten er så fasttømra at det er råd å ta opp kampen mot borgarskapet og vinna den langvarige striden om Tyssedal.

### Kva skjedde på møta i AKP(m-l)?

AKP(m-l) stod i mange år på kravet om at alle 400 arbeidsplassane måtte sikrast i ny industri og at krafta skulle nyttast i Tyssedal som garanti for framtidige arbeidsplassar. I 1977/78 forstod vi at einaste måten ein kunne få innfridd desse krava var ved byg-



Formennene i dei tre kjemiske fagforeningane i Odda drøfta Buvikutvalet si innstilling. F.v. Hans Sekse, avd. 61, Olaf Albertsen, avd. 44, og Arne Meland, avd. 5.

(Foto: Lars M. Hjorthol)



19. februar 1982 la Regjeringa fram den nye proposisjonen for Stortinget.

20. februar er AKP(m-l) på gata med følgjande løpeseddel som vi prentar i sin helskap.

## 19. februar 1982: Ilmenitt-proposisjon

### Høgre har gått for langt! Tyssedals-saka kan **VINNAST!**

Går Stortinget bort frå det samrøystes vedtaket om aluminium til fordel for det prosjektet regjeringa Willoch la fram på fredag, kan alle slutta å fortelje tyssedolene om "demokratiet" i Norge. Då bør alle kunna slå fast at borgarskapet herskar fullt ut i landet, og at arbeidarforakten rår i Stortinget.

#### 250 FÆRRE ARBEIDSPlassAR

Hovudsaka er sjølvsagt at "tilbodet" endar opp med ca. 150 arbeidsplassar. Dette betyr at nærare 200 arbeidarar og nesten like mange familiar vert tvangsflytta eller må gå arbeidslause på trygd frå ein gong ut på vårparten. Dette vil sjølvsagt få katastrofale verknader både for dei einskilde og heile regionen!

150 arbeidsplassar er 250 færre enn regjeringa garanterte for i 1974, og som Willoch sjølv har sagt står fast. Det er 110 færre arbeidsplassar enn aluminiumsalternativet. Til sist må vi merke oss at ikkje ein gong desse 150 er garantert av regjeringa!

Det andre er at ytterlegare 600 Gwh skal førest ut av kommunen. Dermed sikrar staten (og Elkem?) seg råderetten over krafta - sjølv grunnlaget for busettinga i Tyssedal.

#### ILMENITTALTERNATIVET DYRARE ENN ALUMINIUM

Regjeringa har sjølv gitt prøv på at aluminium er det beste alternativet for Tyssedal! Sjølv proposisjonen er prega av at panikken har rådd i industridepartementet siste vekene. Reine bløffen er det når dei seier det vil koste 440 mill. I denne summen har dei ikkje rekna med dei investeringane som alt er gjort i Tyssedal, inga prisstiging, ingen renteutgifter i byggeperioden. I tillegg kjem utgifter til div. bygg, losse- og lasteutstyr, opplæring o.l. Etter våre utrekningar vil totalsummen for ilmenittverket bli på over ein milliard. Dette betyr at prisen pr. arbeidsplass vil bli omlag 1 mill. meir enn ved modernisering av aluminiumsverket!



(Foto: Leif Gabrielsen)

Proposisjonen blei grundig gjennomgått av avd. 44, ordførar, distriktsarbeidssjefen m.fl. og plukka sund i tråd med løpeseddelen frå AKP.

### Diplomati i Stortinget — eller aksjonar i Tyssedal?

På styre- og tillitsmannsmøte i avd. 44 måndag 22. febr. kom det sjølv-sagt opp diskusjonar om korleis fagforeninga skulle møte dette angrepet.

*Formannen* tok så opp spørsmålet, hva kan vi gjøre nå?

...

*Fedje:* Skal vi klare og nå fram, må vi ta kontakt med mellompartiene. Vi må spille på disse, sa han.

*Lund* så lysere på situasjonen nå — kan ikke skjønne at noen kan gå inn for dette alternativet.

*Sandal* mente at dette er skremmende, hva også som angår påstanden om arbeidsmarkedet i Tyssedal.

*Gravdal* mente at dette er en hestehandel og mente at det er arbeidsplassene som er viktigst.

*Moldøen* mente vi kan invitere Ind.komiteen til Tyssedal. Vi bør også ha demonstrasjoner i Tyssedal og Odda. Vi må stoppe opp i arbeidet og forlange avklaring hvor politikerne står. Aluminiumsarbeiderne kan gå til streik og vi kan kreve av Kjemisk og LO at vi får bidrag. Han mente at den fortvilelse og forbannelse må gå til handling.

*Jondal* mente at Moldøen har overdreven tro på aksjoner, det må nok andre ting til for å overtale mellompartiene.

...



Vi vil reise ei rad spørsmålsteikn til fleire saker i proposisjonen, t.d. teknologien, marknaden for råjern m.m. Men det viktigaste er å få fram sanninga om at regjeringa ikkje har makta å leggja fram eit prosjekt som kan konkurrere med aluminiumsalternativet på noko felt. Dei er derfor nødt til å ty til løgner og juks, verte aluminiumsprosjektet mest mogeleg og rosemåle ilmenittalternativet - i von om å få fleirtal for nedlegging av Tyssedal i Stortinget.

#### TYSSEDALS - SAKA EIN PRØVESTEIN

Etter å ha studert proposisjonen, vil vi i AKP(m-l) slå fast at Tyssedals-saka kan vinnast !

Proposisjonen er så elendig at om distriktet står samla og ikkje nøler med å reise kampen, kan vi tvinge mellompertia til å stå på aluminiumsvedtaket. Tyssedal har blitt ein prøvestein i storkapitalen sitt angrep på industrien i Distrikts-Noreg. Døme som Tysfjord, Stord og Verdal syner at det er sterke krefter vi kjemper mot. Derfor er det nødvendig å smi einskapen både lokalt og mellom oss og dei andre som er ramma no, - og dei som står for tur i neste omgang.

Nå er saka klar: Anten aluminium eller ilmenitt. Alt preik frå mellompertia om industriutleigebygg og tilleggsarbeidsplassar og nye utgreiingar må på det sterkaste avvisast. Det industribygg både i Eidfjord og Rørdal som trengst fyllast. Dette må Stortinget få grei beskjed om.

#### INGENTING A TAPE - ALT A VINNE

Mellompertia har ingen skruplar med å hoppe over på Høgre sitt standpunkt. Men dei er politisk på defensiven og treng stemmer i distrikta. Derfor har vi sjansar om å presse dei.

Når no alternativa står klare, er det styrken på den komande kampen som avgjer. Tyssedalene, spesielt dei tilsette ved DNN og deira familiar, står med ryggen mot vegg. Dei har ingenting å tapa - men alt å vinna. Distriktet har plikt på seg til å følgja opp årsmøtevedtaket i avd. 44 om å "STÅ PÅ ALUMINIUMSVEDTAKET, AVVIS ALL SPLITTELSE - SLÅ RING OM TYSSEDAL - EIN PRØVESTEIN FOR DISTRIKTS-NORGE." Dette må også vere eit krav til Norsk Kjemisk og Landsorganisasjonen om støtte i handling. Aluminiumsarbeidarane står klar til å gå ut i aksjonar - det same har NOPEF sagt.

#### 4. NOVEMBER VISER VEG

Aksjonsdagen 4. november i fjor viser veg for distriktet, men truleg er ikkje dette nok i dagens situasjon. At fagforeningane no tek til å diskutere full stopp, at kommunestyret/formannskapet vurderer å leggja ned verva sine, ser vi som både nødvendige og naturlege diskusjonar i dagane som kjem.

Om det er Høgre-regjeringa eller Indre-Hardanger som skal vinne denne kampen, er no først og fremst avhengig av distriktet sin vilje til å nytte dei kampmiddel ein rår over, og at alle står solidarisk med Tyssedal.

AKP (m-l) i  
Odda og Tyssedal

Det kom fram synspunkt om spontan aksjon umiddelbart etter møtet og ut dagen — som ein første reaksjon. Sidan kunne ein nytta dei nærmaste dagane til å førebu større aksjonar frå veka etterpå. I debatten var det ingen som støtta desse tankane — likevel var det klart at det ville koma opp konkrete forslag til aksjonar på medlemsmøtet torsdag kveld.

Argumenta som blei nytta mot aksjonar var av typen «ikkje aksjonar for aksjonen si skuld», «det er ikkje på det planet saka er nå», «vi må følgja den linja vi har følggt — ingen sidestepp nå» osv.

Det blei vedteke å senda tre representantar til Oslo og Stortinget på onsdag for å øva press på Industrikomiteen — spesielt på representantane frå Kr.f. og Sp. Utgiftene til dette blei betalt av DNN — noko dei også har gjort ved alle andre delegasjonsreiser fagforeninga har hatt i denne saka.

Onsdag kveld blei det ein til dels kjensleladd debatt om kva verkemidlar ein burde nytta seg av. Dette var på eit fellesstyremøte for dei tre kjemiske fagforeningane i Odda.



(Foto: O. Buenget)

Bønestund saman med Bondevik? Ingeleif Iversen, Alnor, Helge Fedje og Olaf Albertsen, avd. 44, driv korridorpolitikk i Stortinget.



## Avd. 44 i ferd med å bli isolert...

Sjølvs om tillitsmennene ved Norzink og Odda Smelteverk respekterte at det var avd. 44 som sjølve måtte gjerast i saka, var det gjennom debatten tydeleg at tillitsmennene i avd. 44 var i ferd med å bli isolert i tillitsmannsskiktet i Odda på spørsmål om kamp, samarbeid, diplomati.

**Protokoll — fellesstyremøte for avd. 5, 44, 61 av NKIF, 24.2.1982 kl. 1830.**

2. Albertsen orienterte om innhaldet i Regjeringa sin nye proposisjon om Tyssedal-saka. Han refererte innhaldet i styre- og tillitsmannsutvalget sitt vedtak 22.2. som aviser proposisjonen...

Formannen gav så ordet fritt.

N. Moldøen oppfordra til fri debatt om hva som skal til for å vinna saka. Han kritiserte at formannen no gjeikk ut i pressa og avviste aksjonar. Han meinte det var heilt rett å leggja stor vekt på informasjon om prosjekta og å senda folk til Stortinget, men hadde ingen tru på seier utan aksjonar som helst burde gå langt utover Odda sine grenser. Avd. 44 må gå i spissen for at både Kjemisk og LO følgjer opp.

Sleire meinte også at ein måtte gå hardt ut og stilte spørsmål om ikkje skattestreik kunne vera eit velegna middel.

Sekse støtta opplegget med å avsløra proposisjonen, men minna om kva for motkrefter vi hadde i denne saka. Det må hardt skyts til for å vinna, og det blir ingan aksjoner utan at avd. 44 går først ut. Han meinte at aksjonar må til før Industrikomiteen tek standpunkt, og la til at avd. 44 ville få full støtte frå fagforeningane når dei sette i gang.

Rolland støtta Moldøen på spørsmålet om aksjonar. Han meinte ein måtte kjempa på to frontar der den viktigaste var i Stortinget. Ein er nøydd til å pressa LO i saka.

## Klar til å bruke alle kampmidler

— Vi er klar til å ta alle midler i bruk, sa klubbformann Olav Albertsen i sin korte appell under streikemøtet i Odda sentrum.

Albertsen tviler på at denpe korte streiken vil makte å rokke ved den politiske kursen som nå ser ut til å knuse hele landet, som han uttrykte det. — Sterke ord, men slik ser det ut nå, sa han.

Klubbformannen rettet samtidig en varm takk til alle som var møtt fram også i Odda.



Klubbformann Olav Albertsen under streikemøtet i Odda.

Albertsen avviste ikkje tanken på aksjonar, men dei måtte koma den dagen det er klart at me ikkje får støtte i Stortinget.

Lund understreka at heller ikkje han var mot aksjonar, men det var tidspunktet det var usemje om.

Jacobsen meinte at forbundet og LO måtte koma på plassen, om nødvendig ta del i aksjonsleiinga, men ta ut meir velegna foreningar enn dei elektrokjemiske ut i aksjon. Han trudde ikkje Al.arb. Samarb. kom.

ville vera dei første til å gå i aksjon for Tyssedal.

Moldøen meinte ein no var samde om at aksjonar måtte til og etterlyste argumenter for å venta til etter industrikomiteen hadde teke standpunkt.»

Alle som hadde ordet frå avd. 5 og 61 meinte det måtte vera rett å trå til med aksjonar raskt — medan formannen i avd. 44 modererte stand-



Fagforeningen i Tyssedal:

## — Vi har ikke råd til å godta dette

Fagforeningstillitsmenn i Tyssedal går hardt og utvetydig imot titanprosjektet som er lansert.

Og det er knapt noen tvil om at medlemmene kommer til å gjøre det samme. Haugesunds Avis har snakket med en rekke av dem i går, ingen godtar en løsning som vil gi 150 arbeidsplasser.

Fagforeningens formann, Olaf Albertsen, sier: — På sett og vis er proposisjonen laget slik at det gjør det nokså enkelt for oss. Det er umulig å godta en løsning som gir oss 150 arbeidsplasser. Hadde det dreid seg om noe som ligger i nærheten av den sysselsettingen vi er forespeilet i aluminiumsprosjektet (260 arbeidsplasser i Tyssedal og 40 på Sunndalsøra) ville saken stilt seg annerledes. Vi går ikke imot titanprosjektet som sådant, vi kjenner det ikke. At det helt klart synes å bygge på feilaktige eller manglende investeringstall er forøvrigt

betenkelig, men dette akter vi å få full klarhet i med det aller første. Det viktigste er at prosjektet ikke gir oss de arbeidsplassene vi har fått garanti for. Man skal huske at det var snaut 400 arbeidsplasser vi i sin tid fikk garanti for. Vi godtok

imidlertid aluminiumsprosjektet selv om det ga 260 arbeidsplasser — 140 færre. Lenger går vi ikke i denne saken. Derfor kommer vi aldri til å bifalle titanprosjektet slik det foreligger nå, sier Olaf Albertsen.

Albertsen er ellers skeptisk til at titanprosjektet er et pilotprosjekt.

— Det gjør prosjektet atskillig mer usikkert, sier han.

Fagforeningen akter ellers å holde Tyssedalsaken varm i samarbeidsutvalget for aluminiumsbransjen. Alt i begynnelsen av mars vil saken bli behandlet der. Men før den tid vil fagforeningen invitere en rekke sentrale personer til et åpent møte i Tyssedal. Invitasjonen kommer blant annet til å gå ut til både industriminister Jens Halvard Bratz, statssekretær Arnulf Ingebrigtsen, formannen i industrikomiteen i Stortinget, Reidar Due, og stortingsrepresentantene Aksel Fossen og Asbjørn Haugstvedt.

— Og vi vil fortsette å saumfare proposisjonen. Aksjoner er imidlertid ikke aktuelt. Det er ikke på et slikt nivå denne saken befinner seg nå.

pga. at dei visste at det ville bli fremma forslag om aksjonar, men at det ville verta ein hard og ubehageleg kamp for å få det vedteke. Dessutan såg det ikkje særleg lyst ut for kampen om det skulle vera ei splitta fagforening som gjorde vedtak om aksjonar.

Møtet fordømte Høgre-regjeringa sin proposisjon samrøystes. Den skarpe debatten kom sjølvstøtt på spørsmålet om korleis prproposisjonen skulle møtast: Aksjonar eller «venta og sjå».

Forslaga til vedtak som stod opp mot einannan var Nils Moldøen sitt forslag:

«1. Avd. 44 krev umiddelbart garantiar frå Stortings-gruppene som viser kvalifisert fleirtal i Stortinget for aluminiumsprosjektet. For å understreka dei dramatiske konsekvensane ilmenitt-prosjektet har for Tyssedal, ser me oss tvungen til å gå til dagleg 2-timars streik i Tyssedal frå måndag 1. mars kl. 12.30.

Om det etter ei veke ikkje er komen svar, er me innstilt på å trappa opp til full streik.

2. Vi ber om full støtte — politisk og økonomisk — frå heile landet. Særskild ber vi fagforeningane i Odda og Tyssedal og Odda og Omland faglege Samorganisasjon om å støtta kampen for Tyssedal.

3. Regjeringa har sjølv gjort Tyssedalsaka til prøvestin for industripolitikken som går ut på sanering av all indstri som ikkje oppnår maksimalprofitt.

Vi krev at Norsk Kjemisk og LO reiser kampen mot denne distrikts- og arbeidarfiendtlege politikken, stør oss økonomisk og sjølv tek ut eigna foreningar i aksjon for Tyssedal.»

Opp mot dette sto forslaget frå Olaf Albertsen:

«Medlemsmøtet gir styre- og tillitsmannsutvalget fullmakt til å vurdere situasjonen framover, slik at nødvendige tiltak kan settes i verk på kort varsel.»

punkta han hadde gått ut med i prssa ved å seia at han ikkje var mot aksjonar, men at tidspunktet ikkje var inne før ein hadde fått klare signal i frå Industrikomiteen om at dei ville gå imot aluminiumsplanane.

Med erfaringane frå 4. november i friskt minne er det eit faktum at mange medlemmer av avd. 44 hadde venta at tillitsmannsutvalet hadde gått i spissen for nye aksjonar no. Svært mange var forvirra og spørjande etter at rykta begynte å gå om at

tida enno ikkje var inne.

Medlemsmøtet på torsdag 25.2. hadde dårleg frammøte, noko som sikkert overraska alle. Ein grunn er i alle fall at det gjennom oppslag i avisene var kome fram at det hadde liten meining å møte opp. Formannen hadde jo gått ut i pressa og sagt det ikkje blei aksjonar, informasjon om saka hadde kome ut både i pressa og i løpesetlar, så for mange medlemmer hadde det ikkje meining å møta fram. Andre møtte truleg ikkje fram



Albertsen sitt forslag vann med 23 mot 18 stemmer etter at eit forslag om å kalla inn til nytt møte med spørsmål om aksjonar/streik stod på dagsorden, blei avvist.

### Skjebnesvangert vedtak

Dette var etter vår meining eit av dei mest skjebnesvangre vedtak fagforeninga på Nitriden (avd. 44) nokon gong har gjort. Situasjonen var slik at Høgre-regjeringa hadde lav status pga. den talentlause og banale måten ilmenittverket var presentert på. Feilaktige kostnadskalkyler, bagatellisering av miljøproblema, usikker teknologi — ingenting i proposisjonen kunne gi tiltru til at ilmenittverket nokon gong ville bli bygd. I staden for å nytta dei kampfemidlane ein rådde over og *pressa mellompartia i den fasen før dei tok standpunkt*, valde fagforeninga å overlata arenaen til Industrikomiteen og let kampen stå der og i Stortingskorridorane der fagforeningsleiarane og Odda formannskap var flittige gjestar. I staden for å stola på at medlemmene og tyssedølene elles var i stand til å kjempa striden ut med staten, stoler ein på at partipolitikarane på Stortinget skal ordna opp.

Vi i AKP(m-l) meiner dette har noko av årsaka si i den ideologien som pregar den norske fagrørsla i all for stor grad, og som dominerer fullstendig i eit politisk parti som DNA og i stor grad også SV: Massane, befolkninga, medlemmene har vi ikkje bruk for i andre samanhengar enn når dei skal velja oss inn i kommunestyre, Storting eller fagforeningsstyre. «Gatas parlament» er noko skremmande, truande — det er vi, dei valde representantane, som må ordna opp fram til neste val (eller neste årsmøte). Når medlemmene ikkje møter fram på møter, kjem den moralske peikefingeren fram utan at leiarane ein einaste gong spør seg sjølve om det kan ha

noko med deira sine linjer og handlingar å gjera.

Sanninga er at så lenge dei same tillitsmennene får sine linjer igjenom, har det ingen betydning om folk møter fram — for tillitsmennene har aldri bruk for medlemmene, ser ikkje på medlemmene som noko kraft og har ingen linjer for at medlemmene skal stå fram som deler av ein kampvillig og kampdyktig arbeidarklasse.

### Samorg vil ha kamp!

I avd. 44 blei uttalelsen frå Samorgstyret teke opp til drøfting. Vi siterer frå protokollen:

*«Fedje syntes det var beklagelig at Samorg går ut med en sånn uttalelse. Den burde vært mer i samkjør med avd. 44. Laugen, Lund og Haugland beklaget og uttalelsen fra Samorg som de mente kunne skade mer enn gavne.»*

(Alle medlemmer av styret.)

#### STORTINGET MÅ STÅ PÅ ALUMINIUMSVEDTAKET!

Styret i Odda og Ømland faglige Samorganisasjon vil på det skarpaste avvise Høgre-regjeringa sin DNN-proposisjon som noko løysing på Tyssedal-saka. Dette er ein proposisjon for å føra krafta ut av kommunen, for nedbygging av distriktet og total avfolking av Tyssedal. Samstundes er han fullt ut i samsvar med storkapitalen og Høgre sitt mål om sanering av all industri som ikkje oppnår maksimal profitt.

DNN-arbeidarane og Høgre-regjeringa er samde om ei sak: Tyssedal-saka er ein prøvestein for industrien i Distrikts-Norge. Vi har merka oss Høgreformannen sine ord om at Tyssedal-saka er ei avgjerande prøve på om regjeringa skal kunna vinna gjennom med sine industripolitiske planer.

Mellompartia i Stortinget har nok også merka seg dette. Aviskommentarer dei siste dagane tyder på at dei er særst lite villige til å gi regjeringa det nederlaget ho har fortent. Diverre er det mykje som tyder på at Hordalandsrepresentantane i KR.f. og Sp. får lov å stemma med Tyssedal, medan resten sikrar fleirtal for regjeringa.

I denne situasjonen må distriktet ta kraftige verkemiddel i bruk for i det heile ha håp om å vinna kampen. Arbeidarane i Tyssedal og deira familiar som no står utan muligheter for anna arbeid, skal vita at heile fagrørsla i distriktet står klar til aktiv støtte og kamp.

Styret i samorganisasjonen vil reisa kravet ovanfor Norsk Kjemisk og Landsorganisasjonen om at dei tek i bruk dei midlar som er nødvendige for å vinna saka. Vi må no reisa spørsmålet om fagrørsla har forstått dimensjonane og konsekvensane av eit nederlag i Tyssedal-saka. No er det ikkje nok med forsikringar om at LO står kravet om aluminium — no trenns det kamp mot ein arbeidarfientleg høgre-politikk der Tyssedal berre er første post i løyra. Tyssedal krev at saka vert vunnen.



#### 4. DNN-saka

N. Moldøy orienterte styret om innhaldet i stortingsproposisjonen som regjeringa la fram 19.2. om Tysedal. Han orienterte også om dei diskusjonane og vedtaka som var gjort i fagforeninga, avd. 44.

Han saig mørkt på stoda og var skuffa over at avd. 44 ikkje syntest å villa gå ut i aksjonar no.

Med i debatten: O. Sød og B. Seim

Moldøy framma forslag til uttale om DNN-saka: Sjå neste side!

Etter ein debatt der alle tok del, samla styret seg samsvøst om framlegget.

«Moldøy mente at skjenn må tas i en annen hånd nå. DNN-saken må vinnes før sommeren og unngå nedleggelse av Tysedal og ville at medlemsmøte skulle gjøre vedtak om aksjoner nå.»

Forslaget falt mot 11 stemmer.

«Fedje mente at punkt 1 og 2 i Moldøens forslag har vi sagt klart fra om tidligere og satte tidligere medlemsmøtevedtak av 25.2 opp mot Moldøens forslag.

Haugland refererte tidligere medlemsmøtevedtak av 25.2 og mente at hvis man gikk inn for Moldøens forslag ville de være mistillit til styret.»

#### «Unngå at det koker over»

I Hardanger Folkeblad 19. mars får vi det svart på kvitt: Styret i avd. 44 ser det som si store oppgave «å holde

igjen» og «å unngå at det koker over».

Også på medlemsmøte 29. mars klarte fleirtallet i styret å halda lokket på plass over gryta...

## Ytterligere 170 kan bli permittert ved DNN i Tyssedal

### Albertsen: Hold sysselsettingen oppe ved kraftsalgmidler

Ytterligere 170 mann kan bli permittert ved DNN aluminium innen 14 dager. Dette er den ytterste konsekvens av den forsinkelse saken nå gjennomgår. Industrikomiteen vil legge fram sin innstilling 11. mai. I løpet av ytterligere to uker vil saken ventelig komme opp i Stortinget. I mellomtiden står omtrent hele Tyssedal arbeidsledige. Klubbformann Olaf Albertsen sier: – Jeg begynner å se dette mer og mer som en katastrofe. Men jeg skylder ikke på Industrikomiteen. Jeg har gjort komiteen opp-

merksom på at ytterligere permitteringer godtar vi ikke. Jeg tror aldri vi vil kunne gå med på det. I første omgang vil vi kreve at det blir brukt midler av kraftsalget for å holde sysselsettingen igang.

– Hva skjer om det blir ytterligere permitteringer?

– Da koker formelig Tyssedal over. Det er dem som ville ha gått til aksjoner langt tidligere. Men vi har klart å holde igjen. Det er helt klart at det skal ikke store oppfordringer fra styret i avd. 44 til før noe skjer.

Massiv enighet i Odda om DNN:

## Full tilslutning til RV-forslag i kommunestyret

«Odda aksepterer ikke nye permitteringer»

Så har det utrolige skjedd i Odda kommunestyre: Et forslag fra Kjell Folkvord (RV) har fått full tilslutning av de folkevalgte. Og det er til de grader en ny situasjon i et kommunestyre der det til tider synes å være topprioritert mål å avvise alt som måtte komme fra den ytterste, mørkerøde venstre-fløy.



## Ny løpeseddel frå AKP

Konsekvensen av vedtaka er sjølv-  
sagt at heile det lokalsamfunnet som  
var i aksjon 4. nov. ble demobilisert  
og dei som fekk problemer måtte ty  
til individuelle løysingar, gjera det  
«beste» ut av situasjonen for seg og  
sine — noko som er det naturlege  
motstykket til kollektive løysingar  
vunne fram av ein arbeidarklasse mo-  
bilisert for kamp.

Undringa og fortvilelsen over lei-  
inga i vd. 44 sine vurderingar av si-  
tuasjonen tok til å breia seg i lokal-  
samfunnet, ikkje minst blant dei til-  
litsvalde i dei andre fagforeningane i  
distriktet.

# Nødvendig med hardere tiltak i Tyssedalssaken —

Av Geir Nybo

—Det vil antakelig tvin-  
ge seg fram hardere tiltak  
i kampen for 260 arbeids-  
plasser for Tyssedal, sa  
formannen i Norsk Kje-  
misk Industriarbeiderfor-  
bund på møtet i Samar-  
beidsrådet for alu-  
miniumsindustrien som  
ble avviklet på Husnes  
onsdag og torsdag.

Fagforeningsformann  
Olaf Albertsen var ikke  
uenig i Støylens uttalelse,  
men presiserte at det ikke  
på noen måte vil bli snakk  
om forhastede reak-  
sjoner. —Vi følger hele  
tiden utviklingen nøye, og  
vurderer hvordan saken  
står. Derfor vil det ikke  
bli aktuelt å be om aksjon-  
er om vi ikke mener tiden  
er inne for et såvidt dras-

tisk hjelpemiddel i kamp-  
en for at Tyssedal skal få  
de 260 arbeidsplassene  
som er et minstekrav fra  
fagforeningens side.

Norzinks representant  
Olav Sæd, var mer drastisk i  
sine uttalelser. Han ville at  
Samarbeidsrådet skulle gjø-  
re bindende vedtak om at det  
nå må settes i gang aksjoner  
for å få gjennomslag for  
problemene i Tyssedal.  
Om Samarbeidsrådet kunne  
gjøre bindende vedtak om at  
fagforeningene forpliktet  
seg til aksjoner, ville dette  
etter hans syn være det enes-  
te rette. Av formannen i rå-  
det, Torleif Iversen, ble han  
imidertid gjort oppmerk-  
som på at rådet kun har an-  
ledning til å gi råd og uttalel-  
ser. Når det gjelder vedtak  
om aksjoner står den enkelte  
lokalavdeling helt fritt, og  
kan ikke bindes av vedtak el-  
ler uttalelser fra Samar-  
beidsrådet.

## NYE PERMITTERINGER - FAGFORENINGA FORSVINNER

DNN vil etter dette bare ha arbeid til 70 stk. Dermed ser vi hvor effektivt Høyre kan eli-  
minere kampkrafta i Tyssedal, ved å trenere aluminiumsverket gjennom langvarige utredninger  
foran stortingsbehandlingen. Samtidig setter de stopp for anbud på den nye fabrikk.  
Dette er et klart brudd på stortingsvedtaket om aluminium som fortsatt gjelder, og sjøl-  
vagt et bevisst brudd, for å legge alle hindringer i veien for al-verket. AT ARBEIDSFOLKA  
PÅ NITRIDEN BLIR OFRENE, bekymrer ikke Høyre.

Hvis permitteringene blir en realitet, vil mange folk søke seg vekk — noen for kortere tid,  
andre for godt. Resultatet blir at fagforeningen sakte men sikkert går i oppløsning.

## HVEM SKAL DA FØRE KAMPEN VIDERE FOR TYSSedal?

Passiviteten som har rådd i forhold til alternativet fra Høyre har bare vært til skade for  
folk i Tyssedal. Den har økt Høyres muligheter for å vinne. Med fortsatt passivitet, blir  
utfallet at også et evt. aluminiumsverk vil bli utsatt. Flere hundre vil bli permittert  
i lang tid, — minst 6 måneder. Og om vi vinner kampen for aluminium, hvem er da tilbake for  
å jobbe der?

## NÅ ELLER ALDRIG!

Nå har vi ikke tid til å "vente og se". Nå er det nødvendig å handle. På kort tid  
kan fagforeningen være eliminert og folk permittert. Det er Høyre som er ansvarlig for  
dette. Det er Høyre som trener saken, og det er Høyre som stopper anbudene. De må derfor  
behandles deretter. Vårt forslag er at fagforeningen har gå til aksjon under følgende krav:

- \* Ingen flere permitteringer. Regjeringen må garantere sysselsetting i  
Odda kommune med pengene fra kraftsalget.
- \* Anbudene på al-verket skal ut straks. Økonomiske omkostninger dekkes  
av staten. Respekter det lovlig fatta stortingsvedtaket!
- \* Hurtig behandling av proposisjonen.
- \* Krafta skal brukes i Tyssedal.
- \* Ingen illemtfabrikk.

En slik kamp vil få stor politisk støtte både i Odda og landet ellers. LO-ledelsen og for-  
bundsledelsen må vise full solidaritet, om nødvendig med aksjoner.

## Det er Tyssedals eksistens dette gjelder

# Full mobilisering for DNN aluminium i Tyssedal 1. mai

●Vi regner med like  
stor oppslutning i år  
som i 1974. Den gang  
hadde vi det største 1.  
mai arrangement i  
Tyssedal etter krigen.

●Det gjelder frem-  
deles samme saken:  
DNN Aluminium.

●Vi vil henstille til alle  
om å stille opp i hoved-  
toget under parolene:

●Oppretthold lovlig  
fattet Stortingsvedtak.  
Bygg ny aluminiumsfa-  
brikk nå.

●Ingen flere utsettel-  
ser i DNN-saken.

●Vi vil også oppfordre  
alle til å delta i demon-  
strasjonstoget i Odda  
under de samme paro-  
ler.

Derfor er det viktig å  
mobilisere hele folket  
til 1. mai demonstra-  
sjonen, sier Albertsen.  
—Vi regner med at hele  
Tyssedal er på beina  
slik at vi kan få den  
største demonstrasjon-  
en etter krigen, legger  
Bjørn Seim til.



# Den som vinn krafted -- vinn DNN-saka

H.F. 24/3-82

Gamle DNN er jamna med jorda. Det er snart slutt på sysselsettjening på bedrifta. Heile arbeidstokken har snart permisjonstruselen hangande over hovudet, mens ein ventar på at Stortinget skal bestemme seg. Berre denne uvisse burde ha vore nok til at Stortinget utan vidare uthaling vedtok aluminium. Men framtida for nokre hundre arbeidarfamiljar og eit mindre lokalsamfunn veg ikkje tungt nok, -- ikkje i høve til maksimal profitt.

Då avd. 44 i 1973 reiste kampen for framtida si, slo dei fast som sitt første punkt: «Kraften skal bli i Tyssedal som er garanti for framtida arbeidsplasser». På aksjonsdagen i fjor vart dette kravet på nytt spreidd over heile landet

slaget som vart vedtatt oversendt til formannskapet.

Men det var ein stor feil av kommunestyrefleiralet å gå imot RV's forslag om å stå på kravet om at krafted skulle nyttast i Tyssedal. Ved ikkje å stå beinhardt på dette kravet, vart det spela for mykje på regjeringa sine premisser. Det eine dusinet arbeidsplassar etter det andre kan bli plukka opp av hatten, heilt til kommunen vart avvaerna. I så fall er utgangen på Stortingshandsaminga avgjort.

Det er krafted som er målet for regjeringa. Ikkje ein gong dei sjølve trur på det dei seier om lønnsenda til ilmenittverket. Elkem har vurdert å starte den type produksjon som regjeringa tenker lagt til Tyssedal, men slo det frå seg.

stort flertal i kommunestyret. Kvifor på denne måten avstå frå å presse fram ei avklaring så raskt råd?

Stoda byrjar å bli fortvila for mange menneske. Stortinget er midt i arbeidet med regjeringsproposisjonen. Det byrjar å haste med innspurten. Vi har ikkje slått i 9 år for å tape på målstreken.

Viljen til å understreke lokale krav overfor Stortinget er til stades. Den må utnyttast. Dette vil igjen utløse den landsomfattande solidariteten som er uttrykt overfor Tyssedal. Aksjonar kan igjen bli tunga på vektskåla. Men desse må førebust for å kunna trappast opp. Vert det gjort?

Kjell Folkvord.

## Håp og tru -- eller kamp?

Delegasjonar i frå fagforening, formannskap og bedrift reiser på skift til Stortinget og Industrikomiteen, og den eine delegasjonen er meir sjarmert av Kr.f.-politikarar enn den andre. Dei velklede Odda-mennene kjem tilbake, er imponert over kvarandre, sin innsats i korridorane og stadig meir optimistiske. 24. mai kan så redaktør Madsen skriva på første-sida i Hardanger Folkeblad: «Nå er det større grunn til å tro at flertallet vil gå inn for aluminium.»

klubbformann Albertsen etter nye møter i Oslo:

«Jeg er mer optimist nå  
enn for 14 dager siden»

TYSSEDALSSAKA:

Ferrokrom-forhandlingene  
brøt sammen -- regjeringen  
har bare ilmenitt igjen! --

H.F. ØIVIND MADSEN

Når Industridepartementet nå har fremmet forslag om å reise et ilmenittverk i Tyssedal, så er årsaken den at forhandlingene om et ferrokromverk ganske enkelt ikke førte fram. I Industridepartementet får «Hardanger Folkeblad» opplyst at departementet hele tiden har arbeidet med begge prosjekter. Det blir også sagt at massemediene har feiltolket statssekretær Ingebrigtsen med hensyn til ferrokromverket. I Industridepartementet skal man heller ikke ha noe kjennskap til at området i Tyssedal er for lite for et ilmenitt-

verk. Videre blir det sagt at reisingen av et ferrokromverk kunne ha forsinket hele saksbehandlingen

Det er lite nytt i det forslag Industridepartementet la fram i statsråd fredag.

Et ilmenittverk i Tyssedal vil gi 177 arbeidsplasser. Det vil koste 1 milliard kroner. Kraftforbruket vil ligge på 283 GWh. Produksjonsanslaget for titan-slagg er økt til 200 000 tonn pr. år, og råjernproduksjonen er økt til 108 000 tonn.

Det er fremdeles meningen at Titania skal levere råstoffet og selge det ferdige produkt. Elkem skal stå for

markedsføringen av råjern, og skal også stå for prosjektering og bygging av det nyeverket. Staten, -- eller DNN, skal stå som eier.

Ilmenittverket vil være det første av sitt slag her i landet, og vil også representere en del ny teknologi.

I Industridepartementet blir det videre sagt, at Utviklingsselskapet for Vestlandet skal fortsette sitt arbeid med å finne fram til flere arbeidsplasser i Odda-regionen.

Det er grunn til å tro at Tyssedalssaken vil bli fremmet for Stortinget 7. juni. Nå er det og-



## Avd. 44 drøfter sluttfasen i Tyssedals- saken i kveld

I kveld klokka 1830 skal avd. 44 drøfte sluttfasen i DNN-saka på et medlemsmøte i Samfunnshuset i Tyssedal. Formannen i avd. 44, Olaf Albertsen, sier til Hardanger Folkeblad at det som bekymrer medlemmene er at regjeringens opplegg til løsning representerer alt for få arbeidsplasser. Med de tapte arbeidsplasser i Tyssedal, og med den rasjonalisering som er ventet ved de andre bedriftene i Odda, kan lokalsamfunnet komme til å tape 300 industriarbeidsplasser i løpet av få år. — Dette kan vi ikke akseptere, sier Albertsen.

Albertsen reiser til Oslo i morgen for å ha samtaler med medlemmer av Stortingets Industrikomite. Sammen med Albertsen reiser også foreningens nestformann, Helge Fedje. Norsk Kjemisk og Aluminiumsarbeidernes samarbeidskomite vil også være representert.

I går var ordfører Leiv Stensland i Oslo for å ha samtaler med medlemmer av Industrikomiteen.

Vi kommer tilbake med et intervju med Olaf Albertsen i fre-dagsavisa. 11.7.265.32

To dagar seinare er ein liten «ein-spaltar» å finna i Folkebladet om avd. 44 som skal drøfta sluttfasen i Tyssedal-saka.

Legg merke til at det einaste botemiddelet Albertsen og Stensland har å stilla opp med, er — ja, sjølv sagt — nye delegasjonsreiser til Industrikomiteen i Stortinget.

Vi skal la protokollane fra styremøtet og medlemsmøtet tala for seg, berre fortelja at styret i Tysso elektrikerforening, avd. 43, var med på siste del av styremøtet og saman med ei rekkje tillitsvalde i Odda-foreningane, også med på medlemsmøtet.

«Styremøte på kontoret 26/5 kl. 17.30.

Form. reiste så spørsmålet. Hva skal vi gjøre videre?

Moldøen foreslår at Albertsen/Fedje har krav med fra medlemsmøte til Oslo om at forbundet og LO stiller seg i spissen for en 2 timers politisk streik så fort som mulig og aktivt går ut i massemedia for aluminium. Dette var det full enighet om og at onsdag 2/6 foreslås.

Moldøen skisserte også opp andre aksjonsformer som kan tas i bruk. Blant annet kunne han tenke seg spontan aksjon torsdag 27/5 hvis ikke Kr.f. vil støtte aluminiumsprosjektet.

Styret i avd. 43, Tyssefaldene, møtte kl. 18.00 og blei orientert av Albertsen om hva styret i avd. 44 har lagt opp til.

Bjørn Seim redegjorde for hva avd. 43 kan bidra med som virkemiddel blant annet og slå ut levering til samkjøringen. Han lovet og avd. 44 full støtte.

Moldøen mente at hvis det viser seg at det ikke er støtte i Stortinget for aluminium må vi reagere med en gang.

Våde: Hvis avd. 44 går ut i full streik vil avd. 43 støtte fullt ut.

Albertsen mente at styret kan få fullmakt av medlemsmøte til å sette i gang aksjoner når det er nødvendig.

Moldøen mente at medlemsmøte må ta stilling til aksjoner i kveld.

På grunn av tidsnød var det enighet om at dette må stå åpent til medlemsmøte.

Møtet hevet kl. 18.30»



## Kvifor streik no?

Så kan ein sjølv sagt undra seg: Kvifor blei ein med på kamplinja no? Svaret er at linja som fleirtalet i avd. 44 sitt styre hadde vist seg å spela fallitt. «Å venta å sjå» var å sitja med hendene i fanget å sjå at dag for dag blei «mellompartia» knytt nærara samanh med Willoch. Vi har sterke grunnar for å tru at fagforeningsleiinga tok alvorleg skræmslene frå DNA- og Kr.f.-representantar på Stortinget om at *aksjonar i Tyssedal nå*, vil gjera det enno vanskelegare å få fleirtal i Stortinget for aluminium. Og i mellomtida fekk Bondevik & Co. høve til å vurdere detaljane i hestehandelen i fred og ro.

Men i alle fall: Streiken blei møtt med stor glede og entusiasme blant alle tyssedøler. Endeleg skulle vi få lov til å ta opp kampen mot dei som hadde plassert oss på pinebenken gjennom 9 år, mot dei som no ville ta frå oss levebrødet — ta frå oss heile lokalsamfunnet!!

# Tyssedalssaken

## nå tilspisset!

## Streik mulig idag!

Tyssedalssaken nærmer seg klimaks. Det arbeides energisk for å få Stortinget til å stå fast ved sitt enstemmige vedtak om aluminium.

Avd. 44 gir på medlemsmøte uttrykk for sterk skepsis til ilmenittverket. Det er mangelfullt planlagt. Det gir for få arbeidsplasser. Det skaper ny usikkerhet.

plasser i Tyssedal uansett valg av prosjekt.



Olaf Albertsen: — Regjeringen er ute etter Tyssedalskraften.



Ordfører Stensland: — Vi har ikke råd til å miste flere industriarbeidsplasser.

Ordfører Leiv Stensland understreker i et intervju med Hardanger Folkeblad at Odda ikke har råd til å miste flere industriarbeidsplasser. Hele kommunens infrastruktur rammes.

Odda Høyre ber regjeringen garantere 262 arbeids-

Formannen i avd. 44, Olaf Albertsen, sier i et intervju med Hardanger Folkeblad at regjeringen er ute etter kraften, og er mindre interessert i tallet på arbeidsplasser.

Ved Sira-Kvina har det vært avsatt kraft til et ilmenittverk i Jøssingfjorden, men kraften er aldri blitt brukt. Man spør hvorfor?

Avd. 44 vedtar å gå til streik hvis det ikke nå er avklart om det blir flertall for modernisering av aluminiumsverket.

Dette er i korte trekk Tyssedalsaken pr. i dag.

Side 10, 11 og 12



## Streiken – sommaren -82

Med hovudtyngden i streikekomiteen som dei mest kampvillige i fagforeninga og med Nils Moldøen som formann, var det «vi» som var i leiinga og skulle visa kva vi dugde til. «Vi» er oss vanlege tyssedølar, AKP'arar, arbeidartifolk, flesteparten utan partitilknytning i det heile, som har lengta slik etter den dagen då Indre Hardanger skulle ta kampen opp mot diktaturet frå statsstyresmaktene. Og når einskapen først var smidd lokalt, var det ikkje måte på kor mange ulike lag og organisasjonar som synte støtte og var med på aksjonane våre. Aldri har vel så mange støtta ein «ulovleg» konflikt — til og med LO-forbund løyvde pengar til aksjonen, truleg for første gong i historia. Tyssedal kunne for første gong få oppleve korleis den lokale *einskapen* vert eit skarpt våpen i kampen.

På mange måtar var sikkert denne einskapen grunnlaget for den etter måten imponerende solidaritetsrørsla som utvikla seg under streiken. Utan at vi hadde aksjonert og streika hadde vi aldri fått så mykje pengestøtte, så mange støttefråsegner og så mange tusen menneske med oss i dei politiske streikeaksjonane.

Alt frå første streikedagen blei dei streikande organisert i grupper. Alle måtte ta sin tårn.

I AKP(m-l) var det lagsmøte måndag kveld (24.) før streiken. Vi hadde ingen illusjonar om at fagforeningsleiinga ikkje enno ein gong skjulle hosta opp ein eller annan grunn for ikkje å sloss, men prøvde å utofrma ein taktikk for kamp. M.a. gjorde vi vedtak om å gje ut ein løpeseddel alt tysdagen.

Dessutan prøvde vi å skissera oppein opptrappingsplan av kampen i tilfelle det skulle gå bra. Tankegangen var slik at ein streik i avd. 44 var eit «spøtt i havet» om ikkje det skjedd



Oppslagstavla vert ivrig studert under streiken. (Foto: Arne Joramo)



Skikkeleg blokade av porten til DNN måtte til for å stoppa bedriftsleiinga sitt forsøk på streikebryteri. Medan heile lokalsamfunnet aksjonerte, var adm. dir. Solheim mest oppteken av at anleggsarbeidet gjekk etter planen!

(Foto: A. Joramo)







Alle streikande var pålagt oppgaver og ansvar, seinare blei familiane og til sist heile bygda mobilisert. Kulturen blomstra, streikemøtene var opne, motet og entusiasmen steig.

Det som blei lansert som ein ganske sprø ide — å senda fleire busslastar i demonstrasjonstur til Oslo — blei grepen av fleire hundre menneske. 300 tyssedøler i Oslo — det er fleire enn det som var i 1.mai-toget i Tyssedal på dei same parolane!! Oslo-turen, som han blei kalla, blei kanskje det viktigaste elementet i heile streiken. I alle fall var det det som sette mest spor etter seg i media.

Elles blei opptrappingsplanen følgt til punkt og prikke. Tyssø Elektrikerforening gjekk ut i full streik frå onsdag 2. juni, valde eigen streikekomite med Vidar Våde som formann. Samstundes gjekk dei to komiteane saman i ein felles streikekomite.

Onsdag 2. juni vil elles bli hugsa som den største demonstrasjonsdagen i Odda og Tyssedal si historie. «Informerte kjelder» påstår at når første del av demonstrasjonstoget var framme ved Rådhusplassen, hadde ikkje dei siste gått ut frå Almerket.

Formannen i streikekomiteen, Nils Moldøen, blei avbroten av applaus fleire gonger, i sin skarpe hovudappell.



Tyssedal sine egne, bitre erfaringer! 2.6.82. (Foto: A. Joramo)

Streikekomiteens formann Nils Moldøen:

## Proposisjonen ei katastrofemelding for Tyssedal



Tusenvis av mennesker hørte streikekomiteens formann dømme ilmenittprosjektet nedenom og hjem.

— Ilmenittverket er et påskudd for å føre krafta ut av Tyssedal. Et påskudd for å legge ned Tyssedal. Ei oppfinning for å føre det norske folket bak lyset og deretter redde sine politiske skinn etter 7. juni, sa streikekomiteens formann Nils Moldøen i sin meget kvasse og bitre tale på rådhusplassen hvor «hele Odda» var samlet for å vise solidaritet med Tyssedal-arbeiderne.

— Sjel om sjansene for at et ilmenittverk skulle bli bygd, er det likevel fullstendig uakseptabelt for oss. Etter regjeringen sin stortingsmelding vil bare 12

av DNN ansatte ha arbeid i juni neste år. Stortingsmeldinga er en katastrofemelding for Tyssedal. I løpet av sommeren, blir folk oppsagt. De fleste av oss blir tvinga til å søke jobber andre plasser. Noen blir tvinga til å gå fra nye hus. Familiene blir oppsplitta. Butikkene vil måtte stenge. Skolen blir innskrenket. Barnehagen kan bli stengt.

Dette er saken i dag. Kampen står ikke om 177 arbeidsplasser og et ilmenittverk, eller 262 arbeidsplasser og et aluminiumsverk. Vi streiker og demonstrerer i dag for å hindre at Tyssedal forsvinner som et levende og godt plass å leve.

Håpet om seier ligger i a. politikerne på Stortinget skal kjenne

den varme pusten i nakken fra demonstrasjonene og streikene her i dag. Håpet ligger i at folk rundt i landet stiller seg skulder ved skulder med oss i Tyssedal. Det er ikke bare oss som er i streik i dag som har forstått hva denne kampen dreier seg om. Stortingsrepresentantene kjenner alle fakta. De må vite at ilmenittprosjektet er elendig både teknisk og økonomisk. De må vite at regjeringens sitt forslag betyr nedlegging av Tyssedal.

Hvordan kan det da ha seg at det i dag er flertall i Stortinget for regjeringen sitt forslag?

Sannheten er at Stortingsflertallet kjenner større ansvar for å sikre framtida for de kilowatt-timene som blir produsert i Tyssedal, enn å sikre framtida for menneskene som arbeider og border.

Tyau streikekomiten

Jeg er stolt av dere  
Jeg synes dere ikke må gi  
dere nå for det er nå  
kampen begynner så stå på!

St kjemp for dere har  
kjærlighet

Vil ikke skrive mitt  
navn men en liten  
en gamle dame i Tyssedal.



# Dagboknotater

*Med løyve frå Sigrun Insteffjord, gift med formannen i streikekomiteen, prentar vi utdrag frå dagbok skriven desse streike- og demonstrasjonsdagane.*

## Torsdag

Varmt!

Vellykka sirkel-gruppearbeid på skolen. Bl.a. intervju folk om DNN-saken. Og skrive dikt om a) Skarde-turen b) Streiken. Flotte dikt. Det ene blir lest opp på streikemøtet i kveld. — Medlemsmøte i lærarlaget. Else Jensen + John Gravdal er med. Forbannelse. Else er flink, modig og indignert. Enstemmig for full streik mandag. Kr. 2000,— + listeinnsamling.

## Fredag 4.6.

Varmt! Trøtt på skulen. Finn ikkje på noe spennande. Gir fri siste timen, orker ikkje mer. Hentar jentungen i barnehagen og tuslar heim. Erlend og Frode slår opp telt i hagen og søv ute. Vasker klær, rydder, tar det med ro. Ringer frar og fortel kva som er på gang. Han har ikkje forstått at det er snakk om oppsigelsar til sommaren. Men han trur nok ikkje på ilmenitt. Ingebjørg ringjer og vil undersøke humøret som er strålende. Eg ønsker alle kamerater rundt om skulle få oppleve denne «susen av revolusjon» over Odda og Tyssedal. SOLIDARITET. Sjølv er du lett som ei fjør — til sammen veier vi fleire tonn. Men det tok ni år å arbeide fram denne enstemmigheten som gjør at Nils, Albertsen og ordføreren kunne gå gjennom gatene i spissen for 5000 mennesker med ei stemme. Får ei flaske øl på trappa til Marta etter at Nils er stuft i seng. Snakkar med Norvald som har vært på en fantastisk tur til Bergen og stått på stand. Alle lærer mye i disse dagar! Blei tidlegare på dagen oppringt av NRK som hadde hørt at klassen var så flinke til å skrive dikt — de skulle få lese dikt om Tyssedal i reiseradioen!! SPENNENDE. Erlend og Frode sovnar i teltet. Herdis søv, Nils søv nesten. Sjølv sovnar eg tungt. Folket i Tyssedal er førebudd på tap og å ta det samla.

## Lørdag 5.6.

Vaknar av vekkerklokka og Erlend i hagen: «Det er på tide å stå opp no». Lagar frukost, skriv dagboka ajour. Reiser til Odda. Handlar i full fart to par sko, godtepose til Herdis, blomst til barnevakta og rasar heim på streikemøte kl. 11. Der er heilt fullt.

Erlend er med for første gangen. Han synes det er en opplevelse og syg til seg. Lærer om klassestaten, mediamakta, Stortinget og SVIKET. Heldige 10-åring. Han kan mye mer enn eg da eg var 20. Stram organisering —



*Stortingsdebatten var ei pine på fleier måtar...*

(Foto: Klassekampen)

Folk står på og førebur seg på tap — Orientering om Oslo-turen, smør stor nistepakke!!! Reiser heim — tar inn klær, rydder litt, henger ut klær, et middag, kjører Nils og ungane på fotballkamp, tar en liten strekk, rydder igjen, pakker sakene til Herdis og dukkevogn. Reiser for å hente og levere henne. Pakker teltet sammen så det ikkje ødelegg plenen. Kjøper snus, tobakk, drops, reisesjuketablettar = 52 kroner. Tar inn en ny ladning med klær.

## Søndag 6.6

Oppe ½7. Frukost. Avreise kl. 8. Folk var møtt opp for å vinke 5 fulle busser tyssedøler avgarde. Stille og rolig i bussen. Folk ladar opp, er spente, føler på samholdet og styrken. 10 min. på Haukeligrend.

Notodden 13—15

På Sauland blir bussane stoppa med parole om full støtte og støtteuttalelse fra et kurs.

Mat på Notodden. Lapskaus, brus og kaffi til alle.

FANTASTISK. Fotografering ute.

Vi syng Frihetens forpost. Appell.

Streikekoret med Kampen om DNN.

Appell fra DNAs faglige tillitsmann: Prøv å kidnappe noen representanter. Møtet blir heva med Internasjonalen. Folk tuslar ut og virrer på hodet og svelger klumpen i halsen over denne fantastiske mottakelsen. Sånn solidaritet som vi bare har lest om kanskje kunne skje i 30-åra en gang. Det opplever vi i dag!

Alle er enige om at dette er noe av det mest spennende de



noen gang har vært med på. Kanskje håpet stig at vi muligens kan vinne på tross av alle høyrepisker og prestisje???

Skolemusikken spiller opp utafor kafeen i en liten paviljong. FLOTT. Bare Tyssedal på Notodden i dag. Vi har 5 røde busser med røde flagg på vei til Oslo. Klarer vi å sette Oslo på ende. Det er vår eneste sjanse til å berge dalen for ettertida. Vi må få opp sinnet no — det er liksom så uvirkelig enno denne turen. Alt er godt organisert — alt er det grep om — likevel er det som en drøm — du er med på sida av deg sjøl. Eg skal på pressekonferanse. HJELP!

Kl. 17.30. Nervøsiteten stig — optimismen — tvilen — trua på at det må være umulig å herje med et lokalsamfunn lenger enn de har gjort med Tyssedal. Vi sitter 7 stk. på Grand Hotell og venter. Ellingsen, sognepresten Bjelkemyr, Eg, Nils, Bjarne Larsen, Åsta Hansen, Jon Atle Espe. Johnny Våde er presseleder og stegar rundt. Terje kaver — vil ha folk stående langs veggen. Folk stig ut og inn. Ka skal vi gjør — kaffi — is. Det kriblar i magen. Folk er anspent, men står på. Erlend er på by'n med Alis.

19.10. Det møtte 12—15 journalistar. Eg syntes det gjekk fint. Folk er punktlege — forlater møtet presis kl. 19. Bare vi og journalistane sitter igjen. Det blir mye prat om kraft, industri, pakkeløsning, tilskudd. Hva med følelsene — det er det eneste kortet vi har igjen når alle fornuftige argument har spilt falitt.

Vi tok journalistene med ut. Folk var i full sving med mageplakater rundt Stortinget og 2—3 fagforeningsfaner. Paroler.

Skyss på Egertorget. Appell — av Nils. Mye folk. Skolemusikken spiller. Streikesangen med stor glød. Bjørn Nilsen. Appell fra meg om Kristeleg Folkeparti — applaus. LEVE TYSSEDAL!

Et par runder til rundt Stortinget. To hollendere ønska lykke til. Klappapplaus fra Dasslokket. Vi gir oss, pakkar i hop. Kl. ½9. Oppsummerer at vi har fått maksimal uttelling. Journalistane låg langflate. Politiet kom og ordinerte ny rute.

23.15. I seng på Solstua Ski. Solstua tilhører avd. 6 av Norsk Kjemisk. Det er umulig å tro noen ting om utfallet. Vi tør liksom ikke summere opp. Vi håper og tror og er spent på avisene. God natt. I morra er den store D-dagen.

#### Måndag 7.6.

Våkner presis ½6. Har sove som ein stein og drømt om aksjonane. Vi kommer til Oslo kl. 7.45. Vi stima oppover til Stortinget med unger, hjelmar og arbeidsklær. Folk stoppa og lurte fælt.

Straks gjekk vi i gang med runder rundt Stortinget. Vi gikk og gikk med plakater og faner. På sjølv Løvebakken stod

## AV VÅR POST

Ville du kjøpt ein  
bruktbibel av denne  
mannen?

*Tyssedal*



NÅ?





en stram delegasjon og tok i mot stortingsmenn etter hvert som de kom. Åsta Hansen håndhilste på alle etter tur. De slapp ikkje lett gjennom With, Rossback, Helland, Espelid & Co. Bratz og Bondevik sneik seg inn en eller annen bakvei. Folk fra Oslo kom med fanene sine og gikk med oss. Til slutt rakk vi nesten rundt — og var borti 30 faner. 10.15. Stilte fanene opp foran Stortinget til fotografering. Vi pakka sammen plakaten og fikk oss mat. Heismontørenes Fagforening spanderte kaffi og rundstykker.

10.45 stiller vi oss i kø. 300 tyssedøler og mange flere. Vi synger streikesangen så det ljoer: «No er det ein tidleg junidag i 1982 på nytt har vi tatt fram faner og flagg. Vi gir oss ikkje no!» Steigan holder en kort appell. 5 på 11 slipper vi inn på galleriet.

Folk trenger og strøyer inn med unger og hjelmer. Vi er utslitt. Det er godt å sette seg ned. Erlend er iheltrøtt. Sovner på golvet under benken.

Etter krangling om hvor mye tid hvert parti skal ha, kommer saka i gang. Inger Lise Gjørvi er god! Krafta dukker opp med en gang debatten slipper løs. Fossen og Haugstvedt står på. Motstanderne har ingen argumenter — er tømt for all saklighet og sannhet. Bratz kan ikkje svare på hva vi skal gjøre i mellomtida. Å høre på Rossbach er

som å høre på havregryn og surmelk. FEIGING. Det er bare krafta som er viktig — det er den de vil ha fatt i. Han er så full av illusjoner at du kunne grine over at halve slekta stemmer inn noe så dottete.

★ ★ ★

Pause: 15—18.

Vi er forbanna. Samler oss ved Wergeland-statuen. Korte, stramme appeller. Vi går til bussen. Sender to busser heim. 3 blir igjen til avstemminga.

Klokka 5 kommer Bondevik ut. Folk holder på å gå på han. Men ingenting virker — Bondevik er like kald og rolig. «Han der *kan* ikkje være prest!» Etter Bondevik kjefter vi litt med en Titania-type og forbannelsen stig. Vi kommer til å tape!

★ ★ ★

Vi toga ut, rasande og forbanna over at slikt kunne skje: At Stortinget kunne legge ned et helt lokalsamfunn uten et eneste aregument.

Vi stega opp på Løvebakken. «Leve Tyssedal!!!» ljoer over Karl-Johan 5 ganger. Knyttnevene slo mot Stortingssalen. «Fy fan» — sa sjåførane som hadde hørt debatten og avstemminga på P2.



6.6.82. Tyssedølane omkransar Stortinget for første gong!

(Foto: Leif Gabrielsen)



## «Tilbake til normalt leie. . .»

Alle syntest dei hadde lært mykje desse sommardagane. Om einskap og solidaritet, om vanlege arbeidsfolk sine evner for kamp, om motet som stig, om kva styrke som ligg i ein einskapleg, godt organisert og kampvillig arbeidarklasse.

Når streiken var slutt, folka heimkomne frå Oslo og det avluttande streikemøtet starta om kvelden 8. juni i ein fullstappa samfunnssal, var alle innstilt på at denne einskapen *må*

vi holde på, no *må* vi kjempa vidare etter dei same linjene som under streiken. Vi treng alle tyssedøler sin innsats om dette skal lukkast.

Men nei, — alle var ikkje innstilt på det. Formann i Streikekomiteen innleier med oppsummering av streiken, og lanserer tanken som er blitt lufta på streikekomite-møte, om ei organisering av bygdefolket i Tyssedal til fortsatt kamp. Ein slags «folkekomite» som jobbar i nært samarbeid med fagforeningane, men som kan utnytta kreftene og kampgløden som ligg utafor foreningane. Vi tek ikkje for sterkt i når vi hevdar at dette var heilt i tråd med den vanlege tyssedøl sine tankar og behov.

Men reaksjonane kom og dei var skarpe. Vi meiner dei var av to typar: Fagforeningsleiinga i avd. 44 følte at dette kunne vera ein trussel mot deira lokale maktmonopol i saka og at «AKP skulle ta over» — i tillegg var det rein konservatisme: «Folkekomite» blei avvist i 1974, og *må* dermed avvissast no og.

Vi overlet ordet til dagbok-skribenten.

«Albertsen kjører hardt ut mot folkekomite — *må* ha tenkepause. Kjell Johannessen er svært stolt av denne kampen vi har ført osv., men *nå* *må* alt tilbake til fagforeningen og kommunale utvalg. Det er viktig å komme i nor-

malt leie — vi kan umulig klare å holde koken framover.

Sidedama griner og freser. «Er dere ferdig med Nils no. Han har gjort jobben for dere no.» Flere griner — etter all enigheten er denne kampen grusom for folk. Noen forlater møtet. Johnny tar på solbriller så ingen skal se kor sint han er, men rolig.

Folk er fortvila, forbanna, kom ikkje her og lag splittelse no når vi *må* kjempe alt vi kan for å redde dalen.

Kollbotn foreslår at streikekomiteen fortsetter som en folkeaksjonsledelse. Vidar Våde sier han er villig til å strekke seg svært langt for å beholde enheten og foreslår av avd. 44 kaller inn til nytt møte. Eg foreslår at vi *må*

få valgt sammen noen folk her og *nå* til en foreløpig ledelse. Noe anna ville være et svakhetstegn. Laugen vinker på meg. — Vi hopper på forslaget ditt. Albertsen fremmer det og foreslår Nils og Bjørn K. Larsen i komiteen. Flere andre blir foreslått. Bra folk. Vi er jo alle enormt letta over at dette lot seg gjøre! Folk er entusiastiske og får gløden tilbake. Avslutter med Leve Tyssedal.

Slik blei det altså. Møtet gjorde samrøystes vedtak etter forslag frå Olaf Albertsen, formann i avd. 44. Likevel står det å lesa følgjande i Hardanger Folkeblad.

### AP-tillitsmenn:

## — Permisjoner kan ikke godtas — Sysselsettingen må sikres

- Kampen om aluminium er tapt
- Arbeiderpartiet og LO må gå i spissen for å sikre sysselsettingen
- Permittering betyr fraflytting, og kan ikke aksepteres.
- Militant holdning er skadelig.

Dette er noen av de stikkordene som formann i Odda Herreds Arbeiderparti, Kenneth Nesse og styremedlem i Hordaland Arbeiderparti, Dan Danielsen, legger vekt på i en samtale med Hardanger Folkeblad.

Nå kommer reaksjonene i Tyssedal. På møtet for DNN arbeiderne tirsdag kveld brøt følelsene fram for alvor. — Stemningen var så amper at den var eksplosjonsartet. En kunne nesten ha mobilisert en krig, forteller klubbformann Olaf Albertsen til Hardanger Folkeblad. Men tyssedølene har ikke resignert. Det var med løftet hode og knyttenever i været

tyssedølene avsluttet møtet med et «LEVE TYSSEDAL».

**HF** SVEIN KNUTSSEN

På møtet ble det fremmet forslag om en eventuell komite som skal arbeide videre med saken. Dette var noe avd. 44 som fagforening ikke kunne slutte seg til, fordi møtet var et folkemøte og ikke foreningsmøte. Til syvende og sist ble det satt opp



## Kommunestyremøte i Odda

Onsdag 9. juni er det kommunestyremøte i Odda, og etter forslag frå Raud Valallianse, vert Tyssedal-saka sett opp på saklista. Referatet frå Hardanger Folkeblad skulle syna kven som er prega av frustrasjon og «tafatthet» og kven som står på, fremmer konstruktive forslag og som kommunestyre nødvendigvis må vedta.

### FOLKEMØTE I TYSSEDAL

Det er tillyst folkemøte i Tyssedal mandag. Ifølge innkallingen er det å sette ned en komite som skal arbeide vidare med Tyssedal-saken. Etter det Hardanger Folkeblad erfarer kommer avd. 44 til å motsette seg en slik framgangsmåte.

Klubbformann Olaf Albertsen ønsker ikke å kommentere utspillet på nåværende tidspunkt, men det er ingen hemmelighet at opprettelse av en egen komite med den splittelse som dette kan bety for Tyssedals-samfunnet, ikke blir sett på med blide øyne fra fagforeningshold. Det er fagforeningen som sitter inne med alle sentrale kontakter, og som kan legge tyngde bak sine ord og vedtak.

### GI IKKE OPP

Det er neppe riktig å karakterisere stemningen i Tyssedal som oppgitt. På den annen side må ingen få inntrykk av at tyssedølene står foran en lett tid.

På møtet for DNN arbeiderne tirsdag var det mange som gråt åpenlyst. Det var den første reaksjonen. Nå sitter tyssedølene igjen med sakens harde og kalde fakta. Tiden er inne for igjen å løfte hodet, og fortsette kampen. Tyssedal er ikke dø.

LEVE TYSSEDAL.

John Andersson:

## Tro ikke lenger på Bondevik —

Det var en meget frustrert John Andersson (SV) som tok ordet under DNN-debatten i Odda kommunestyre. Som tidligere klubbformann og medlem av DNN-utvalget har Andersson i en årrekke kjempet for Tyssedals framtid. Han hadde ingen illusjoner igjennom at det kunne nytte å be dagens borgerlige flertall på Stortinget om noe som helst. —Jeg tror ikke på dem, sa John Andersson.

—Vi har argumentert saklig og dokumentert grundig. De har tilsynelatende lyttet til oss. Og så får vi høre uttalelser fra Stortingets talerstol så feilaktige at flere av oss måtte gå ut fordi vi ikke orket å høre på.

Jeg er ikke enig blant dem som vil at vi skal ha tillit til det som en mann som Kjell Magne Bondevik har lovet. Jeg vil anbefale at vi ikke tar dem noe særlig alvorlig. Men jobber lokalt.

Jeg aksepterer å tape en kamp. Men dette var for snuskete, sa John Andersson.

Kjell Folkvord:

## Det er ikke tafatthet som preger Tyssedal idag

—Det har vært en helt enestående opptreden i fra tyssedølene sin side. Det er ikke tafatthet som preger Tyssedal nå. Jeg tror ikke det er rett at vi kjenner oss slått. Vi må fortsatt sloss for Tyssedals framtid, sa Kjell Folkvord (RV).

Han mente at en nå måtte ta de borgerlige løftepolitikere på ordet. —Vi må ta det som ble

sagt i Stortinget alvorlig. Vi må på bakgrunn av det Bondevik har sagt om at Tyssedal ikke skal komme dårligere ut med et ilmenittverk sysselsetningsmessig. Dette må vi nagle regjeringen fast til. Denne sak er ikke avgjort ennå. Jeg tror ikke regjeringen klarer å stable på beina et ilmenittverk og da må Tyssedals sak opp igjen, sa Kjell Folkvord.



## Ny «folkekomite»?

Torsdag 10. juni er representantskapet i Samorg samla. Møtet blir på mange måter eit oppgjær mellom avd. 44 si ekstreme samabeidslinje og kamplinja. Det hovuddebatten stod om var om siste del av dette avsnittet skulle vera med i uttalelsen frå Samorg:

«Et enstemmig streikemøte i Tyssedal har vedtatt å fortsette kampen for dalen og arbeidsplassene. Odda og Om-land faglige Samorganisasjon gir sin tilslutning til vedtaket om å organisere innbyggerne i Tyssedal for å føre kampen videre med bredde og styrke.» Denne siste setninga ville formannen i avd. 44 ha ut, sjølv om det var han som fremma forslaget som blei vedteke på streikemøtet!

Det blei eit knusande ned-erlag for Albertsen, då forslaget blei vedteke med 27 mot 11 stemmer.

Korkje fagforeningsformann Olaf Albertsen eller signatu-ren «sym» i Hardanger Folkeblad 14.6. forstår kva som skjer. Mellom og på linjene tyt redselen for folk sin eigen kamp fram, passande sam-ansausa med kommunistspø-kelset. Albertsen reagerer som om han var Willoch og trugar med kabinett-spør-mål: «Dette er mistillit til avd. 44!!» Hardanger Folkeblad syner si grenselause mangel på respekt for vanlege arbeidsfolk sine vurderingar og faktisk omtalar tyssedø-le-ne som «rørt vann». Saman med intervjuet med for-mannen i Odda herreds Ar-

Til Votering:

Hans Sekse frafalt sitt forslag.

Olav Albertsen 11 stemmer

Vidar Våde 27 stemmer.

Et enstemmig streikemøte i Tyssedal har vedtatt å fortsette kampen for dalen og arbeidsplassene. Odda og Om-land faglige Samorganisasjon gir sin tilslutning til vedtaket om å organisere innbyggerne i Tyssedal for å føre kampen videre med bredde og styrke. Vi vil fortsette å gi all den støtte vi kan til kampen for Tyssedal. Og vi krever at ingen skal sies opp, før nye arbeidsplasser er oppretta.

### Odda Kommunale Forening:

## – Videre kamp for arbeidsplassene må fremmes gjennom avdeling 44

«Odda og Om-land faglige Samorganisasjon gir sin tilslutning til vedtaket om å organisere folket i Tyssedal til å føre kampen videre med bredde og styrke».

Denne meget omstridte setningen ble vedtatt av et splittet medlems-møte i Samorg. torsdag.

– Vi stemte i mot denne ordlyden, og jeg tar det som et mistillit til avdeling 44, uttaler Olaf Albertsen noe motvillig til HF.

Vedtaket som fikk 27 ja-stemmer og 11 mot gir dermed et klart positivt signal til de som ønsker å føre en videre kamp utenfor fagforeningene i distriktet. Kampen om Tyssedal kan utvikle seg til å bli «folkets klassekamp» i stedet for faglig-politisk arbeid med full syssel-setting som mål.

Politiske grupperinger har med andre ord begynt å fiske i rørt vann. Styret i Odda kommunale Fore-

ning vedtok fredag etter-middag, en enstemmig ut-talelse som tar avstand fra en slik retning. Her heter det: «Alle henvis-ninger om faglig politisk tiltak som skal settes i verk i den videre kampen for arbeidsplassene i Tyssedal som kommer til Od-da Kommunale Forening, må fremmes gjennom avdeling 44, Tyssedal. El-lers vil de ikke bli fulgt opp!»

Utover dette omstridte

punktet i Samorg. vedtak-et, kreves det at ingen skal sies opp før nye ar-beidsplasser er opprettet. Man slutter seg til de tre punktene Odda Kom-munestyre vedtok på siste møte, og ber samtidig om at Stortingets sysselsett-ingsgaranti nå innfris.

Odda og Om-land Fagli-ge Samorganisasjon ber også LO om å legge hele fagbevegelsens kraft og prestisje i at disse kra-vene blir gjennomført.

sym

14.6.82



Velforeningen «LEVE TYSSedal» er stiftet:

# Første store arrangement blir gedigen jonsokfest

beidarparti, der Kenneth Nesse átvarer mot militante aksjonar, utgjer dette det lokale arbeidarparti si linje for kampen framover: Splitt opp ein-skapen og samholdet i Tyssedal. Alt tilbake til normalt leie der avd. 44 og Odda kommune har den lokale leiinga av «kampen».

Så langt gjekk ikkje ein gong SV. Her var SV'arane som var eller hadde vore i leiinga av avd. 44 fullstendig isolert frå t.d. medlemmer av SV som var med i dei andre foreningane, i Samorg og som stod heilt og fullt saman med tyssedølene.

Vi har grunn til å tru at det var motsetningar også i leiinga i DNA om den takiske linja for kampen framover. Mange medlemmer hadde vore aktive under streiken og var svært opptekne av å bevare einskapen og kampgløden, tilliks med «alle» andre i Tyssedal. Dette var nok leiinga klår over, men fleirtalet i styret i Odda herreds Arbeidarparti valde å gjera nok ein framstøyt mot tyssedølene.

Velforeningen Leve Tyssedal er stiftet. Dette skjedde på det store folkemøtet i Tyssedal samfunnshus mandag kveld.

Ifølge de målsetninger som ble lagt fram på møtet skal velforeningen være en tverrpolitisk organisasjon som, i nært samarbeid med eksisterende foreninger og fagorganisasjoner, skal arbeide for å styrke samholdet i Tyssedal. Det første store arrangementet blir en gigantisk Jonsok-feiring med mange kulturinnslag. Senere er det planlagt revy.



Vedtak på folkemøte i Tyssedal 14.06.1982

Velforeningen Leve Tyssedal skal ha som sine viktigste oppgaver:

- å være med å redde Tyssedal som livskraftig lokalsamfunn og gjøre Tyssedal til et godt og trygt sted å leve. Nå og i fremtiden
- å styrke samholdet og det kulturelle liv i Tyssedal
- å støtte det arbeid som avd. 44 og 43 gjør for å redde arbeidsplassene og hindre frøflytting.

## «Velforeningen Leve Tyssedal» blir stifta

### «Måndag 14.6.

Lagar restemiddag. Herdis sovner, prøver å sove sjøl, men er for spent på møtet i kveld. Koss vil de oppføre seg? Ka har de på gang?

Nils kommer heim. Det har gått bra på styremøte i avd. 44. Vi trur det skal gå. Herdis blir med på møtet.

Men det er arbeiderpartiet — Tyssedal Arbeiderlag — som har opplegget i orden. Leif Stana foreslår Reime som møteleder — det blir godkjent sammen med Nils og Larsen.

Møtelederen gir ordet fritt — Nils grip det og holder si førebudde innleiing — skisserer oppgaver, økonomi og samhold — øke solidariteten, spre informasjon.

Det er spenning i salen. Folk er engstelige! Her hadde nok vore meir folk — var det ikkje for halvkveda viser i Hardanger Folkeblad. Leif Stana — formann i Tyssedal Arbeiderlag får ordet. Fyrer løs en AKP-hets han har skrive ned heime. Folk måper, noen vil gå, sjikane, — 1973-nivå. Skammelig.

Fleire tar ordet sjokkert! Koffor har ikkje du vist deg under streiken? Koffor tok ikkje du eit tak? Koffor var ikkje du med til Oslo? Det er grusomt å være vitne til. Vidar, Nils

er rolege. Understrekar samholdet, solidariteten og peikar på kem som vil splitte.

Ei eldre dame grip ordet og set Stana på plass: Ikke det at eg er enig med AKP i alt, men det får være visse grenser. Hadde det ikke vært for de, ville det ikke blitt noen streik, ikke noen Oslo-tur, ingen ting. De kan snakke for seg og fortjener ikke detta.

Alt snur. Resten av AP sier ingenting. Stana grip ordet igjen. Kjører videre. Johnny ler av han — for et dårlig skrive innlegg! Salen ler. Resten av AP ramlar, rasar ned på rett side. Han blir ståande uten et eneste menneske å støtte seg på. For et bedritent opplegg!

Folk roar seg ned. Foreningen får navnet «Velforeningen Leve Tyssedal» og skal skipe til jonsok-feiring og starte økonomiarbeidet. Eit breitt sammensatt styre blir valgt.

Vi tapte i Stortinget, men folk lærte enormt og vi var 300 der. Det var masseaksjoner skapt av dristighet og tru på massane sine krefter. Og tyssedølene reiste endeleg hodet etter mange år. Vi går framleis med hodet høgt og mange er innstilt på ein hard haust. Men først skal vi feire jonsok og ta ein ørliten ferie.»

Dette blei den tronge fødselen til Velforeningen Leve Tyssedal. Vi merkar oss at Hardanger Folkeblad har vett nok til å la Stana sin innsats stå ukommentert.



## Korleis står vi no – sommaren 1982?

Borgarskapet, med Høgre-regjeringa i spissen har førebels vunne fram i kampen om Tyssedal-krafta. Den politiske situasjonen på Stortinget er slik at mellompartia lar Høgre få driva på med politikken om berre dei kan karra til seg ein del betre posisjonar (les: taburattar). DNA sin taktikk er å kjempa kampen i Stortinget (og *den* jobben klarer dei bra). Det lokale DNA-laget, har hatt som si fremste oppgåve å støtta opp under denne taktikken — gjennom å hindra at tyssedølene sjølve kjempar og ved å føra den parlamentariske tradisjonen konsekvent ut i fagforeningane. Det er VI — valde tillitsmenn eller ordførar — som skal ordna opp (!) fram til neste val, årsmøte. Deira «kamp-paroler» har vore: Delegasjonar, brev, protestar, møte med departementet, forbundet, og nye brev, delegasjonar til Stortinget osv. osv.

Denne linja har vore støtta av ein dominerande SV-fraksjon med støttepunktet sitt i avd. 44. Denne gruppa står i motstrid til SV'arar som Olav Sæd, Oddvar Rolland m.fl. som i lang tid har agitert for kamplinja i Tyssedal-saka.

Norsk Kjemisk og Landsorganisasjonen har (sjølvsagt) vore trugne tilhengjarar av «den parlamentariske tradisjonen» med å støtta samarbeidslinja til avd. 44 og skrika høgt om Høgre-regjeringa sin politikk dei timane saka vert diskutert på Stortinget.

For å forstå kvifor LO- og DNA-leiinga ikkje «tar saka» og grip leiinga i den verkeleg kampen for Tyssedal, må ein gå vekk frå teoriar om at Svensson, Halvorsen eller Brundtland er duglausa amatørar. Sanninga er den stikk motsette. Leiinga både i LO og DNA er tvert om deler av ein annan klasse — nettopp plassert i posisjonane sine for å hindra at arbeidsfolk skal reisa seg til

kamp. Dei er deler av borgarskapet, same klasse som Bratz og Willoch. Vi ser det når vi studerer politikken når dei sit med makta sjølve (jfr. den 8 år lange striden mot DNA-regjeringane). Vi ser det av bortforklaringane dei nyttar til å unngå kamp for Tyssedal. Sjølv om dei reint kortsiktig partitaktisk hadde kunna tent på å trødd til for Tyssedal, er det likevel uråd — med tanke på konsekvensane om dei sjølve skulle koma til makta igjen eller «at det skulle koma krav om at det må bli ein vane» at LO kjempar for medlemmene sine interesser.

På den andre sida står Tyssedal meir samla og betre rusta både politisk og organisatorisk enn nokon gong tidlegare. Linja med at «dette er avd. 44 sin kamp» skulle vera nedkjempa ein gong for alle og avslørt som ei sektersk organisatorisk dødslinje. Det måtte jo logisk bety at om dei tilsette blei sparka, fagforeninga oppløyst så måtte kampen avsluttast.

Tyssedal har fått sin eigen organisasjon «Velforeningen Leve Tyssedal» som kan bli eit egna reskap framover.

Samstundes er det i ferd med å bli bygd opp ei solidaritetsrørsle omkring Tyssedal. Frå heile landet har det strøymt på med pengestøtte og uttalelsar.

AKP(m-l) si linje med å stå saman med tyssedølene mot splittelsmakarane, er blitt godt motteke — sjølv om mange framleis er skeptiske til kva vi kan finne på.

I alle fall reiser Tyssedal — for første gong — på fellesferie med avlagt ed mot flytting og individuelle løysingar på problema som alle veit ligg framfor oss. ■



Velforeningen Leve Tyssedal sin St. Hans-prosesjon 1982.

(Foto: K. Folvord)



Så tidleg som 11. juni var dir. Solheim framme i avisa og kunngjorde at ingen av dei 177 som var tiltenkt å jobba på ilmenitt-verket skulle bli permittert i anleggsperioden.

Heile Tyssedal og Odda kommune sitt krav var at 262 personar skulle vera sysselsatt fram til regjeringsgarantien var innfridd med like mange permanente arbeidsplassar.

Dette var støtta av *alle* lokale organisasjonar og instansar som hadde uttalt seg, samt eit fleirtal av representantane på Stortinget 7. juni. Likevel går adm. dir. J. J. Solheim ut i pressa, midt i fellesferien, og varslar permitteringar frå siste halvdel av august.

Fagforeningsformannen gjekk ut i avisa med kommentarar som ikkje kan tolkast på anna måte enn ei godtaking av permitteringar utan protestar.

Medlemsmøte, derimot, protesterer kraftig på permitteringane, som vert gjennomførte utan at nokon (heller ikkje AKP'arane) fremmer forslag som har til hensikt å hindra dei.

Direktør Solheim til Hardanger Folkeblad:

### Hele DNN's arbeidsstokk skal sysselsettes i anleggstiden –

– Ilmenittplanene betyr permitteringar blant entreprenørene



## Nye permitteringar – oppseiingar – men også ny vilje til å sloss

### Halvparten av DNN-arbeiderne permitteres hver uke i to mndr.

Som meldt i Hardanger Folkeblad onsdag, blir det ukespermitteringar ved DNN. Halvparten av arbeidsstokken vil bli permittert hver uke en tid framover. Etter forhandlingar mellom bedriftsledelse/fagforening vil permitteringane bli satt i verk etter denne planen:..

**HF** SVEIN KNUSTEN

• De forskjellige arbeidsgruppene blir delt opp i 2. Den ene parten blir permittert ei uke, mens den andre jobber. Og omvendt. På denne måten sikrer en at det til enhver tid er tilstrekkelig med folk til å utføre det nødvendige arbeidet.

• 19. august går 90-95 mann ut i permisjon ei uke.

• 26. august går ei tilsvarende gruppe ut i permisjon ei uke. Deretter veksler de to gruppene om jobb og permisjon annenhver uke.

Denne turnusordningen kommer etter det HF erfarer til å pågå i alle fall et par måneder.

... En del nøkkelpersonell som ikke lett kan erstattes, vil ar-

beide som normalt. Blant annet gjelder dette folk som er direkte engasjert i prosjekteringsarbeidet.

Fagforeningsformann Olaf Albertsen sier til Hardanger Folkeblad at det er leitt at en har måttet gå til permitteringar, men at en faktisk har vært nødt til det. Den løsning som er valgt anser han som den beste.

– Når vi må gå ut med slik permittering mener vi at så mange som mulig må bli berørt. Selvsagt er det ingen som har lyst til å gå til et slikt skritt, men vi har havnet opp i uføret på grunn av sommerferie i utvalg og departement. Skulle vi ikke få annet arbeid må vi spare på det vi har. Da er det bedre å belaste alle noe, enn å ta inn noen få i langvarig permisjon.

Vi drøftet saken i styremøte onsdag, og fant at denne løsningen er den beste. Vi håper at permitteringene blir kortvarige. Vi håper og at karene fra Elkem kan få klarlagt hvor fabrikkene skal ligge slik at vi kommer i gang med selve

anleggsarbeidet, snarlig sier Albertsen.

### ARBEIDSMARKEDSKURS

Det går nå ut tilbudsom arbeidsmarkeds kurs for ansatte ved DNN. Disse kan engasjere 20-25 personer i fra 10-20 uker.

På grunn av en misforståelse kom vi i onsdagsavisen til å skrive at omlag halvparten av de 220 ansatte i dag arbeidet utenfor Tyssedal. Dette er ikke rett. Det er bare et fåtall som gjør det.

Opplæringen på Høyanger er kuttet ut, men noen få har arbeidet som sommervikarer. Disse vil bli permittert i slutten av august.

### BEDRIFTSFORSAMLING

20. august vil styret og bedriftsforsamlingen bli nærmere orientert om framdriftsplanen. I går var den nye prosjektlederen fra Elkem på befaring i Tyssedal. Etter planen skal prosjekteringsarbeidet ta til etter nyttår. Det arbeides intenst for at tidsplanen skal holde..



## Krafta — som kampmiddel?

Men Velforeninga Leve Tyssedal kallar inn til folkemøte 23. august. Her kjem det fram at mange hadde rekna med at ein hadde aksjonert mot permitteringstrusselen. Folkemøtet vedtok m.a. å setta i gong ei underskriftskampanje «med krav om at 262 personar skal sysselsettast fram til 262 permanente arbeidsplassar er etablert. Dette kan skje ved å nytta inntektene frå kraftsalet eller ved direkte løyvingar frå styresmaktene. Om ikkje dette skjer — seinast innan handsaminga av statsbudsjettet vil vi gje vår støtte til at straumleveransen ut av kommunen blir stoppa.»

Dermed var den store diskusjonen om å nytta krafta som våpen i kampen for Tyssedal, sett i gong.

Permitteringane blei gjennomført som ei «arbeidstidforkorting» (regulert trygdemisbruk) og gjaldt bortimot alle tilsette. På medlemsmøte kunne Albertsen nærmast lova at i oktober ville leiinga innsjå at det var så mykje arbeid å utføra at dei ville slutta av permitteringane.

På ein måte fekk Albertsen rett — for i oktober kom oppseiingane.

Hardanger Folkeblad har faktisk rett i at oppseiingsvarselet kom som eit sjokk. Men legg merke til fagforeningsleiinga sine kommentarar: Ingen protest mot oppseiingane — *det er tidspunktet dei kjem på som er feil!*

Og merk! 8 dagar tidlegare hadde avd. 44 gjort eit samrøystes vedtak der dei protesterer mot trusselen om oppseiingar og signaliserer at dei vil drøfta «muligheten av å ta i bruk siste kampmidealet vi har: KRAFTA.»

Tysso Elektrikerforening, som er den fagforeninga som eventuelt må setta ein «kraftaksjon» i verk, handsama saka på styremøte og sette fram følgjande vilkår for å råda medlemmene til å aksjonera.

«Utviklingen i DNN saken er kommet dithen at Tyssedal i dag står uten sysselsettingsmidler, og 115 arbeidere står med oppsigelsen i handa.

Stortingsfleirtallet og regjeringen har brutt sine fagre løfter og forsikringer om at ingen av de ansatte skulle bli permittert, oppsagt eller tvangsflytta.

## Nå kommer oppsigelsene

«Vi beklager å måtte meddele at omstendighetene har gjort at vi må si Dem opp fra Deres stilling i DNN Aluminium A/S med fratreddelse fra 30. november 1982».

Slik er ordlyden i det oppsigelsesbrevet som 115 DNN-arbeidere mottok ved middagstider onsdag.

I brevet heter det blant annet videre at «de som bor i bedriftsbolig, kan beholde denne inntil de har skaffet seg annen bolig, dog ikke utover året 1983».

Selv om oppsigelsene har vært «annonisert» i pressen i den senere tid, er oppsigelsene kommet som et sjokk på de fleste av dem det gjelder.

mars i år.

—Jeg vet ikke hvilke ord jeg skal bruke. Dette er fryktelig. Det er skrekkelig at det skal være nødvendig å gå til dette skritt på nåværende tidspunkt. Man burde ha tatt det litt mer med ro og heller øvet press på de politiske myndigheter for å få etablert alternative arbeidsplasser. slik at alle de 262 som Stortinget har lovet arbeid også får det, sier kassereren i avd. 44 Thor Haugland til Hardanger Folkeblad.

—Nå skjer det som Stortinget lovet ikke skulle skje. Vi får ingen sysselsatt utover de 177 arbeidsplassene som ilmenittsmelterverket ifølge planen skal gi, sier nestformannen Helge Fedje.

Fagforeningen vil i tiden framover fortsette å presse på overfor både Norsk Kjemisk og L.O. Lokalt skal foreningen ha møter med både avd. 61, 5 og avd. 43, samt Samorg.

—Rettsak mot regjeringen

Overfor bedriftsledelsen er det lite fagforeningen kan gjøre utover å påse at avtaler og overenskomster blir overholdt. Blant annet at oppsigelser skal skje etter ansiennitetsprinsippet. «under ellers like forhold», som det heter i hovedavtalen, sier han.

### INGEN FUNKSJONÆRER

Oppsagt Klubbformann Olaf Albertsen legger ikke skjul på at det har vært irritasjon blant arbeiderne at ingen av funksjonærstaben er blitt oppsagt, mens den øvrige arbeidsstokken har sunket jevnt og trutt de siste årene. —Funksjonærstaben er i dag ca. 60, og det er det samme som da vi var 400 ansatte, sier Albertsen.

At mange tyssedøler nå har gitt opp «alt håp» er ganske forståelig.

—Det gikk enda an da vi var permittert, men en oppsigelse er noe helt annet sier representanten for arbeiderne. Å skaffe annen jobb og annet hus i distriktet

Klubbformann Olaf Albertsen:

«Nå må de politiske myndigheter gjøre noe for å rette opp sin anseelse og lovnader fra 7. juni»

—Nå må de politiske myndighetene begynne å gjøre noe for å rette opp sin anseelse og de lovnader som de gikk ut med under debatten i Stortinget 7. juni. Vi ser i dag ingenting igjen av de lovnadene. De har lovet og ingenting gjort, sier klubbformann Olaf Albertsen til Hardanger Folkeblad.

### UHELDIG TIDSPUNKT

Han er både skuffet og sint over at oppsigelsene kommer akkurat nå hvor det arbeides både med å skaffe alternative arbeidsplasser og å utarbeide sysselsettingsmidler til distriktet.

—Jeg hadde regnet med at vi ville få en reduksjon i arbeidsstokken. At den kom akkurat onsdag og at de ikke

### RETSSAK

—Er den rettsaken som fagforeningen har forberedt mot regjeringen for brutte løfter mer aktuell nå enn noensinne?

—Det er ganske klart. Jeg var senest i dag i forbindelse med Kåre Støylen i forbindelse med Kjemisk både når det gjelder oppsigelsene og de etterverkningene saka har fått.

Vi vil presse på for å få saka igang. Den er oversendt til LOS

er oppsagt bor i bedriftens bolig?

—Jeg tror de fleste.

—Hva slags muligheter har de for å få seg annen bolig i Tyssedal?

—I Tyssedal er det helt håpløst å få noen annet. Det er Tyssedalene og DNN som eier de fleste boligene, utenom de private som er bygget.

—Betr dette en radikal nedgang i innbyggertallet i Tyssedal.

Thor Haugland:

«Galt å sende ut oppsigelsene nå»

—Jeg synes det er beklagelig at slikt skal skje nå på denne tid. Vi har alle visst at vi må ned på et antall på mel-

lom 177 og 180. Man burde ha ventet litt og sett situasjonen an, sier kasserer Thvr Haugland, i avd. 44.

Dette har medført at lokalsamfunnet og distriktet står i en forverra situasjon.

Tyssedal protesterer skarpt mot det kyniske spillet regjering, Storting og bedriftsledelse nå gjennomfører. I



disse protestene har spørsmålet om krafta som siste kampmiddel blitt stilt.

Styret i avd. 43, Tysso Elektrikerforening, har diskutert saken og kommet til at før vi kan fremme forslag vil vi ha diskutert saken med de fagorganiserte i distriktet og forvisse oss om at støtte og garantier. Vi ber om svar på følgende.

1. Godkjenning av en stopp i kraftleveransene ut av kommunen.

2. Garantier for økonomisk støtte til aksjonen.

3. Eventuelle økonomiske erstatningsansvar fordeles på de fagorganiserte i distriktet.

4. Represalier mot medlemmer av avd. 43 skal møtes med full streik i distriktet.»

Fellesstyret for dei tre kjemiske fagforeningane, avd. 5, avd. 44 og avd. 61 av Norsk Kjemisk, handsama saka 18.10.82 og gjorde følgjande vedtak samrøystes:

«Fellesstyret for avd. 5, 44 og 61 av NKIF slutter fullt opp om avd. 44 sitt krav om at 262 personer blir sikret sysselsetting fram til 262 permanente arbeidsplasser er etablert, og at oppsigelsene ved DNN blir trekt tilbake.

Fellesstyret ber Odda og Omland Faglige Samorganisasjon om å innkalle til representantskapsmøte snarest, slik at fagbevegelsen i distriktet samlet kan ta ansvaret for å få dette kravet innfridd.

Tysse-dalskrafta vil etter vår mening stå sentralt i denne samanheng.»

Velforeningen Leve Tysse-dal har samla 2000 underskrifter i aksjonen sin med trugsmål om å stoppa krafta. 25. oktober var det på ny fullsett samfunnssal i Tysse-dal og folkemøtet gjorde eit samrøystes vedtak der det m.a. heiter:

«Krava våre skulle vera sjølvsgatte:

— trekk oppseieingane attende,

— midlar til sysselsetting av 262 personar inntil 262 permanente arbeidsplassar er etablert.

Diverre er det lite som tyder på at styresmaktene har til hensikt å innfri krava våre. Eit samla folkemøte ser seg difor nøydde til å gi sin fulle støtte til at kraftleveransane ut av kommunen blir stoppa inntil krava våre er innfridd.»

Leiinga i avd. 44 var til stades på møtet.

# ELEKTROKJEMISK ARBEIDERFORENING

AVDELING 44  
TYSSEDAL



5770 Tysse-dal den 05.10.1982

VEDTAK PÅ MEDLEMSMØTE I ELEKTROKJEMISK ARBEIDERFORENING  
AVD.44 DEN 05.10.1982

Avd.44 protesterer på det skarpeste mot nye reduksjoner i arbeidsstyrken ved DNN Aluminium i Tysse-dal. Blir oppsigelser og førtidspensjoner gjennomført, betyr det rasering av lokalsamfunnet, og er et gigantisk brudd med de mange vakre ord i Stortinget 7 juni i år. Flertallet hevdet da at Ilmenitt-alternativet virkelig skulle sikre arbeidsplassene i Tysse-dal.

Avd.44 kan på ingen måte akseptere oppsigelser nu, uten at alternative arbeidsplasser er etablert. Vi vil derfor drøfte med våre fagforeningskamerater i Tysse-dal og Odda, muligheten av å ta i bruk siste kampmidealet vi har: KRAFTA.

Vi krever at oppsigelses trusselen blir trekt tilbake, og at vi får midler til å sysselsette 262 arbeidstakere inntil 262 permanente arbeidsplasser er etablert.

*Entl. vedtatt.*

*J. Kjøglund  
Sekr.*

## TYSSEDØLER!



Stadig nye permitteringer – oppsigelser  
– trussel om utkastelse – mangel på  
sysselsettingstiltak – brutte løfter...

Problemen som tårner seg opp i Tysse-dal kan vi ikke løse hver for oss.

Kom derfor på

## FOLKEMØTE

i Samfunnshuset i Tysse-dal  
MANDAG 25/10 KL. 18,30

ALLE TYSSEDØLER MÅ KOMME!  
ALLE ODDINGER ER OGSÅ VELKOMNE!  
SAMHOLD GIR STYRKE



## Enno eit samrøystes vedtak...

Dagen etterpå vart det møte i representantskapet i Odda og Omland faglige Samorganisasjon med sakliste:

DNN-saka — krafta.

Dei tillitsvalde i Tysso Elektrikerforening kunne på ingen måte garantera at medlemmene ville støtta ein aksjon der kraftleveransane ut av kommunen blei stoppa. Men for at styret ville anbefala medlemmene ein slik aksjon, var det eit vilkår at fagrørsla i Odda slutta fullt opp om aksjonen og stod saman i ein kamp mot evt. represalier mot foreninga eller enkeltmedlemmer. Enno ein gong var det medlemmer av styret i avd. 44 som var skeptisk. (Her er det kanskje på sin plass å minna om at berre ein person i styret stod i fare for å misssa jobben — og det var Nils Moldøen.)

Nils Moldøen fremma forslag til vedtak, som etter eit par redaksjonelle endringar, blei vedteke samrøystes sendt ut til fagforeningane til uttale.



Folkemøtet i Tyssedal diskuterer bruk av krafta som kampmiddel. (Foto: O. Iglebøk)

## KRAFT FRA TYSSedal KAN BLI STANSET —!

Samorg. ber foreningene diskutere saken

Odda og Omland faglige samorganisasjon henstiller nå til samtlige fagforeninger i sitt distrikt om å ta opp til alvorlig vurdering en stans av kraftleveransene fra Tyssedal inntil arbeidsplassene i Tyssedal er sikret. Samorganisasjonen understreker at Tyssedal skal sikres 262 arbeidsplasser, eller like mange som det planlagte aluminiumsverket ville ha sysselsatt. Samorganisasjonen støtter også kravet fra Tyssedal om at oppsigelsene ved DNN må trekkes tilbake.

I vedtaket heter det bl.a. at situasjonen for Tyssedal og Odda blir verre for hver dag og for hver uke som går. 400 statsgaranterte arbeidsplasser er om kort tid redusert til 140 høyst usikre arbeidsplasser. Mot denne bakgrunn henstiller samorganisasjonen samtlige foreninger å ta opp til diskusjon om man ikke bør stanse krafteksporten inntil de politiske myndigheter har innfridd de løfter de har gitt.

Samorganisasjonen henstiller også til samtlige

foreninger i distriktet å diskutere følgende forslag til vedtak:

Fagforeningene støtter stopp av kraftleveransene ut av kommunen.

Fagforeningene vil stå skulder ved skulder med våre arbeidskamerater i Tysso Elektrikerforening dersom de vedtar eventuelle aksjoner. Alle angrep på medlemmer i avd. 43, vil bli betrakta som angrep på oss selv.

Represalier på medlemmer i avd. 43 vil bli møtt med aksjoner.

Økonomisk støtte.



## Åpen «krig» mellom avd. 44 og dir. Solheim om permitteringer —

Neste dag, onsdag 27. oktober, er det mykje «interessant» lesestoff i Hardanger Folkeblad.

På side 12 kan dei som nettopp har fått oppseiinga sendt rekommandert i posten, lesa at Olaf Albertsen er fornøyd. «I første omgang er våre krav innfridd når det gjelder sysselsetting av 262 arbeidsplassar,» påstår fagforeningsformannen. Og han legg til passende optimistisk. «Nå gjenstår det å se hva slags permanente arbeidsplassar vi kan få ut av det.»!!

Det er brutt ut «åpen krig» mellom avd. 44 og adm. dir. DNN Aluminium. «Krigen» dreier seg om hvor de 35 personer som må heitidspermitteres skal tas fra. Ledelsen har plukket ut alle blant arbeiderne, mens avd. 44 mener at de 35 må fordeles over alle grupper ansatte, inkludert formenn og funksjonærer.

Det har vært to mislykkede forhandlingsmøter mellom avd. 44 og direktøren om denne saken, et fredag og et tirsdag. Det siste varte i bare 2 minutter. Der fikk avd. 44 beskjed om at den ikke hadde noe med forholdet mellom bedriften og de andre fagforeningene. Klubbformann Olaf Albertsen ved avd. 44 opplyser til Hardanger Folkeblad at saken nå vil bli tatt opp med Norsk Kjemisk.

**HF** SVEIN KNUTSEN

— Hvor mange funksjonærer var det som skulle ha gått om samme ansiennitetsprinsippet som er valgt ved oppsigelse av arbeidere var blitt fulgt?  
— Vi må se på at vi allerede har tatt en belastning på 115 av våre folk. Vi får nå en ny belastning på 38 uten at funksjonærer kommer inn i bildet i det hele oppover. Vi la fram et forslag om at vi skulle ta halvparten og de tre andre foreningene halvparten om vi var nødt til å gå til permitteringer. Vi la på bordet at vi skulle ta 15, og at Foreningsforeninga, Funksjonærene og NITO skulle fordele de resterende 17 seg i mellom. Dette gjorde vi med bakgrunn av at vi flere ganger har fått gjele beskjed om at vi ikke har anledning til å forhandle når det gjelder funksjonærene.

Det går ikke an at ei gruppe skal holdes utenfor alle permitteringer hele tiden fordi vi ikke har anledning til å forhandle og

terdig med det. Det er klart at vi for ettertida kommer til å sette opp en fordelingsnøkkel. Og enda er det for lite når en ser på antallet vi har mistet, faktisk talt over 50 prosent. Og funksjonærene er ikke blitt berørt i det hele tatt, sier Albertsen.

**KRAFTA**

På et masse møte som Veiforeringen Leve Tyssedal arrangerte mandag kveld, ble kravet om å stoppe kraftleveransene stillet. Det skal nå legges fram en utredning som går på hvilke konsekvenser en slik stopp av kraften ut av Odda vil få. Avd. 44 droftet dette spørsmålet med Samorg i går kveld. Etter det Hardanger Folkeblad erfarer er det nå delte meninger blant de fagorganiserte om man bør gå til et slikt skritt, eller ikke i og med regjeringens vedtak om å bevilge forsløp 40 millioner kroner i ekstraordinære sysselsettingstiltak. Kan det synes som å stoppe strømleveransene er blitt et noe mindre aktuelt pressmiddel.

## Regjeringen bevilger 40 millioner til sysselsettingstiltak — klubbformann Olaf Albertsen er fornøyd

**HF** SVEIN KNUTSEN

Regjeringen har bevilget 40 millioner kroner som vil dekke utgiftene for sysselsetting av ledige DNN arbeidere på ekstraordinære veiarbeider.

— I første omgang er våre krav innfridd når det gjelder sysselsett-

ing av 262 arbeidsplasser. Vi har en del her på bedriften og resten kommer i tillegg på veiarbeid. Det gikk seint å få innfridd dette kravet, men det er bra når det kommer. Nå gjenstår det å se hva slags permanente arbeidsplasser vi kan få ut av det. Jeg vet ikke hva de kan få ut av UNV-rapporten.

Blar vi så om til side 16, kan vi lesa at Albertsen ikkje er så nøgd likevel. Faktisk er det open «krig» mellom leiinga og avd. 44. Grunnen er at Adm. dir. J. J. Solheim har fått blod på tann. Sidan det gjekk så greit å seia opp 115 av dei tilsette, utan å ta omsyn verken til tidlegare lønnader eller ansiennitet, skadar det ikkje å permittera 35 personar til...



# Avd. 44 behandler DNN-kraft til uka

**Avd. 44 innkaller til et særdeles viktig medlemsmøte førstkommande tirsdag. På dagsorden står blant annet kraften.**

Avd. 44 blir den første fagforeningen som tar stilling til om krafta skal tas ut som kampmiddel etter at Samorg tirsdag kveld på et stormfullt møte anbefalte en slik framgangsmåte. I vedtaket heter det bl.a.:

«Odda og Omland faglige samorganisasjon henstiller til samtlige fagforeninger i sitt distrikt om å ta opp til alvorlig vurdering en stans av kraftleveransene fra Tyssedal inntil arbeidsplassene i Tyssedal er sikret».

Etter hva HF forstår er det svært delte meninger om tiden nå er inne til å gå til slike skritt.

Klubbformann Olaf Albertsen sier til HF at det er viktig at alle medlemmene er klar over at kraftspørsmålet vil bli tatt opp på møtet. — Alle medlemmer i avd. 44 må møte, sier han.

— Vi er den første foreningen som behandler saken etter at den har vært oppe i Samorg. Det er veldig viktig at alle medlemmene kommer på møtet under behandlingen av en så viktig sak. Det kan dreie seg om utslåing av kraft, det kan dreie seg om de arbeidsplasser vi har igjen her. Det kan og dreie seg om at vi står uten arbeid alle sammen. Konsekvensene av det bør også diskuteres på medlemsmøtet, derfor er det veldig viktig at alle møter, gjentar Albertsen.

**Stin Hysing til HF:**

## — JEG ALENE ANSVARLIG FOR KRAFTLEVERANSENE

**Ulovlig brudd kan påføre DNN inntektstap  
på 196.000 kroner pr. døgn**

**HF** ØIVIND MADSEN

— Det er bare jeg og jeg alene som har ansvaret for kraftleveransene fra A/S Tyssefaldene. Etter lov og forskrifter er det bare jeg, eller den jeg delegerer myndighet til, som kan koble ut kraften. Under alle omstendigheter vil det være mitt ansvar. Hvis andre gjør det, begår de en kriminell handling.

Det er adm. direktør Stin Hysing som sier dette til Hardanger Folkeblad i forbindelse med utspillet fra Odda og omland faglige samorganisasjon om å diskutere en stans i kraftleveransene til

DNN Aluminium. Tyssefaldene har i henhold til kontrakter leveringsplikt til DNN Aluminium. DNN-kraften selges idag til statskraftverkene, og kraftsalget er den eneste inntekten selskapet har. DNN må betale for kraften enten selskapet bruker den eller ikke. I tillegg kommer tapt fortjeneste.

Stin Hysing understreker også det enorme erstatningsansvar man pådrar seg ved å gå til et slikt skritt. Bryter man kraftforsyningen til DNN, vil selskapet tape ca. 9000 kroner

pr. time eller ca. 196.000 kroner i døgn. I tillegg kommer 2500 kroner pr. time som DNN må betale Tyssefaldene.

— Jeg anser det som helt utenkelig at noen her eller andre steder vil gjøre noe så dumt som å bryte strømmen eller gjøre forsøk på å bryte strømmen, sier Stin Hysing. — Blir det gjort, vil det være min plikt å koble kraften til igjen, men da er det allerede begått en kriminell handling, med alle de konsekvenser det fører med seg.

Dette kan ikkje vera anna enn bevisst spel for galleriet. Det som er viktig i dette intervjuet med fagforeningsformann Albertsen er siste avsnittet med tittelen «krafta».

Etter at 2000 personar har skrive under eit opprop med trussel om å nytta krafta, etter at avd. 44 sjølv har bede fagforeningane om å vurdere bruk av krafta, etter at eit samrøystes fellesstyremøte (inkl. avd. 44) støtta bruk av krafta, etter eit samrøystes folkemøte i Tyssedal, eit samrøystes representantskapsmøte i Samorg gjer tilsvarende vedtak, «erfarer Hardanger Folkeblad» at det er delte meningar blant dei fagorganiserte (les: avd. 44) om ein bør gå så langt eller ikkje.

Etter at fredagsutgåva av HF er komen ut, er det ikkje lenger tvil om kva haldning avd. 44 si leiing har til bruk av krafta som kampmiddel. Det som er mest skremmande er ikkje at fagforeningsleiinga har halde dei andre fagforeningane i Samorg og folk i distriktet ellers for narr — vore med på vedtak som dei tydeleg nok har vore usamde i. Dei mest alvorlege er den kyniske splittelsen dei legg opp til. Med orda «Det kan dreie seg om utslåing av kraft, det kan dreie seg om de arbeidsplasser vi har igjen her. Det kan dreie seg om at vi står uten arbeid alle sammen,» appellerer fagforeningsformannen til dei mest tilbakeleggjande holdningar hjå arbeidsfolk: Møt på medlemsmøte — sei nei til kamp for arbeidsplassane til dine oppsagte kameratar, fordi våpenet som evnt. må nyttast trugar din eigen arbeidsplass. Alt rop om solidaritet, alle for ein — ein for alle, eller «krafta er vår — den skal brukes i Tyssedal!» som var formannen si eiga parole 4. nov. eitt år tidlegare — alt dette er som blåst bort frå formannen sin argumentasjon. Og styret i foreninga har enno ikkje hatt møte på saka...



## HF er god å ha!

Hardanger Folkeblad tok oppgåva si på alvor. Neste mann ut er redaktøren sjølv som slår stort opp at adm. dir. Stin Hysing ved A/S Tyssefalderne ser på seg sjølv som einherskar over Tyssedalskrafta.

Men hovudpoenget både for avisa, Hysing, Solheim og fagforeningsformann Albertsen er å skremma folk med erstatningsansvaret: 196 000 kr. pr. døgn står det i avisa. På fagforeningsmøtet dagen etterpå er beløpet auka til 276 000 kr. pr. døgn — og dette må ein belaga seg på å betala om ein vil slå av straumen!! Så endelig blei saka teke opp i avd. 44.

### «Sak 2. DNN-saken.

Formannen refererte punkter avd. 43 har satt opp som betingelser for at det skal komme på tale å stenge krafta. Det sannsynlige økonomiske tap for DNN ved en eventuell kraftstopp vil beløpe seg til kr. ca. 276 000,— pr. døgn. Statskraftverkene vil sannsynligvis bli berørt da deres kraftressurser tas sist og det er kapasitet til lagring. DNN har faste utgifter på 18,3 mill. kr. i året. Hvis disse inntekter som kraftsalget gir, faller bort, vil lønnsutbetaling stoppe ganske snart. Det kan og stoppe prosjekteringen av Ilmenittverket. Dette kan bety en lokal nedbygging av Tyssedal, sa han og gav så ordet fritt.

På møtet blei det til og med nedstemt eit forslag om å invitera representantar frå avd. 43, Tyssø Elektrikerforening til å vera til stades på medlemsmøte. Til seinare bruk, ber vi lesaren om å merka seg nestformann Helge Fedje sin godkjente, protokollførte uttalelse: «Fedje kunne ikke se noe positivt med å slå av krafta nå. Han lurte på om de fagorganiserte i Odda kan klare å slå tilbake slike konsekvenser som her er listet opp.»



**ODDA KJEMISKE ARBEIDERFORENING**  
AVD. 61, BUSTETUNSGT. 7, POSTBOKS 40 — TELEFON 4168 — 41011 — LINJE 110

(Ref 4/11-82)  
Fullmakt  
Sak 6

STOPP AV KRAFT UT AV KOMMUNEN.

ETTER OPPFØRNING FRA ET SAMLA REPRESENTANTSKAP I ODDA SAM.ORG. HAR STYRET I ODDA KJEMISKE ARBEIDERFORENING, AVD. 61, BEHANDLA DEN SAKEN OG SPØRSMÅLET OM Å STØTTE TYSSØ ELEKTRIKERFORENING VIST DE FATTER VEDTAK OM Å STOPPE KRAFTLEVERANSENE UT AV KOMMUNEN.

VI ER NOE OVERÅSKA OVER MEDLEMSMØTE-VEDTAKET FRA AVD. 44 OM AT DE IKKE VIL STØTTE STOPP I KRAFTLEVERANSER UT AV KOMMUNEN PÅ DET NÅVÆRENDE TIDSPUNKT.

SOM FAGORGANISERTE OG ODDINGER HAR VI UNDER HELE KAMPEN FOR Å OPPRETHOLDE SYSSLESETTINGEN I TYSSDAL STILT OSS LOYALT BAK AVD. 44 OG SLOSS SAMMEN MED DE FAGORGANISERTE I TYSSDAL.

ARBEIDERKLASSEN I NORGE ER UTSATT FOR HARDE ANGREP FOR TIDA. NEDBEGGELSER, OPPSIGELSER OG PERMITTERINGER HØRER TIL DAGENS ORDEN. ALT TYDER PÅ AT DETTE VIL FORVERRES.

ODDA ER EN DEL AV DETTE BILDET. FOR Å SLÅ TILBAKE DE VERSTE ANGREPENE TRENGS EN KAMP-VILLIG OG STERK FAGBEVEGELSE. DET ER HANDLING SOM ER AVGJØRENDE, ORD ALEINE HJELPER IKKE.

I EN SLIK SITUASJON HAR VI SOM FAGORGANISERTE ET STORT ANSVAR. UTFALLET AV DEN SAKEN VIL FÅ STOR INNVIKLING BÅDE I ODDA OG UTOVER LANDET. GIR DEN ARBEIDERNE OPP, KAN KONKLUSJONEN BLI AT DET NYTTIER IKKE Å KJEMPE. OG HVIS DET SKJER VIL KAPITALEN KUNNE RASERE FRITT, OGSA I ODDA. I DEN SENERE TIDA HAR VI SETT AT REPRESENTANTER FOR BEDRIKTENE HAR GÅTT UT MED SKREMSLSPROPAGANDA MOT Å STOPPE KRAFTA UT AV KOMMUNEN OG TRUA MED STORE ERSTATNINGSBELØP. VÅR HOLDNING TIL DETTE ER AT EN SAMLA FAGBEVEGELSE I ODDA / TYSSDAL MED LETTHET VIL SLÅ SLIKE TRUSLER TILBAKE.

AVD. 44 HAR UTTALT AT DE IKKE SER BORT FRA Å BRUKE KRAFTA VIST REGJERINGEN IKKE OPPFyller SINE LOVNADER OM ILMENITTSMELETVERK OG 262 PERMANENTE ARBEIDSPLASSE. VI VURDERER SITUASJONEN SLIK I DAG AT STOPP I KRAFTLEVERANSENE SKULLE VÆRT SATT UT I LIVET NÅ. VI KONSTATTER IMIDLERTID AT DET IKKE ER ENIGHET OM DETTE NÅ. VI FINNER DET DERFOR RIKTIG Å AVVENTE SITUASJONEN.

VI VIL BE OM AT SAMOG. INNKALLER TIL REPRESENTANTSKAPSMØTE, SLIK AT VI KAN FÅ OPPSUMERT OG KLARLAGT SITUASJONEN.

Odda Kjemiske Arbeiderforening  
inndrag 61 av N.R. I.F.

Hans Solheim  
Formann

Pu Knutsen  
Sekretær

**Direktør Solheim advarer**

**fagforeningen mot overilte**

**aksjoner om å stoppe krafta —**



De fagorganiserte ved DNN:

# Ingen stans av kraft-leveransene

Ønsker ikke drastiske protest-tiltak

Vi ser det ikkje som det minste rart at fleirtalet i styret fekk fleirtalet på medlemsmøtet med seg. Dei valde tillitsmennene med to administrerande direktørar pluss lokalavisa i ryggen, skal det mykje til å stå i mot. Ikkje minst når det gjeld ein kamp som nærmast krev bortimot 100% semje blant dei som skal aksjonera. Mange av dei oppsagte var nedslegne etter oppseiingane, og ikkje minst etter dei mange svikeyfulle oppslaga i Hardanger Folkeblad, og såg truleg liten vits i å møta opp. Dei som kørte var oppsagt eller permittert, klamra seg så best dei kunne til håpet om at det kunne koma eitkvart nytt og blei nærmast tvinga til å støtta leiinga.

«Medlemsmøtet i avd. 44 kan ikke støtte et eventuelt vedtak om å stanse kraftleveransene ut av kommunen på nåværende tidspunkt. Avdeling 44 ser likevel ikke bort fra at bruk av krafta som et kampmiddel må være like aktuelt dersom Regjeringen ikke sørger for de bevilgninger som må til for bygging av og sikker drift av et ilmenittsmelteverk i Tyssedal. Kravet om 262 permanente arbeidsplasser er fremdeles et minstekrav.

Avd. 44 vil ikke med dette vedtaket frata andre foreninger muligheter til å uttale seg i saken».

## Tap for «haukene»

Gårsdagens vedtak i avdeling 44 er nok et tap for de mest kampvillige «haukene» i foreningen. Men etter det Haugesunds Avis har fått vite, var denne meget taleføre delen av foreningen svært langt fra å få gjennom sitt syn om å ta i bruk krafta som kampmiddel nå.

Saka fekk eit etterspel i representantskapet i Samorg 16. desember der avd. 44 og formannen måtte tåla kvass kritikk for framgangsmåten

ovanfor dei andre foreningane og ikkje minst for bruken av pressa. Dette møtet konkluderte med eit samrøystes vedtak som sa at Samorg

også i framtida vil vurdere vidare bruk av krafta som eit kampmiddel for å sikra arbeidsplassane i Odda-regionen.

## Tyssedal – skal kampen fortsette?

Kampen knytta til Tyssedals framtid har vært langvarig. Vi skal ikke i denne omgang ta for oss å oppsummere hele denne perioden, men si noe om den situasjonen vi er oppe i no.

Det som har kjennetegnet de siste 2-3 år har vært stor enhet og kampvilje i fagbevegelsen og befolkningen. Sjølv om situasjonen no er verre enn noen gang, bør vi se på om vi har oppnådd noe i kampen. Streiken 4. nov. i fjor var et stort press som fikk mellompaktene til å gå med på en bevilgning på 100 millioner til fortsatt anleggsarbeid. Vi vant en midlertidig seier. Streiken i juni i år, som vel var den største markeringen i Oddas historie, førte ikke til at vi fikk flertall i Stortinget for aluminium.

Men det store presset førte til at et flertall på Stortinget bedyret at Tyssedal allikevel ikke skulle tape noe som helst. Dette var en liten delseier som la grunnlag for

å ta Stortinget på ordet. Uti fra dette blei kravet om sysselsettingsmidler for 262 personer inntil 262 nye arbeidsplasser var etablert, reist av kommunestyret og fagbevegelsen. Bak disse kravene sto trusselen om å slå av av krafta som det viktigste – for ikke å si – eneste kampmiddel.

Etterhvert som dette spørsmålet blei reist – først av Leve Tyssedal, deretter av avd. 44, og til slutt Sam. org. – økte presset på myndighetene. Bevilgningen av sysselsettingsmidler til 80 årsverk, må sees i denne sammenheng. Dette viste at det var mulig å presse myndighetene. Men også dette var bare en delseier og kunne derfor ikke løse problemene for Tyssedal.

I en slik situasjon syns vi det er beklagelig at avd. 44 rett før statsbudsjettbehandlingen, vedtok å ta bort trusselen om krafta som pressmiddel. Aldri har Høyre-regjeringa stått friere

i Tyssedalssaken enn de gjør no, og det når status er: Oppsigelsestida for 115 DNN-arbeidere er starta, nye 35 er permitterte fra 8. november 1. januar 1983 vil det i beste fall være 145 personer igjen på DNN. Ca 80 av disse vil være medlemmer av fagforeningen. Nye permitteringer er antydning etter nyttår (BT 2/11). Medlem av Industrikomiteen Inger Lise Gjerv opplyser at ho ikkje kan tru på at det blir noe ilmenittverk.... Vi har tidligere karakterisert ilmenittverket som et luftslott, det er det fortsatt.

Vedtaket betyr også at de 115 oppsagte ikke lenger har ei fagforening som kjemper for det kravet om å trekke oppsigelsene tilbake er gitt opp, også kravet om sysselsettingsmidler for 262 personer, og alt dette skjer altså før statsbudsjettbehandlingen.

Vedtaket har dessverre ført til splittelse i fagbevegelsen, og det i et tid da behovet for enhet er større enn noensinne. Den kapitalistiske krisa slår no innover Norge for fullt. I Odda-distriktet er det fare for reduksjon på både KV, Smelteverket, Hovland og Høyer Ellef. senb. Hver arbeidsplass som

går tapt er et tap for hele samfunnet, derfor er enhet og kampvilje helt avgjørende for å gjøre skadene minst mulig. Det må være et varsko for fagbevegelsen at skremselpropaganda fra to direktører (DNN og Tyssedalsdane) om erstatningskrav i millionkassen, skal kunne presse ei fagforening til å gi fra seg sitt viktigste våpen – krafta. Vedtaket var selvfølgelig bare mulig fordi det blei presentert en medlemsmasse som i månedsvis er terrorisert, tråkka på, trua på gata av regjering og bedriftsledelsen, og ikke minst fordi skremselpropagandaen aktivt blei støtta opp om av fagforeningsstyret, uten at de viste til at en samla fagbevegelse kunne slå dette tilbake.

Vedtaket har i stor grad ødelagt muligheten for en aktiv kamp, på grunnlag av tidligere krav. De arbeidsløse har ikke lenger ei fagforening som ivaretar deres krav.

Dette har splitta avd. 44. Når det gjelder vurderingen om å bruke krafta hvis ikke det blir bevilga til et ilmenittverk virker dette

urealistisk. Iså fall betyr det at krafta skal brukes når alt er tapt, og trusselen om erstatningsansvar vil vel ikke bli mindre i en slik situasjon. Vi har vanskelig for å tru det er alvorlig ment.

Arbeidsledigheten i Odda er allerede stor og vil øke framover. Sjølv om noen ville ønske det, kan de ikke bare flytte til andre jobber. Derfor må de arbeidsløse organisere seg, og sammen med fagforeningene reise kampen her. Det finnes to veier å gå, enten organisert, å ta opp kampen, eller forbli i passivitet og håpe på det beste. Det er bare den første som vil gi resultater.

Kampen om arbeidsplasser og sysselsettingsmidler må prioriteres. Kampen for 6 timersdagen og lavere pensjonsalder må være en selvfølge. I dette arbeidet må vi knytte kontakter over hele landet for å samordne våre krefter. Bare da kan vi oppnå resultater. Vil AKP (m-l) vil aktivt jobbe for at dette skal skje.

Vidar Våde  
AKP (m-l) i Odda og Tyssedal



# ELEKTROKJEMISK ARBEIDERFORENING

AVDELING 44

TYSSedal



5770 Tyssedal den 03.12.1982

Velforeningen Leve Tyssedal

v/Nils Moldøen

5770 Tyssedal

## INVITASJON TIL FELLESMØTE

Avd.44 har registrert at et slikt samarbeide med Velforeningen ikke er tilstede, da det har vist seg at ledelsen i Velforeningen gang på gang direkte har motarbeidet avd.44 og i flere tilfeller undergravd vedtak som er fattet i avd.44.

Styret i avd.44 kan derfor ikke på nuverende tidspunkt se at det er grunnlag for et slikt møte med Velforeningen og beklager dette.

Styret i avd.44 vill også bemerke at formannen i Velforeningen Leve Tyssedal er medlem av styret i avd.44. Det skulle derfor ikke vert vanskelig med et slikt samarbeide, dersom formannen i Velforeningen Leve Tyssedal hadde vist vilje til dette på et langt tidligere tidspunkt.

Styret i avd.44 vil derfor beklage at vi ikke finner grunnlag for å være tilstede på et slikt møte.

Med hilsen  
Elektrokjemisk Arb. Forening

avd. 44, N.K.I.F.

*Olaf Albertsen*  
Olaf Albertsen  
formann

Leve Tyssedal ba om eit fellesstyremøte for å drøfta kva *former* arbeidet for Tyssedal bør ta i tida framover samt styrka samarbeidet mellom dei tre organisasjonane. Tyssø Elektrikerforening ønskte møtet velkommen, medan avd. 44 sende følgjande kryptiske svar.

HAUGESUNDS AVIS

## Tyssedals-revy med innslag om DNN-saka

Tyssedølene har hatt liten grunn til å juble over utviklinga i DNN-saka. Men det er likevel grunn til å rekna med storinnrykk og jubel når det lordag kveld blir invitert til kulturkveld med revy-innslag, song og musikk i samfunnshuset.

Naturleg nok er det DNN-saka og problema den har skapt for folket i Tyssedal og lokalsamfunnet, som står i høuset i revy-innslaga. Kritikken mot politikarane si handsaming av denne saka har vore massiv. Og generalprøven på Tyssedals-revyen onsdag kveld viste klart at kritikken ikkje blir mindre treffande når den blir framført som revy-innslag i ord og tonar.

Industriminister Jens Hallvard Bratz er mellom dei som får passet sitt påskrive. I eit av revyinnsлага blir det avduka ei statue av mannen bak den nye industripolitikken i Tyssedal. Ein industripolitikk som så langt ikkje har skaffa Tyssedal noko anna enn problemar og arbeidsløys.

Det er velforeninga Leve Tyss-



Kjell Folkvord i rolla som ein gamal anleggsslusk som sit oppe i skyene og følgjer med og kommenterer det som skjer i Tyssedals-samfunnet og DNN-saka.

dal som er arrangør for kulturkvelden. Det blir også ei rekke andre innslag og kvelden blir avslutta med ei dansetilstelling.

## Revy-suksess

Styret i Leve Tyssedal er for tida mest oppteken med tiårets største revysuksess i Tyssedal, og kjenner seg ikkje råka av kritikken.

Men revyen er ikkje berre revysuksess, det er også ein politisk siger for Leve Tyssedal. Tyssedølene er no klår over at dei har ein organisasjon som kan føra kamp for arbeidsplassane og for lokalsamfunnet, men som også er med å gjera Tyssedal til ein trivelegare plass å leva i — trass alle problema ellers.



# Suksess for politisk DNN-revy i Tyssedal

Av Vidar M. Solheim

Ei talentfull samling amatører presenterte laurdag kveld «Tyssedal Cabaret» for ein fullsett sal i samfunnshuset. Den politiske revyen tok utgangspunkt i DNN-saka. Og gjennom humor og ironi blei det retta angrep mot dei ansvarlege politikarane, mot industrileiarar og mot toppleiinga ved DNN. Men revyen hadde også plass for andre innslag. Med Gudrun Læg Reid som konferansier blei det framført ein herleg parodi på moteoppvisning med mannlege modeller utkledd som kvinner. Kvelden baud også på musikkinnslag, allsong, utlodning og sist men ikkje minst dans.

I DNN-revyen tok Gudrun Læg Reid for seg arbeidsløysa og problema den fører med seg. Kjell Folkvord som «Knall-Kalle» førte tråden tilbake til den gongen rallarane la grunnlaget for Tyssedal. Og han slo fast at ein ny fabrikk er det finaste rallar-monumentet Tyssedal kan få.

Evy Thrane og Synnøve Meland hadde ei «helsing» til Høgre og statsministeren med «Lille blåmann min due». Dei to same aktørane sitt innslag om Mor Tyssedal

sine born, fortener også ein blom. Dei snakka om eldstebarnet «Alumina» som døydde. Dei stolar heller ikkje på at «Ilmenitta» skal veksa opp og gje arbeidsplassar. «Illusjona» og «Depresjona» er to av dei andre døtrene til Mor Tyssedal som har vore på visitt. Men sjølv set tyssedølene stort håp til at «Vilja» og den elektriske krafta skal skaffa Tyssedal ei framtid.

Frank Sjøfteland og Arne Erikssen hadde lita godt å seia om rikspolitikarane, der berre Aksel Fossen fekk godkjent karakter. Tyssedølene har heller ikkje gløymt Hans Olav Tunesvik, som trykte på feil knapp under røystinga i DNN-saka. Industriminister Jens Hallvard Bratz fekk i revyen den statua han har ønska seg i Tyssedal, og aktørane delte ut ris og spark til storkapitalen som gløymer menneska.

Gudrun Læg Reid tok galgenhumoren i bruk for å skissera utviklinga i Tyssedals-saka. Frå aluminiumsverk med 280 tilsette til det planlagte ilmenittverket med 170. Ho såg også for seg framtidige alternativ før ho enda med etablering av pølsebu med 1 tilsett.

Terje Kollbotn viste seg som ein førsteklases stemmeimitator og tok mellom anna for seg stortingspresident Per Hysing Dahl. Derimot var han ikkje like heldig med resten av rolla som stortingspresidenten, der han overspelte litt for mykje.

# Festfore

## REVY-SANGEN

Kjære venner la oss se litt på Tyssedal. Den kan synes trist og grå kanskje også smal. Men vi samles her i kveld til en kraftig, frisk appell. Slutt opp om dalen vår i mange, mange år!

Vi har rett til å protestere  
Vi vil kjempe for hjemmet vårt.  
Kjærighet og energi  
det kan Tyssedal oss gi  
så vær med og slipp kreftene fri

Opp igjennom mange år  
har vi jobba trutt.  
Ingen hadde noengang  
trodd at det tok slutt  
Men vi gir oss ikke nå  
hverken store eller små  
Med sang og spell og smell  
Vi koser oss i kveld.

Ref.:

Ja, vi spør oss nå i kveld  
hvordan skal det gå?  
Skal det bli et trist farvel  
til kjære dalen vår?  
Skal vi være her og slåss  
alle vanskene til tross.  
Slutt opp om dalen vår  
i mange, mange år.

Ref.:

Marta Nikolaisen





# stilling i Tyssedal

## Feststemning i Tyssedal lørdag



Det var feststemning i Tyssedal lørdag kveld. Ingen tvil om det. Velforeningen Leve Tyssedal! slo til med revy, og for en revy det ble. Et stappfullt samfunnshus moret seg fra begynnelsen til slutt. Her kom de mange og gode poengene som peler på en snor.

Selve cabareten varte et par timer, avbrutt av tre loddsalg. Og stemningen var like høy hele tiden. Aktørene fikk hele tiden publikum med seg.

Her var det humor, ironi, godt blandet sammen med litt alvor. Og blandingen slo meget godt an.

Aktørene, som kaller seg amatører, kom meget bra fra oppvisningen. Alt som ble vist lørdag kveld, var skrevet av aktørene selv.

Og de som ikke var i Tyssedal lørdag, kan angre.

Å trekke frem noe spesielt under cabareten er vanskelig, å nevne alt er umulig.

Den litt unike mannequinnoppvisningen slo bra an. Det skulle være kjent for de fleste at Norges ukronete modellkongen, Per Spook, holder til i Paris. Gjennom sin bror i Odda, fikk Tyssedal-cabareten lånt syv av hans mannequinner til lørdagens festforestilling.

De mer eller mindre på- og avkledde mannequinner, for anledningen i mannskikkelser, løftet stemningen til et klimaks. Og Gudrun Læg Reid kom godt fra oppgaven som konferansier.

Den røde tråden gjennom cabareten, eller revyen om man vil, var Tyssedalssaken. Og hva er vel mer naturlig enn at DUE, Bratz, Tungesvik og NRK-reportere var representert.

Tredje og siste avdeling var i det store og hele viet Dagsrevyen. Det var overføring fra Stortinget. Stortingsrestauranten og slevfølgelig Tyssedal. En heder ble gitt til Bratz, som hadde greid å få sysselsatt to personer i Tyssedal. En statue, i Nils Måldøens skikkelse, ble avduket i Tyssedal.

Dagsrevy er ikke Dagsrevy uten værkartet. Jon Vike kåserte om den kalde høyrevinden som preget Vestlandet. Og kveldens langtidsvarsel var, selvfølgelig hadde vi nær sagt, Leve Tysseda.

Sysselsettingen i Tyssedal var og er et problem. Gudrun Læg Reid kom med sine betraktninger på det området. Det begynte med 260 ansatte i aluminiumsfabrikk, og endte oppå med en ansatt i en pølsebod med primus.

Skal man trekke fram noe så må det være Gudrun Læg Reid og Evy Trane i «Lille blåmann min Due» med Frank Søfteland som dirigent. Undertegnede falt også for trio. Frank Søfteland, Gudrun Læg Reid og Arve Erikssen i deres versjon av «Folk og røvere i Kardemommeby».

### MINUS

Revyen var i det store og hele flott gjennomført. Et lite minus-trekk var de tre rundene med loddsalg. Dette stykket opp revyen mer enn nødvendig. Pausene ble for lange. Man kom vekk fra flyten i revyen.

Men hovedhensikten var å more folk, og det greide de.

Marianne.

### STATISTIKK-VISE

(Mel.: Har du hørt den nye visegruppa)

Det er skrevet i avisen, det er sagt i NRK at det bare blir problemer når du arbeidsløs må gå. Du blir søvnløs og humørløs, appetitten din blir skral, dette kjennetegner folk fra Tyssedal.

Du får podagra og isjas, diaré og anemi, du får lymfeknuter, åreknuter, gikt og allergi, soriassis, influensa, øresus og impotens, og lumbago og delirium tremens.

Du blir grinete mot ektefellen, ungene får bank, du blir stiv i nakkemuskene fordi du driver dank. Du får mageknip og hueverk, blir lemster, stiv og støl, nå er det ikke greit å være Tyssedøl!

Men når alltid er som møkrest, intet lysglimt er å se, skal du vite at du ikke er helt nytteløs for det. Om du ikke får anledning til å jobbe på fabrikk kan du brukes når det lages statistikk.

Men vi ønsker deg velkommen til vår lille kabaret. Den har intet annet formål enn å få deg til å le. Du skal glemme dine plager, slå deg løs og vær deg sjøl. Ennå bruser blodet i en Tyssedøl!

Gudrun Læg Reid



# Tverrpolitisk plan for å rasera distrikts-Norge?

Av: Nils Moldøen

## Lang og hard vinter

Vinteren er likevel både lang og hard i Tyssedal. Etter eit par månader på arbeidsløysetrygd får flesteparten av dei oppsagte og permitterte arbeid på Vegvesenet. Svært få av dei tyrkiske framandarbeidarane og berre ei kvinne får vegarbeid — ei sysselsetting som gjeld for 2—4 månader om gongen, men er lovd å vara ut 1983.

Men planane for ilmenitt-verket let venta på seg. I Stortingsdebatten 7. juni, blei det sagt at ein rekner med at anleggsarbeidet skulle starta ved årsskiftet. Alt sommaren -82 var ein klar over at det blei utsetting. Så skulle den nye proposisjonen leggast fram over nyttår — og ikkje i november som tidlegare sagt. Utpå nyåret blei det nye utsettingar, bokstaveleg tala gjekk både vinter og vår før vi fekk vita noko.

Buvik-utvalet si innstilling vert lagt fram 9. mars, uten at media ser ut til å reagere spesielt. Etter ein måned tek fagforeningar og tillitsvalde rundt om til å reagere. I Stortingsproposisjon nr. 74 (1982-83) som m.a. omhandlar visse løyvingar til Jernverket, Koksverket, Sydvaranger og Sulitjelma Gruver legg Regjeringa stor vekt på dei vurderingane Buvik-utvalet har lagt fram og seier m.a. at: «... utredningen er et viktig materiale for den vurdering som Regjeringen nå ønsker å foreta.»

Dette betyr at Buvik-utvalet sin politikk ovanfor dei einsidige industristadane vil bli lagt til grunn for Regjeringa sine vidare planar og opplegg for m.a. statsverksemdene på dei einsidige industristadane.

På ein konferanse i Odda går ein skarpt i mot innstillinga og henviser både til Tyssedal og andre industristader. Indignasjonen over LO og spesielt Jan Balstad si rolle i utvalet er grenselaus.

I den mest hektiske innspurten av Tyssedalskampen for knappe året sidan, slo me fast at Tyssedal var ein prøvestein for dei einsidige industristedene i Distrikts-Norge.

Klarte dei å leggja ned Tyssedal, ville borgarskapet (makthavarane) med Høgre-regjeringa i spissen syta for tilsvarende med Sør-Varanger, Sulitjelma, Sauda, Ålvik osv. Tradisjonsrike hjørnesteinsbedrifter ville ikkje få livets rett om dei ikkje kunne framvisa maksimalprofit.

Dessverre er me ofte utruleg sannspådde!

Ikkje berre ser me at ei lang rekke enkeltbedrifter har problemer, men 9. mars i år la det regjeringsoppnemnde «Buvik-utvalet» fram sjølv planane for rasering av industrien i Distrikts-Norge. På toppen av alt er det fare for tverrpolitisk semje i Høgre og DNA om ein slik politikk.

### Buvik-utvalet om einsidige industristader

Denne planen opererer med ei liste på 104 nye Tyssedaler. 104 einsidige industristader som vert dømd til undergang om ein ikkje klarer seg i kampen om maksimalprofit. 220 000 menneske si framtid er knytta til denne innstillinga og ho er alt nytta som grunnlag t.d. for fellesproposisjonen for Syd-Varanger, Mo og Sulis. At beviset no kjem for at ilmenittverket ikkje var anna enn eit luftslott, er heilt i tråd med Buvik-utvalet.

Medan me i Norge i 50- og 60-åra opplevde ei strukturrasjonalisering med folkeforflyttingar frå jordbruk og fiske til industriarbeidsplassar på tettstadene — utviklar ein no planar for å strukturrasjonalisera folk frå dei same industriarbeidsplassane og inn i arbeidsløysa!

Blant «nye virkemidler» i utvalet sitt handlingsprogram står m.a. følgjande: «På særlig isolerte industristeder vil det i spesielle situasjoner kunne være aktuelt å nedbygge hele lokalsamfunnet»!!

Den magiske trylleformularen er ellers uttrykket «omstilling». «Omstilling til virksomhet som antas å gi lønn-

somhet på sikt» — sjølv sagt utar... peika på kva det skal vera i ein kriseramma verdensøkonomi. Ikkje rart at innstillinga set likskapsteikn mellom orda «omstilling» og «nedtrapping».

### Hjørnesteinsbedriftene

Hjørnesteinsbedriftene i lokalsamfunnet kan gjevast kontant tilskot i en avgrensa periode dersom følgjande to krav vert oppfylte:

1. Ein plan for nedtrapping/omstilling til verksemd som vil gi varig og lønnsom drift må leggast fram til godkjenning av det sentrale organ som administrerar løyvinga.
2. Bedrifta legg fram ein plan som viser korleis leiinga og tilsette skal medvirke til å letta omstillinga. Ein slik plan må innehalda ein avtale om styring av lønnsutviklinga m.m.

Så dersom dei tilsette ikkje på førehand seier Nei-takk til lønnsforhandlingar — ja, heile forhandlingsretten, kan de berre gå arbeidslause! Pengar til arbeid får de ikkje!

### Tverrpolitisk semje?

Siste nr. av Jern & Metall sitt medlemsblad kallar innstillinga eit bestillingsverk frå Høgre-regjeringa. Det er vel og bra. Men er det ikkje like godt eit bestillingsverk frå DNA? Bryt innstilling med DNA sin politikk?

Faktum er at LO-sekretær Jan Balstad og DNA-ordførar Reidun Romfo begge har vore med i utvalet utan å fremma prinsipielle dissensar. Faktum er at tidlegare DNA-statsråd Finn Lied går enda lenger. — Han som i 1979 påstod hadde flytta 11 gonger i livet sitt, utan å ha teke skade av det. Det var mange som tvila på det siste.) I ein artikkel i Aftenposten 6. april tek han til orde for **Konsensus** — «ei slags Nasjonal Samling av partier, LO, NAF, m.fl. for å få gjennomført ei tverrpolitisk, stråmlinjeforma nedleggingsbølge over Distrikts-Norge.

### Odda og Tyssedal sitt ansvar

Odda er ein av dei 104 dødsmerka stadene til Buvik-utvalet, men står, i lag med ei handfull andre stader, kanskje i ein særstilling. For det første har me klart å få belyst problema på landsplan og me

har hausta ein del lærdommar gjennom kamp. Difor har me plikt på oss til å ta initiativ som tek sikte på å kjempa for alle arbeidsplassane i Distrikts-Norge.

Tida for resolusjonar og protestskriv er omme. Motparten har lagt sine planar og er godt i gong med raseringa. Oppgåva for oss er å samla kreftene til motaksjon. Er det utenkeleg at me 220 000 kan danne ei slik politisk rørsle at det vert uråd å gjennomføra planane?

### Kva kan me gjera?

Ein av dei viktigaste lærdommane som er gjort etter ti års Tyssedalstrid: Skal ein oppnå resultater må ein lita på styrken til ein aktiv og mobilisert lokalbefolkning og lita på solidariteten i arbeidarklassen.

Heile lokalsamfunnet i streik og 300 tyssedøler i demonstrasjonstog i og utanfor Stortinget, har gjort Tyssedal til sjølv symbolet her til lands på forsvar av arbeidsplassar og lokalsamfunn.

Altå: Mobilisering av lokalsamfunnet i aksjonar må vera hovudtrekket i taktikken også i framtida.

### LO si linje

Ei slik tenking er heilt ukjent i toppen av LO. Deira linje er fullt og heilt avgrensa av lover og avtaler. Om ikkje LO har ein avtale å slå i bordet med (og det har dei som kjent ikkje!), begrensar dei sjølv sin aktivitet til å formidla kontakt mellom fagforening og stortingsrepresentantar. Støtte i ord har ein oppnådd, men handlinga har me sett fint lite til.

Slik eg ser det bør no lokalsamfunnet Odda (medrekna kommune-styret, fagrørsla, Leve Tyssedal m.fl.) i tillegg til å reisa kampen for eigne krav, utvikla kontakt og fellesaksjon med dei andre 103 einsidige industristadene i landet.

Samstundes må ein no forlarga at dei politiske partia fråkjenner seg heile det bedervelege innhaldet i Buvikutvalet si innstilling — og at dette skjer i god tid før valet.

Tyssedal 2. mai 1983



# Borgerskapets industristrategi for åtti-åra:

91. Sommerøy
92. Gryllefjord
93. Senjehøpen
94. Skaland
95. Husøy
96. Fjordgard
97. Furufelton
98. Skjervevåg
99. Arviksand
100. Kiberg
101. Sarvav
102. Breivikkholm
103. Hasvik
104. Gjesvåg
105. Høyvassund
106. Skarsvåg
107. Nønningsvåg
108. Kjøllefjord
109. Moheime
110. Gamvik
111. Barnevik
112. Båtsfjord
113. Bugøynes
114. Kirkenes

I av sytt åra har delvåking i antall årsverk i industri. Et flertal bedriftene i under 50 rapporterer om usertifiserte arbeidstakere. Så Buvik utvalgets kv denne utviklinga.



Fagforeningen Nordens Klippe tar i mai initiativet til ein konferanse om statsverksemdar på einsidige industristader med representantar frå Tyssedal, Killingdal, Mofjellet, Bleikvassli, Mo, Sulitjelma og Sydvaranger. Konferansen som vert avhalden i Sulitjelma 3.—5. juni avviser Buvikutvalet sitt forslag til handlingsprogram for dei einsidige industristadane og krev at LO tek initiativ til ein landsomfattande konferanse som m.a. må vurdera kva tiltak LO og fagrørsla må setta i verk for å hindra at denne politikken vert sett ut i livet.



LO-leiinga har ikkje høg status i Tyssedal.

(Foto: Bernt Eide)

★ **KLASSEKAMPEN** Mandag 6. juni 1983, nr. 126

# —Vi må riste liv i LO

## SULITJELMA:

I dag reiser tillitsfolk fra Syd-Varanger, Sulitjelma og Tyssedal i samla tropp til Oslo for å møte formannen sin. De aksepterer ikke at LO sitter på tilskuerbenken og ser på at lokalsamfunn blir nedlagt og avfolka.

Av NINA JOHNSRUD

LO-visitten er et direkte resultat av Sulitjelma-konferansen for bevaringa av statsbedrifter på ensidige industristeder. Konferansen konkluderte med at 102 andre lokalsamfunn er i samme bås som Sulitjelma og Tyssedal. Sulis og Tyssedal er prøvesteinene. De skal ikke få utløse et skred av nedleggelsler, lovte konferansedeltakere fra Mo, Mofjellet, Killingdal, Bleikvassli, Koksverket Tyssedal, Syd-Varanger og Sulitjelma i helga.

I tur og orden informerte de hverandre om situasjonen for hvert sted, og sjøl om situasjonen ikke er så akutt som den er for Tyssedal og Sulitjelma, har alle spøkelsener som forstyrrer nattesøvn.

— Folk i Norge trur ikke at regjeringa kan finne på å legge ned 104 lokalsamfunn og tvinge 200 000 folk til å flytte. De trur ikke virkeligheten kan være så jævlige. Erfaringene fra Tyssedal har vært verre enn våre verste antakelser, sa Nils Molden i Velforeninga Leve Tyssedal.

— LO har avvist å gå til generalstreik for Tyssedal fordi Tyssedal bare er ett av mange lokalsamfunn som er trua.

— Men hva da med oss som er i samme båt? Høyre angriper ikke alle 104 ensidige industrisamfunna samtidig. Hvis LO ikke gjør noe nå, hva gjør de da når vår tur kommer? sier Stein Larsen fra Syd-Varanger.



★ KLASSEKAMPEN Lørdag 30. april 1983, nr. 88

1. mai 1983

# TYSSedal i OPPRØR

# -Politisk svik, bygg aluminiumsverk



Her som noen gang har tyssedalinger grunn til å brette drøse partiet. FOTO: ARNE JØRAMO

— Regjeringa kan vente seg storm fra Tyssedal og Odda. Vi kan bare slå fast: Ilmenittverk får vi aldri. Vi trenger ikke flere utredninger. Det vi trenger er at Stortinget nå i mai vedtar å bygge et aluminiumsverk. I mai har vi nå omor- å redde Tyssedal.



— Vedtatt aluminiumsverk må, skriver Kjell Folkestad fra Red Fagallianse i Odda.

Av ARNE JØRAMO

Slik kommenterer RVs kommuneutvalgsrepresentant Kjell Folkestad det siste utspillet fra Industridepartementet. I mai 1983 vedtok Stortinget å bygge aluminiumsverk i Tyssedal. I mai 1982 vedtok stortingsrådet å bygge ilmenittverk basert på et helt løst forprosjekt. Da ble ilmenittverket kalkuleert til 440 millioner kroner. Nå er kalkylene kommet opp til 1500-1700 millioner kroner. Det er mer enn et aluminiumsverk vil koste.

I neste uke vil regjeringa legge fram et forslag for Stortinget om å engasjere et internasjonalt konsulentfirma for å vurdere lønnsomheten av et ilmenittverk og at Stortinget ikke skal fatte endelig vedtak før til høsten.

Nei til utsettelse

— Ikke bare er kostnadene for et ilmenittverk blitt store og kanskje større enn for et aluminiumsverk. For utsettelse til Stortinget i

før vår er også kalkula- ved et aluminiumsverk. Men da har vi nå med 50 prosent på den bakgrunnen har Stortinget et å gjøre. Vedtatt et aluminiumsverk på slik at byggingen kan starte. Et ny nullstille av på forsløst. Utsettelse vil være en katastrofe for Tyssedal og spesielt for de mange som går på sø- søngarbeid i Tyssedal i påvente av byggestart. Her Kjell Folkestad.

I går formiddag ble Industrikomiteen orientert. Ikke bare er kostnadene store, utslippene av slagg er mer enn forholdsvis. Også miljøverdsanalyse har sviktet. Vi mener at Stortinget forutsetninger for vedtak om ilmenittverk er fravet. Også de forutsetningene mellompartiene satte. Vi krever derfor at forslaget om aluminiumsverk blir lagt fram for Stortinget sammen med den meldinga som kom i neste uke, sier Inger-Lise Gjævi, som sitter i Industrikomiteen for DNA.

— Vil dere så kreve endelig vedtak i vårsejona?

— Det har vi ikke tatt still-



— Aluminiumsprosjektet må oppheves og bygges frem for Stortinget omgående, sier Odda arbeidsfører i Industriarbeiderforbundet, Inger-Lise Gjævi.

ting til, men det er nå nød- ventig å oppheve alumi- niumsprosjektet, sier Inger-Lise Gjævi.

2 Onsdag 17. november 1983

Aksel Fossen har tro på at ilmenittverket blir bygget

## AUF-KOMMENTAR:

# Bare ilmenitt kan nå sikre sysselsettingen

Odda AUF var blant de aller første som gikk inn for aluminium i Tyssedal. Vårt hovedargument for aluminium var arbeidsplassene og betydningen av at kraften ble brukt lokalt.

Stortinget har nå fattet sitt endelige vedtak i denne saken. Alle kjenner resultatet.

Odda AUF beklager sterkt både sakbehandling og utfallet. Vi må likevel akseptere at dagens politiske situasjon ikke vil bli forandret før neste Stortingsvalg. Aluminium er tapt for Tyssedal. Nå må vi slåss for arbeidsplassene.

Formannen i Odda herreds Arbeiderparti —

Kenneth Nesse — er realist når han innrømmer at kampen for aluminium er over. Det er ikke politisk mulig å anu ilmenittvedtaket med dagens fatale parti-sammensetning i Stortinget.

Ilmenitt er blitt slaktet i kampens hete for aluminium.

Dette var forståelig un-

der den fællesaladede debatten.

Nå må vi bite i det sure eplet og innse at ilmenitt er det eneste som kan redde arbeidsplassene i Tyssedal. En fortsatt motarbeidelse av det fra før skreppelige prosjektet, kan ende i et katastrofalt sammenbrudd og en null-løsning i «dalen».

Fagbevegelsen og Arbeiderpartiet må nå arbeide aktivt for å få realisert vage Høyre-lofter. Vi har ingen tiltro til at regjeringen makter — eller ønsker — å holde liv i vårt lokalsamfunn. Det er ikke til å komme bort fra at det er kraften og ikke de men-

OVER TIL SIDE 14

## ★ Bare

neakelige ressursene som teller i Høyres Hus.

Det nytter likevel ikke å mane til kamp mot Høyre og kapitalkreftene på klassekampens grunn. Det som nytter er å kjempe for arbeidsplassene i Tyssedal, og en bruk av kraften som faller lokalsamfunnet til gode.

Vi kan ikke godta økte kraftpriser, selv om det vil kunne føre til større inntekter eller arbeidsplasser lokalt. Økte kraftpriser vil bety døden for en rekke industri-samfunn utenfor vår egen kommune. DNN-kampen har mottatt solidaritet fra hele landet. Vi må huske

dette i fremtiden og vise oss solidariske med industri-steder som er avhengige av billig kraft.

Tiden som kommer krever samhold og en fortsatt behersket kamp for arbeidsplassene.

Permutteringer kan ikke godtas!

Arbeiderbevegelsen og kommunen må arbeide intenst med å fremskaffe levedyktige arbeidsplasser som kan erstatte de tapte ved DNN og ikke dekkes av ilmenitt-produksjon.

I samarbeid med LO og DNA sentralt må Høyres løse løfter omformes til konkrete prosjekter.

Dette vil ikke komme av seg selv. Og det er på

disse områdene vi nå må stå samlet og slåtte for.

Vi har også et ansvar for resten av distrikt-Norge. Det Høyre og de borgerlige støtte-partiene har gjort med oss, må de aldri få anledning til å gjøre igjen mot andre lokalsamfunn.

Bare Arbeiderpartiet og SV kan sikre sysselsettingen og bevare industri-arbeidsplasser i Norge.

Svein-Yngve Madsen faglig politisk leder Odda AUF

## — Heller ikkje ilmenitt!

Tidleg i 1982 gjekk AKP(m-l) ut med analysen av at ilmenittverket var eit luftslott. Vi sa at ilmenitt-verket blei brukt som eit middel til å føra krafta vekk frå Tyssedal, men at det aldri ville bli bygd eit slikt smelteverk i Tyssedal. Denne analysa hadde stor oppslutning i lokalsamfunnet.

Men ikkje blant alle. Ein AUF-kommentator i Hardanger Folkeblad mante til «kamp for ilmenitt»? og utan tvil trudde fagforeningsleiinga (og kanskje også flesteparten av medlemmene) på Adm. dir. Solheim sine forsikringar om at dette var eit realistisk prosjekt.

Så — siste dagane av april 1983 får vi beviset: Ilmenittverket er ikkje lønnsomt, nye utredningar, forhandlingar om alternative arbeidsplassar.

Sjølvsagt måtte dette opplevast som eit nytt sjokk for dei 154 som var igjen på DNN. Dei hadde jo alle handla etter direktøren sine vurderingar og i håpet om at i alle fall dei sjølv var sikra. For flesteparten av dei andre, var det først og fremst ei stadfesting av det som hadde blitt sagt kvinne og mann imellom: Eg trur aldri det blir ilmenitt i Tyssedal — alle må sjå kva veg dette tar!! Likevel var det på ein måte sjokkerande å sjå at ein hadde rett, sjokkerande å sjå kor utildekkka polititarane kunne fara fram ovanfor Tyssedal. Sjølvsagt blei det reagert. 1. mai-komiteen i Tyssedal som omfatta styrene i avd. 43 og 44, gjorde om opplegget. No blei kravet om aluminiumsfabrikken reist på nytt og talaren for dagen blei kutta ut til fordel for tre lokale appellantar: Bjørn Seim, Olaf Albertsen og Nils Moldøen — formennene i avd. 43, 44 og Leve Tyssedal.



1. MAI I TYSSedal.

TYSSedøLER - ENDA EN GANG TIL KAMP.

Ikke uventa er vi blitt sveket enda en gang. Skal vi gi opp ? Svaret sier seg sjøl - NEI. Vi må sloss så lenge det er liv.

No krever vi aluminium - No krever vi ei fremtid for Tyssedal - No krever vi vår rett. Ingen sitter hjemme 1. mai. Fyll gatene i Tyssedal. VI GIR OSS IKKE.

- Regjeringen svikter Tyssedal - Bygg aluminium NÅ.
- Støtt de oppsagte ved DNN - Infri løftene om 262 arbeidsplasser.
- DNN trekk tilbake oppsigelsene fra leilighetene.
- Slemmestad - Sydvaranger og Tyssedal samme sak: Kamp mot kapitalismen.
- Ungdom kjemp for Tyssedals fremtid.

Kl. 12.30 Hoveddemonstrasjon - Folkemøte.

Talere for dagen :

Olaf Albertsen avd 44

Nils Moldøen "Leve Tyssedal"

Bjørn Seim avd. 43.

I samarbeid med styret i samorg  
gjekk avd. 44 ut med oppmoding om  
2 t politisk generalstreik fredag  
6. mai frå kl. 12—14.

DET ER DET SAMME  
FOR OSS OM INDUSTRI-  
MINISTEREN HETER BRATZ  
ELLER FIOLIN

FOR V: HAR  
TUBA OG  
TROMMER!

(M) 3.5.83



Vi i Samorg. vil oppfordre hele Odda-samfunnet til å vise sin solidaritet med våre kamerater i Tyssedal som kjemper for sin eksistens. La forretninger, kommunikasjoner, offentlige kontorer og ellers all aktivitet som ikke setter helse og liv på spill stå rolig den 6.5.

Vi ber også landsorganisasjonen om å gi sin støtte til den politiske streiken og oppfordre alle fagorganiserte om å slutte opp om aksjonen.

6. Mandag 2. mai 1983

## Festdagen ble ny kampdag for Tyssedal –



Full oppslutning i Tyssedal.

Industridepartementet og Høyre-regjeringen har på ny vist seg å være dårlig skodd i psykologi i Tyssedal-saken. Et dårligere tidspunkt å slippe den nye «Tyssedal-bomben» enn to dager før 1. mai kunne vel aldri vært valgt. Gårsdagen ble – fra Odda til Eidfjord – et ensidig angrep på regjeringens behandling av Tyssedal-saken. Selv-følgelig som ventet. Sjelden og aldri har så mange gått i tog i Odda og Tyssedal som i går. Mø-

bertsen mellom annet. Nils Moldaen i «Leve Tyssedal» var enda krassere: – Vi må nå tvinge Stortinget til å vedta før sommerferien å reise aluminiumfabrikken. Moldaen så det videre som temmelig uinteressant om industristatsråden måtte gå av eller ei. – Det er arbeidsplassene i Tyssedal saken gjelder, og ikke hva industriministeren heter, sa Moldaen og ga et spark til Oslo-avisers behandling av saken.



Klubbformann Olaf Albertsen 'ikk så å si' kastet et nytt Tyssedal-spok mot i fanger, – og måtte i hu og hast improvisere en ny appell for 1. mai. Den ble skrevet natt til 1. mai.

### «Slår av strømmen»

Vi har tidlegare bede lesaren merka seg Helge Fedje sin protokollførte uttalelse på møte i fagforeninga når ein skulle ta stilling til krafta som kampmiddel. Eit halvt år seinare står han fram i Dagbladet saman med John Andersson og trugar med å slå av strauamen.

Det høyrer med til historia at dei to «tillitsmennene» (John Andersson er verneleiar på DNN!) var kjent med at det var ingen fare med å slå av strauamen no. Med flaum på Austlandet ville faktisk Tyssedølene tena pengar på å «slå av strømmen»!

Det bør vel kanskje også peikast på at dei to hadde ingen lokale vedtak i ryggen når dei sette fram ein så pass alvorleg trussel. Vi undrar berre på kva ramaskrik det hadde blitt om einkvan i Leve Tyssedal, eller ein AKPar, hadde på eiga hand gått ut i pressa på denne måten ...

«... intens kampglød. Vi er villige til å stå på barrikadene,» fortel dei to til Dagbladet. Same haldninga kom fram på folkemøtet til Leve Tyssedal 9. mai. Anderson meinte då at forslaga om Oslo-tur m.m. var for smått stell. «Dette er inga krigserklæring!» sa han den gongen.



## Arbeiderkamp i Tyssedal 1. mai

— Valet står mellom aluminium eller ingenting. Det var Nils Moldaen som sa dette under 1. mai feiringa i Tyssedal. Fred og arbeid, var hovedparolen i demonstrasjonstoga over hele landet, og for Tyssedal er det arbeid som er i fokus etter den siste utviklinga i utminnetsaka. Det var særst stor oppslutning om feiringa i Tyssedal og Odda.

I Haugesund og Kopervik var det og mange folk som deltok i feiringa. — Sovjet viser ikkje akkurat fredsvilje, sa Kjetil England, og beresta til at

det trualet er ein russisk ubåt i Hordalandfjorden. England gjorde det klart at Arbeidarpartiet vil pressa på slik at det vert resultat i Geneve.

I Kopervik kritiserte stortingsrepresentant Gunn Vigdis Olsen Hagen mellom anna regjeringa for å tillate den høge arbeidsløysa.

Siste side

## «Slår av strømmen»

### Tyssedølene truer med aksjon

— Hvis Stortinget ikke nå beslutter å legge aluminiumsverk i Tyssedal, kommer vi til å slåss med alle midler. I første omgang kommer vi til å slå av strømmen. Kraftanlegget i Tyssedal kommer ikke til å eksportere kraft til samkjøringsnettet.

Av PÅL T. JØRGENSEN

Dei to tillitsmennene fra Tyssedal, Helge Fedje og John Andersson, til Dagbladet. De to var i går i Stortinget for å orientere om tyssedølenes syn på regjeringens beslutning om å skrinlegge ilmenittprosjektet.

#### Kampglød

— Stemningen i Tyssedal har vekslet fra spøk, skuffelse og forbitrelse til en intens kampglød. Vi er villige til å stå

på barrikadene. Nå krever vi at Stortinget beslutter å bygge et nytt aluminiumsverk i Tyssedal, sier de to.

#### Avviser

— Regjeringen sier at de skal utrede ilmenittverket ytterligere, og samtidig vurdere alternative prosjekter. Dette avviser vi bestemt. Nå er det maktspillende at Stortinget allerede i vår beslutter seg for aluminiums-prosjektet. Det er det eneste som kan redde bygda, sier John Andersson.

#### Alvorlig

Hvis tyssedølene gjør alvor av sin trussel om å slå av strømmen, kommer det til å få meget alvorlige konsekvenser. Tyssedal kraftverk produserer hele 852 millioner kilowatt-timer. Fedje og Andersson forteller at de uten videre er villige til å gjennomføre en slik aksjon.

#### Overgrep

— Det som nå har skjedd er et overgrep fra regjeringen



mot lokalsamfunnet Tyssedal. Hvis regjeringens strategi er å drive utmattelsespolitikk mot oss, må de tenke om igjen. Vi skal kjempe for, alt vi er, verdi, sier de.



## HF med partipolitisk ekstranummer

Hardanger Folkeblad kom ut med ekstra-utgåve fredag 29. april som først og fremst var eit forsøk frå DNA på å scora partipolitisk. I eit intervju med formann i Odda herreds Arbeiderparti, Dan Danielsen, bekreftar han vår mistanke om at DNA ikkje har gripe analysa av ilmenitt-verket som luftsløtt. «Det vi gjorde da planene om ilmenittverk kom, var at vi i Arbeiderpartiet aksepterte situasjonen . . .» fortel Danielsen. Han forstår enno ikkje at kravet no må bli aluminium-verk, men seier: «Jeg mener ikke å avskjære ilmenitt i det hele tatt, men vi må få saken behandlet i vårsesjonen uansett».

Men formannen i avd. 5, Arne Meland, gjer det ingen andre maktar i denne avisa — sette saka inn i den politiske samanhengen ho høyrer heima og tek det som sjølvsagt at avd. 44 trør til med aksjonar.



Dan Danielsen:

## HØYRES FLAGGSKIP SYNKER

— Vi krever at DNN-saken blir lagt fram nå. Vi aksepterer ikke noen ny utsettelse. Vi ønsker at regjeringen bestemmer seg nå, enten for ilmenitt eller aluminium, sier lederen i Odda herreds Arbeiderparti Dan Danielsen til Hardanger Folkeblad.

Han sier at det som nå skulle være flaggskipet på Høyre-regjeringens industripolitikk nå er i ferd med å synke.

— Det vi opplever nå er at Høyres politikk i saken hele tiden har vært at de ønsker verken aluminium eller ilmenitt. Det setter saken i et rart lys at de nå skal få vurdert hele ilmenittverket av en uten-

landsk konsulent. Jeg vil si det er rett og slett en mistillit til ledelsen ved DNN, som tillitsfullt har engasjert seg i arbeidet med ilmenitt selv om man har visst at det er noe annet de ønsker de og.

Jeg mener ikke å avskjære ilmenitt i det hele tatt, men vi må få saken behandlet i vårsesjonen uansett, sier Dan Danielsen.

— Jeg gjennomgikk på grunn av spesielle omstendigheter hele DNN-saken for noen dager siden i forbindelse med sysselsettingstiltakene. Jeg fant ut at de begrunnelser som Tyssedal-utvalget pekte på, både når det gjaldt prisutviklingen

Odda herreds Arbeiderparti om DNN:

## VI AKSEPTERER INGEN UTSETTELSE

Vi krever industriministerens avgang!

Odda herreds Arbeiderparti reagerer sterkt på at det planlagte ilmenittverket i Tyssedal nå synes å være skjævet ut i det uvisse. Odda herreds Arbeiderparti har hele tiden ment at planene om et ilmenittverk bygget på sviktende grunnlag, og at et modernisert aluminiumsverk ville ha vært å foretrekke. Hovedpoenget for Odda herreds Arbeiderparti og for fagbevegelsen og befolkningen i distriktet, har like-

sene. Regjeringen mener at ilmenittplanene ikke er godt nok utredet, og vil nå trekke inn utenlandsk ekspertise. Hvis utenlandsk ekspertise er nødvendig, burde regjeringen ha trukket inn denne for lenge siden. Det har fra Arbeiderpartiets side ikke manglet på advarsler.

Odda herreds Arbeiderparti konstaterer at ilmenittverket, slik det ble lagt fram i Stortinget av Høyre,

ha vært flaggsaken i Høyres industripolitikk. En ny era skulle innledes. Vi ser nå hva denne industripolitikken har ført til, — mer usikkerhet, og kanskje 200 tapte arbeidsplasser i Tyssedal.

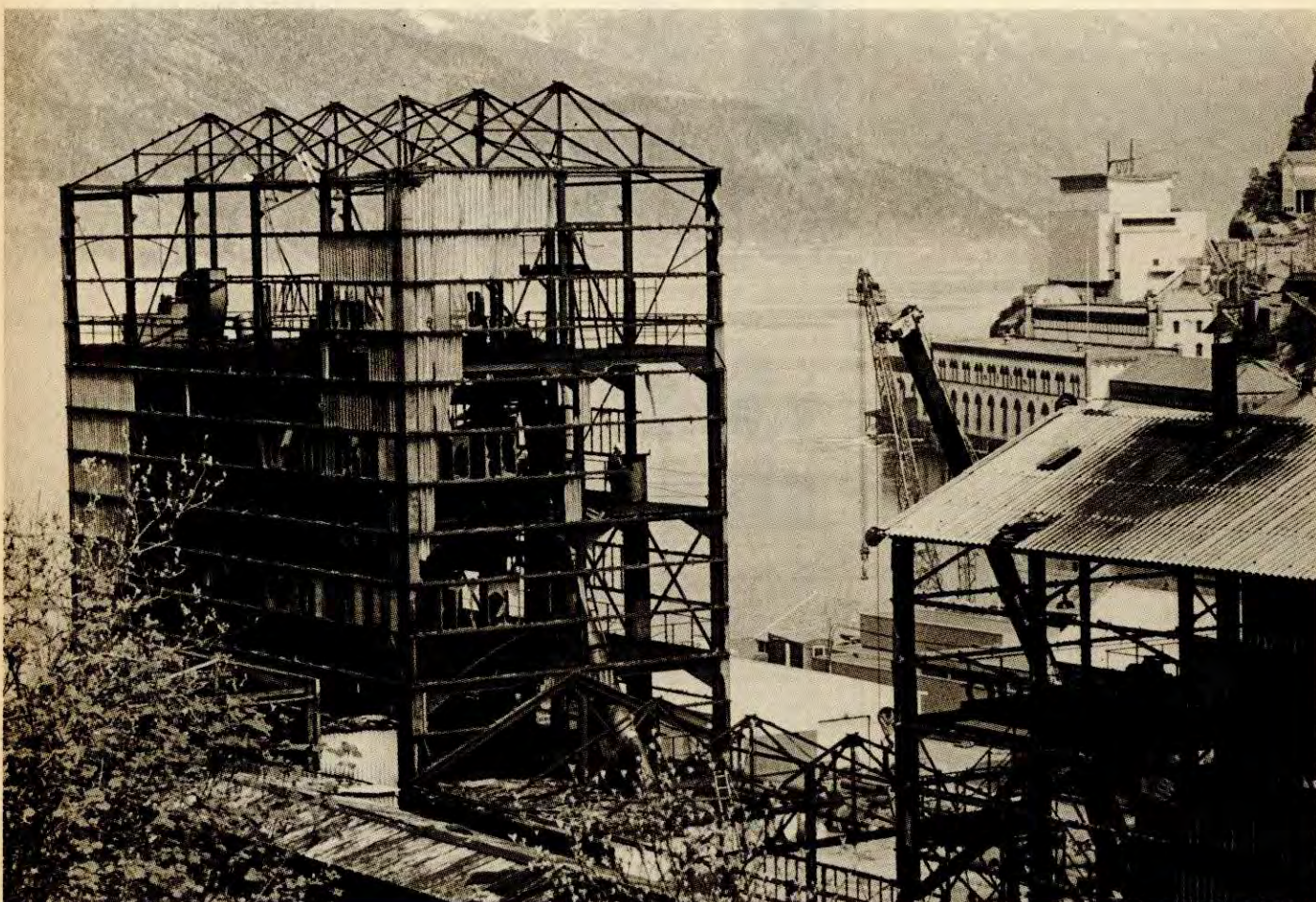
I 10 år har Tyssedal og Odda levd i usikkerhet. Odda herreds Arbeiderparti kan ikke akseptere at vi skal gå inn i en ny periode med slik usikkerhet.

Regjeringen ble

av aluminium og markedsutsiktene, samt kostnadsutviklingen for ilmenitt, og den utviklingen som vi lokalt så på arbeidsmarkedet har slått til for fullt. Kommunens framstilling overfor sentrale myndigheter slo til. Da brukte vi stort sett lokal ekspertise.

Det vi gjorde da planene om ilmenittverk kom, var at vi i Arbeiderpartiet aksepterte situasjonen, og fant ut at da hadde dette samfunnet vært utsatt

OVER TIL SIDE 3



Rivinga av Nitriden er starta.

(Foto: Leif Gabrielsen)







# Heste- Handels- ministeren



Asbjørn Haugstvedt går inn i regjeringa som ein av dei nye handelsministarane — Tyssedal seier for ein halvsekk. FOTO: TRIVGE BOLLSTAD

De nye utskjette hestehandlere framstår som reine speiderledere i forhold til Kristelig Folkepartis framferd i Tyssedal-saka de siste ukene.

Anført av industri-talsmann Asbjørn Haugstvedt erklærte partiet bastant at Tyssedalsaka måtte avgjøres før ferien.

Men det var for 12 dager siden.

I dag er denne erklæringa omsatt på børsen for regjeringsstaber. Partiet følger Høyre, Haugstvedt inkludert.

Judas fikk 30 sølvpenge i sin tid. Kristelig Folkeparti får nå fire statsråder, og det kommer et essaysettingsfond på 100 millioner. Men da er det selvsagt korrigert for inflasjon.

Om den nye Handelsministeren? Det er Asbjørn Haugstvedt...

AV GEIR IMSET

Kristelig Folkepartis vei til regjeringstaberne må kalles praktisering av «kristne grunnverdier» på høyt nivå.

Partiets industripolitiske talsmann, Asbjørn Haugstvedt, slo i fjor hardt for aluminiumsverk til Tyssedal. I vår har han stått «ubøyeelig» på kravet om at Tyssedal-saka må avgjøres i denne stortingssesjonen. Av hensyn til lokalbefolkningen.

Med Kåre Kristiansen i spissen har ledelsen i Kristelig Folkeparti tryglet «høyere makters» om situasjonen som kunne rydde klar bane til regjeringstaberne.

Tidligere har problemet vært Høyres standpunkt i abortsaken. Likevel slo partilandsmøtet i Kristelig

Folkeparti fast at dersom det oppsto en spesiell situasjon kunne man likevel gå inn i regjeringstaberne.

Hva var vel da mer naturlig enn å skape denne «situasjonen» sjøl? Tyssedal-saka var godt egnet. Her sto regjeringstaberne stilt på utsettelse.

25. mai erklærte Kristelig Folkepartis stortingsgruppe at de stilte seg bak Haugstvedt: Tyssedal-saka må avgjøres i vår.

Derved rykket statsminister Willoch ut og erklærte situasjonen som «kritisk». En spesiell situasjon var oppstått.

Forhandlingene om trepartiregjerung kunne begynne.

Høyre ville i utgangspunktet bare gi Senterpartiet og Kristelig Folkeparti tre statsråder hver. Men

Kristelig Folkeparti ville ha fire.

Baklengs salto

Det får de nå. Tyssedal-saka blir løst på følgende vis: Kristelig Folkeparti gjør en tvilsom baklengs salto og lander på utsettelse. I tillegg skal Tyssedal få et essaysettingsfond på 100 millioner. Fondet skal gå til det industriprosjektet som vedtas, hvis det blir vedtatt noe i det hele tatt en gang i framtida.

Hva med Tyssedal-folkemøtet Asbjørn Haugstvedt?

Han følger også flertallet i Industrikomiteen sammen med Høyre og Senterpartiet. Saken skal utsettes og utredes videre.

Begrunnelsen i innstillinga ville stått i reit stryk til forberedende i logikk.

Belønningen

Det kan man virkelig kalle et «parlamentarisk» tilbaketog. Ingen tvil om at Haugstvedt har vært utsatt for press. Men så har det også vært belønning — en nylått handelsministerpost.

Tyssedal-samfunnet derimot må etter alt å dømme fortsette å leve med usikkerheten. Stortingsflertallet ser nå ut til å slutte opp om Høyres linje. Tyssedal skal utredes ihjel.

I morgen vil den nye trepartiregjeringa stå fram. I morgen ankommer det også fem busser fra Tyssedal fulle av folk. De vil nok vite å fortelle Kristelig Folkeparti hva de mener om partiets oppreden.

Du skal ikke lyve, det er kristendommens 8. bud. Men kanskje Gud Fader gir dispensasjon når det gjelder regjeringstaberne?

Det er et utsettelse.

OVER FRA SIDE 1

LORDAG 7. MAI 1983

Kr.F.-formannen på valgkamp-møte i Skien:

## Bondevik godtar ikke Tyssedal-utsettelsen

HANDLINGEN

26.5.83

Flertallet i Kr.F.-gruppa

## Vil ha Tyssedals-avgjørelse snarest

## KrF står fast på vedtaket om Tyssedal

Oslo (NTB): Det er stort flertall i Kristelig Folkepartis stortingsgruppe for å få en avgjørelse i Tyssedal-saken i løpet av vårsesjonen. På gruppemøtet onsdag var det nesten full oppslutning om dette synet, og bare to representanter stilte seg skeptiske til et slikt opplegg.

Kristelig Folkeparti har ikke tatt standpunkt til om de skal gå inn for aluminium- eller ilmenittverk i Tyssedal.

BT 1. uke side 38 EVA GRANHEIM

OSLO: — Vedtaket i Kristelig Folkepartis stortingsgruppe om at Tyssedal-saken skal avgjøres i vårsesjonen står fast. Dette sier stortingsrepresentant Asbjørn Haugstvedt i en kommentar til Bergens

nere skal delta under regjeringstaberne når spørsmålet om løsning på Tyssedal-saken kommer opp.

Dersom det viser seg å medføre riktighet at man ikke kommer fram til noen konklusjon i komiteen i løpet av inneværende se-

## KrF gjer valdtakt på Tyssedal

Kristeleg Folkeparti sine mest regjeringskåte politikarar såg tidleg sjansen for å utnytta Tyssedal-saka til å skaffa seg taburettar i regjeringa, på ein måte som tilfredstilte sitt eige landsmøtevedtak.

Både Kjell Magne Bondevik og Asbjørn Haugstvedt gjekk tidleg ut med antydningar om at Tyssedal måtte få ei avklaring før sommarferien. Høgdepunktet i dette skodespelet kom på gruppemøtet 25. mai, då partiet gjorde vedtak som slo fast at Kristeleg Folkeparti gjekk inn for ei avgjerd for Tyssedal i vår.

Seinare gjekk framståande KrF-politikarar ut og stadfesta at vedtaket i gruppa stod fast.

6 TIRSDAG 8. JUNI 1982 BA

Oppsiktssvekkende at 40 har snudd

— Noe av det mest oppsiktsvekkende ved denne saken er at om lag 40 representanter som for et år siden var med og gjorde et enstemmig vedtak om å bygge nytt aluminiumsverk i Tyssedal, nå visstnok har kommet til et helt annet resultat og vil bygge et ilmenittsmelteverk, sa Hans Olav Tunesvik (Kr.F.).

Han mente det måtte være tale om et nytt og lovende alternativ med helt andre og mer positive framutsikter for at man kan oppheve et enstemmig stortingsvedtak som bare er ett år gammelt.

— Så langt jeg er i stand til å vurdere, er bare ett av Regjeringens seks krav til et alternativt prosjekt inntrudd, sa Tunesvik.

Nedbygging av utkant-Norge som innledes

— Jeg er lei for at så mange representanter fra sentrumspar-tiene vil medvirke når nedbyggingen av distrikts- og utkant-Norge nå innledes, sa Asbjørn Haugstvedt (Kr.F.). Som sitt partis representant i Industrikomiteen fikk han fem av partigruppen med seg i sin støtte til aluminiums-prosjektet.

Han beklaget at både regjeringstaberne og mindre-talstallingsstillingen på det inntrykket at Odda-folk er så og ikke vil forhandle med stor-samfunnet om sin framtid. — Men når man kun har en ressurss å stille opp med — elektrisk kraft — er det fornuftig at kommunen er fast i tiskene i forhandlingene. Det har Odda vært, og det må de etter mitt skjønn ha lov til.



**2 KLASSEKAMPEN** Fredag 13. mai 1983, nr. 108

# Odda Samorg refser LO- ledelsen

Dei aller fleste politiske kommentatorane stilte seg svært skeptisk til alvoret bak KrF-utspelet, og mange slo fast at dette var taktikkeri for å koma med i regjeringa.

Men i Odda og Tyssedal spreidde illusjonane seg blant toppane ...

## Også DNA hestehandlar ...

Imidlertid er det verd å merka seg at DNA si stortingsgruppe ikkje tok standpunkt for aluminium før fredag 3. juni!! Grunnen er openberr at i den kaotiske parlamentariske situasjonen, ville ikkje DNA gå ut med eit standpunkt som kunne pressa KrF til å støtta aluminium nå. Det kunne bety mistillit og kabinettspørsmål, og kaoset kunne enda opp med at Arbeidarpartiet blei nøydd til å danna mindretalsregjering. Og det var det viktigaste målet for DNA: ikkje koma i regjeringsposisjon før valet.

Sjølvsagt er dette også eit svik mot Tyssedal — og føyer seg pent inn i rekka frå 1973.

## Leve Tyssedal:

### Ny Oslo-demonstrasjon

Velforeninga Leve Tyssedal skipar til folkemøte i Tyssedal måndag 9. mai der det viktigaste vedtaket vert at ein skal skipa til ny Oslo-demonstrasjon når saka skal opp til handsaming i Stortinget.

## Samrøystes samorg:

### Stør Oslo-turen

Representantskapsmøtet i samorg, tirsdag 10. mai, gjorde samrøystes vedtak om støtte til Oslo-turen, krav til LO om å ta initiativ til 1 t generalstreik 1. juni til støtte for kravet om aluminiumsvedtak i Stortinget før sommarferien.

## ALUMINIUM FORTSATT MEST REALISTISK —!

**ØIVIND**  
Odda i  
skap gikk  
gjennom  
gens meld  
rørende T  
saken. Til  
ger Folke  
teller ordf.  
NR. 64 ONSDAG 8. JUNI 1983 40. årgang

Resultat av Folkemøte tirsdag kveld:

## Tyssedølene vil vurdere bruk av alle kampmidler

Sentralstyret i Arbeiderpartiet:

## Sysselesettingsgarantien for Tyssedal må innfris!

## Hestehandel i Tyssedal?

Sentralstyret i Det nor- skal gå inn fo  
ske Arbeider rykket ut i T ingsgara  
en. Sentralst al blir inn  
tatt at Stor iariatet ha  
det til so

Spillet om  
Tyssedal  
(ORDSPILL)

TYSSDAL  
KYSSEGAL  
KASTEGAL  
KASTETAK  
HASTESAK  
HALTESAU  
GALTERAU  
GALGETAU  
GALGETØY  
VALGSTØY  
VALTSTIL  
VALGFEIL  
VALGFEST  
TALGFETT  
TALERETT  
TABURETT

Per Olav Lande

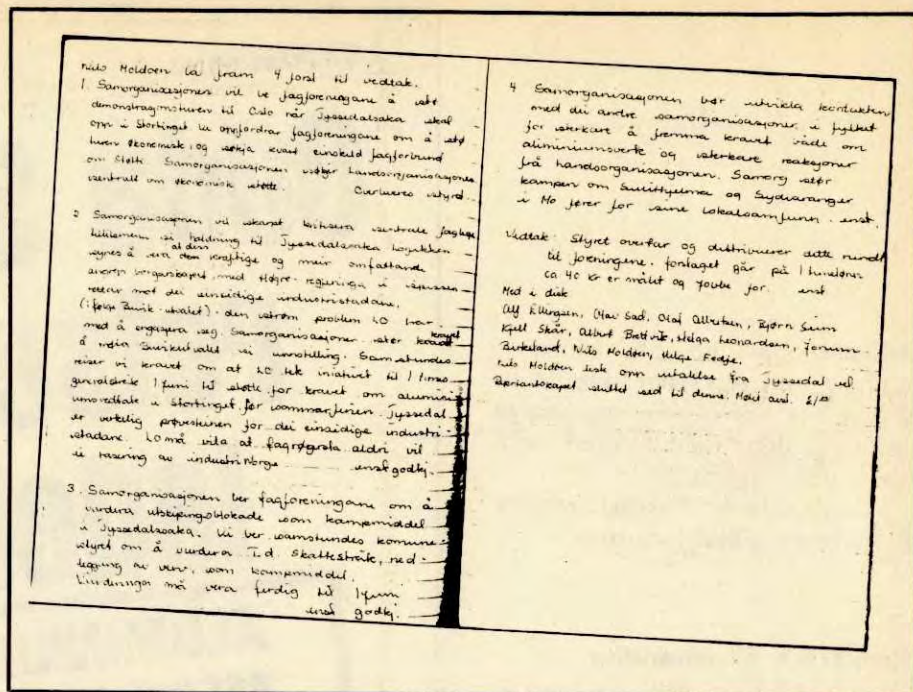
Så kjøpte dei merra,  
ingen skulle sjå ho var halt.  
Og Bratz og Bondevik  
blei sitjande å drikke.  
Så selde dei merra.  
Jahh. Sola skein.  
Bratz og Bondevik reiste heim.  
Bratz og Bondevik reiste heim.

Helge Rykkja





Sidan det har vore reist tvil om kva vedtak Samorg har gjort, syner vi her utdrag av møteprotokollen.



Ikkje alle støtta opp om kravet Nytt aluminiumsverk nå! Ikkje uventa la bedriftsleiinga ved DNN seg på Odda Høgre sitt standpunkt: ilmenitt nå! Denne linja blei faktisk støtta av bedriftsforsamling og styre ved DNN — samt Arthur Svensson og Norsk Kjemisk.

## Samrøystes fellesstyre: Oslo-turen hovudaksjon!

Same dag som Kristeleg Folkeparti gjorde sitt no så kjente gruppevedtak, 25. mai, hadde fellesstyret for dei tre kjemiske fagforeningane i Odda kalla inn til møte også med representantar frå andre større fagforeningar.

Vi saksar frå protokollen.

Protokoll fra felles styremøte mellom avd. 5 - 44 - 61 av NKIF, avd. 43 av NEKF, avd. 160 av NJ&MF og 180 av NKF i Fagforeningssalen onsdag 25. mai 1983 kl. 1800.

Saksliste: 1. DNN - saken

Sak 1, DNN - saken:

Olaf Albertsen (form. avd. 44) orienterte om den siste tids utvikling i Tyssedalssaken og i denne forbindelse viste han til en tur til Oslo repr. fra foreningen hadde hatt. I denne sammenheng hadde foreningen kontakt med de forskjellige fraksjonene i Stortingets industrikomité. Han opplyste at DNA sin fraksjon i komiteen var delvis usikker på i om det var taktisk riktig å fremme forslag om aluminium nå i vårsesjonen, dvs. hvorvidt det ville skade saken.

Følgende hadde ordet til Albertsens innlegg: Aslak Jonvik, Hans Sekse og Nils Moldøen.

Nils Moldøen fikk deretter ordet for å redgjøre for forberedelsene som velforeningen "Leve Tyssedal" har gjort i forbindelse med demonstrasjonen ved Stortinget i anledning behandlingen av saken. Han fremmet forslag til 3 uttalelser som er vedlagt protokollen.

Oddvar Rolland fremmet forslag til en "LO delegasjon" bestående av: Arne Møland avd. 5, Vidar Våde avd. 43 og Per S. Nilsen avd. 160.

Alf A. Johnsen fremmet på vegne av avd. 5 forslag til uttalelse som er vedlagt protokollen.

Konklusjon på debatten: Lokalsamfunnet må stå på kravet om at aluminium fremmes og vedtas i vårsesjonen, demonstrasjonen i Oslo vil være hovedaksjonen i forbindelse Stortingsbehandlingen, ingen streik i Odda den 9. juni dersom LO ikke oppfordrer til generalstreik, få satt fart i innsamlingen til Oslo-turen som må ses i sammenheng med en evt. streik eller ei, strømkaksjon ikke aktuell på det nåværende tidspunkt, eksportblokkade lite aktuelt.

Vedtak: Alle framlagte forslag enstemmig vedtatt.

Møtet hevet kl. 2015.

Odda, den 26. mai 1983

*Alf A. Johnsen*  
Alf A. Johnsen  
referent



# DNN ALUMINIUM:

5770 TYSSedal

LOS/TF  
File 40 i / 62

N O T A T

fra fellesmøte AMU - BU torsdag 26. mai 1983 kl. 1300

Sakliste: Orientering om situasjonen

BU-formann J.J. Solheim ledet møtet og orienterte om utviklingen siden siste møte.

Ilmenitt og aluminium ligger nokså likt i lønnsomhet, men når en tar med inntekter ved salg av strøm, som en får overskudd av ved et ilmenittverk, så vil det ligge bedre an. De miljømessige saker er oppklart med SFT, selv om dette ikke er registrert av Gøthe-utvalget. Man må anta at ilmenittprosjektet er mer politisk mulig. Han advarte mot overilede tiltak som kan ødelegge mer enn gagne.

Albertsen: Utviklingen har vært positiv i det siste, men har vanskelig for å tro at KrF går tilbake på sitt vedtak om behandling og avgjøring i vårsesjonen når de har gått så sterkt ut. En løsning på den politiske situasjonen vil nok være avgjørende, visse tegn tyder på det, f.eks. media retter oppmerksomheten på helt andre ting enn arbeidsplasser.

K. Haugland mente at demonstrasjoner nå kunne ødelegge. En kommer lengst med saklighet og god oppførsel.

Vatle ville vite hvem som har kontroll med de innsamlede midler, fagforeningen eller andre. *Her er det bare menne*

Det ble svart at de midler som samles inn gjennom fagforeningene ikke kan nyttes uten godkjennelse av avd. 44.

Andersson, Lund og Larsen var inne på at situasjonen må vurderes påny. Avd. 44 må innkalle til møte for å avverge forhastede tiltak.

Det var enighet om at det bør reise inn folk for å være tilstede når saken behandles i Stortinget, men en må unngå demonstrasjoner, dersom saken kommer opp i vårsesjonen.

Tyssedal 31.05.1983

Olaf Lund  
N. form AMU

J. Solheim

## «-Må avverge forhastede tiltak»!!

Vi ber leserane merka seg at det var ein samrøystes konklusjon på debatten at «demonstrasjonen i Oslo vil være hovedaksjonen i forbindelse med stortingsbehandlingen» og at alle vedtak var gjort samrøystes. Dette trass i at Hardanger Folkeblad har denne oppsummeringa etter eit ope møte i Tyssedal 24. mai:

Avd. 44, representert ved blant andre klubbformann Olaf Albertsen, Odda kommune v/ordfører Leiv Stensland, adm. dir. Johan J. Solheim, og dir. Stin Hysing ved Tyssefaldene A/S advarte mot overile aksjoner.

Vi trykkjer her utdrag av eit notat frå fellesmøte mellom arbeidsmiljøutvalet og bedriftsutvalet ved DNN Aluminium torsdag 26. mai 1983.

Samarbeidet med bedriftsleiinga er komen så langt at ein godtek at personalsjefen vil ha forsikringar om at fagforeninga har kontroll med inn-samlinga til Oslo-turen. Fagforeninga gjev seg faktisk til å diskutera med bedriftsleiinga og saman gjera vedtak om korleis ein skal hindra demonstrasjonar i Oslo!! Vi må gjera merk-sam på at fleire av dei som er til stades er medlemmer av avd. 44. Det går ikkje lang tid før vedtaket er i ferd med å bli satt ut i livet. Først opp-mjuking gjennom pressa. Ordføraren meiner at det er «samvittigheten til KrF som seiret, andre meiner at ein kanskje kan erstatta Oslo-turen med folkefest på ny-kaien!!

Glede i Odda og Tyssedal:

## Kr.F.s samvittighet seiret

Av Jan Graval

— Det er min klare oppfatning at Kr.F.s representanter på Stortinget har tatt sin beslutning i Tyssedal.

håper inderlig at ikke unødige demonstrasjoner skal komme til å prege lokalsamfunnet i tiden framover.

Jeg er temmelig sikker på at vi vil ikke bli forstøtt om vi nå skulle gå ut med voldsomme kref-

44 ved DNN sier til Haugesunds Avis at Kr.F.s utspill er en lysning i alt mørket.

— Vi ser veldig positivt på dette og håper virkelig avgjørelsen kommer. Og fagforeningen er innstilt på å slutte seg til det industri-

Oslo-turen 9. juni erstattes med en skikkelig folkefest på den nye og digre kaien i Tyssedal, sier Fedje.

Også fagforeningsledelsen er redd for unødige demonstrasjoner slik situasjonen nå er blitt. Og med andre ord er både ord-

Fleire hundre tyssedøler reiser til Oslo 8. juni



## Samorganisasjonen reagerer:

# — Klassekampen og AKP forvirrer Tyssedølene

AV ALF OLE ASK

— Klassekampen og AKP (m-l) skaper røre i Tyssedal — saken. Det hersker nå full forvirring om hva blant andre Odda Samorganisasjon ønsker. Organisasjonen «Leve Tyssedal», som har en lang rekke seriøse organisasjoner som medlemmer, blir til tider misbrukt av Klassekampens haleheng. Det er formannen i Odda Samorganisasjon Alf Ellingsen som sier dette til BA.

Det har hersket tvil om hva fagbevegelsen i Odda og Tyssedølene har ønsket. I Trondheim har bedrifter vedtatt å gå til streik 9. juni. Bakgrunnen for dette er at de hadde fått en oppfordring fra en organisasjon som heter Tyssedal samorganisasjon om å gå til en times politiske streik på dette tidspunktet. Det er ingenting som heter Tyssedal samorganisasjon.

### IKKE STREIK

— Vi har ikke oppfordret andre klubber og fagforeninger til

å gå til streik 9. juni. Odda samorganisasjon ønsket å få LO med på en politisk streik og få de til å oppfordre til dette. I møte med LO har vi fått nei her og dermed er denne saken for oss uaktuell, understreker Ellingsen.

### OSLO SAMORGANISASJON

Det blir demonstrasjon foran Stortinget 9. juni da saken om Tyssedal skal opp. Med på denne demonstrasjonen blir også Oslo faglige samorganisasjon. Men det skjer under forutset-

ning av at Odda faglige samorganisasjon eller den kjemiske arbeiderforeningen i Tyssedal har hånd om arrangementet.

### KULTURKVELDEN

Om kvelden den 8. juni skal det være kulturkveld i Folkets Hus i Oslo. Samorganisasjonen i hovedstaden har vært skeptisk til denne. — Det er ikke riktig som NTB har skrevet at Odda samorgani — sasjon har vært skeptisk til kulturkvelden og Oslo — turen, sier Ellingsen.

Over helga, på måndagskvelden, har Leve Tyssedal invitert til dugnad-møte i samfunnshuset for å førebere Oslo-turen, og dei to fagforeningsstyrene er spesielt invitert for å diskutere eit nærare samarbeid.

Vi hugsar pålegget frå DNN-møtet torsdag: «Avd. 44 må innkalle til møte for å avverge forhastede tiltak.» På fellesstyremøtet kan avd. 44 leggja fram følgjande vedtak: «Arrangementet i Oslo 9.6.83 må gå etter avd. 44 — samorg i Odda — samorg i Oslo sitt opplegg. Hvis situasjonen blir at KrF går inn for å bygge ilmenitt- eller aluminiumsverk i Tyssedal, blir det ingen demonstrasjon i Oslo, men Oslo-turen kan gå som en tur for å overvære debatten i Stortinget.»

Etter timelange forhandlingar på fellesstyremøte, kjem ein fram til eit samrøystes vedtak — nok ein gong.

Dei siste 2 vekene før Oslo-turen, vert turen avlyst i kvart nummer av Hardanger Folkeblad.

Siste tida før avreise bryt samorg-formannen samrøystes vedtak.

Etter at formannen i Samorg, Alf Ellingsen har vore på vitjing hjå Tor Halvorsen i LO, går han ut med ei ganske forvirrende melding over NTB der han seier det er eit ope spørsmål om Samorg i Odda stør Oslo-turen. Seinare, når han prøver å dementere dette (sjå BA/HF 3.6.) køyrer han ut påstander om Klassekampen, AKP(m-l), Leve Tyssedal, vedtak i representantskapet m.m. som det ikkje fins grunnlag for.

Ellingsen sin tvil «til Leve Tyssedal som en politisk forening» og påstanden om at «Leve Tyssedal ble stiftet som en ren kulturell organisasjon», henviser vi til Velforeningen Leve Tyssedal sitt eige svar i HF måndag 5. juni.

## SAMORG-formannen beklager splittelse: Flertallet i Odda kommunestyre går inn for aluminium

— Det er med beklagelse jeg nå konstaterer at lokalsamfunnet er tredelt i synet på hvordan DNN-saken skal løses. SAMORG og avd. 44 står helt og fullt på flertallsvedtaket i Odda kommunestyre fremmet av Arbeiderpartiet, om at aluminium er det beste alternativ.

HF SVEIN KNUTSEN

Dette sier formannen i SAMORG, Alf Ellingsen til Hardanger Folkeblad etter at Odda kommunestyre i går måtte gå til avstemning på 3 alternative forslag i DNN-saken.

Enkelt sagt går flertallet fortsatt inn for aluminium. Odda Høyre for ilmenitt, mens AKP-mi ønsker en adskillig hardere linje som munner ut i sivil udyldighet dersom ikke Stortinget fattet et endelig vedtak i våresjonen, d.v.s. 9. juni.

Suå situasjonen er pr. i dag, hvor det mest sannsynlige resultat av 9. juni møtet, etter Ellingsens oppfatning, blir at saken utsettes til høsten, er SAMORG-formann meget i tvil om det er taktisk klokt å arrangere en stordemonstrasjon i Oslo 8. og 9. juni. — For hver gang vi tar slike virkemidler i bruk, svekkes effekten. Det kan tenkes at vi vil ha adskillig større bruk for en skikkelig demonstrasjon i høst, sier Alf Ellingsen.

Han ønsker imidlertid å presisere at SAMORG selv sagt står fast på sitt vedtak om å oppfordre fagforeningene om å støtte opp om turen. Den eneste betingelsen som er satt, er at Oslo SAMORG er med som arrangør. Og dette er i orden.

Ellingsen vil også opplyse en misforståelse i et intervju som NTB hadde med ham.

— Astrid Gjerde som ringte meg opp har misforstått. Det står i NTB-meldingen at Odda SAMORG stiller seg tvilende til Oslo-turen. Det riktige er at Oslo SAMORG har stillt seg skeptisk til arrangementet.

SAMORG-formann Ellingsen vil ikke legge skjul på at han i

møte med LO og fagforeningene i Oslo, møtte sterke motforestillinger på grunn av et intervju som Klassekampen har hatt med Vidar Våde og enkelte side-spring fra Klassekampen som var direkte rettet mot SAMORG i Odda og «LO-pampene». — Kommentarer til vedtakene i Odda kommunestyre i går kveld? — Som formann i SAMORG står jeg helt og fullt for det som Arbeiderpartiet gikk inn for. Uten tvil, fordi det som ble påstått at det har vært noen vinging ut i fra Arbeiderpartiets sitt syn når det gjelder oppbyggingen av Tyssedal, er ikke tilfelle.

Jeg kan støtte ordførersens synspunkter fullt ut.

— Er tredelingen i kommunestyret en svekkelse av DNN-saken?

— Ja, en klar svekkelse. Jeg hadde håpet om at vi kunne samle oss om den opprinnelige oppsummering som på forhånd var gitt kommunestyret ut i fra flertallsforslaget fra formannskapet.

SAMORGs formannen stiller seg tvilende til Leve Tyssedal som en politisk forening.

— Leve Tyssedal ble stiftet som en ren kulturell organisasjon. Men det er enkelte innenfor Leve Tyssedal som har brukt foreningen på en helt annen måte, sier Ellingsen.

— Hva synes du om forbønns-gudstjenesten i Tyssedal kirke?

— Fantastisk. Det er slike former for aksjoner som folk utenfor Odda klarer å akseptere. Derfor mener jeg at gudstjenesten hadde veldig mye for seg, sier SAMORG formannen til Hardanger Folkeblad.

## Samorg. kritiserer LO-ledelsen:

# DNN-saken utsatt til høsten — trolig ingen demonstrasjon i Oslo

TIL HARDANGER FOLKEBLAD

AVD. 44, AVD. 43 OG LEVE TYSSDAL VIL OPPFORDRE BEFOLKNINGEN

I TYSSDAL OG ODDA TIL Å MELDE SEG PÅ OSLO-TUREN.

SITUASJONEN ER FORTSATT UAVKLART. VI VIL SAMMEN VURDERE VIDERRE

HVLKEN FORM OSLO-ARRANGEMENTET SKAL FÅ, ALT ETTER HVLKEN

AVKLARING SOM MÅTTE FORELIGGE FØR STORTINGSBEHANDLINGEN.

ETT ER SIKKERT: DET BLIR OSLO-TUR UANSETT.

enstemmig

Helge Fedje

Bjørn Seim

Nils Molden



8 Mandag 6. juni 1983

**ORDET FRITT:****Hva er «Leve Tyssedal»?**

Formannen i Odda Samorg, Alf Ellingsen, sår i Hardanger Folkeblad fredag 3. juni tvil om Velforeningen «Leve Tyssedal» sitt program og virke. Vi finner det derfor nødvendig å informere om følgende:

«Leve Tyssedal» ble dannet på et stort folkemøte i Tyssedal den 14. juni ifjor, der også fagforeningsstyrene i avd. 43 og avd. 44 i Tyssedal var tilstede. I programmet, som ble enstemmig vedtatt, heter det bl.a.: Velforeningen

«Leve Tyssedal» skal ha som sine viktigste oppgaver:

- å være med å redde Tyssedal som livskraftig lokalsamfunn og gjøre Tyssedal til et godt og trygt sted å leve. Nå og i fremtiden.
- å styrke samholdet og det kulturelle livet i Tyssedal.
- å støtte det arbeid som avd. 44 og 43 gjør for å redde arbeidsplassene og hindre fraflytting.

«Leve Tyssedal» fikk ellers i oppgave bl.a. å lage Tyssedals-revy,

spre opplysning om Tyssedal, utvikle solidariteten med Tyssedal — og ikke minst innkalle til folkemøter for informasjon og diskusjon om Tyssedalsaken.

Alf Ellingsen uttaler i Hardanger Folkeblad: «Leve Tyssedal» ble stiftet som en ren kulturell organisasjon. Men det er enkelte innenfor «Leve Tyssedal» som har brukt foreningen på en annen måte». Vi håper denne uttalelsen bygger på dårlig informasjon og ikke øns-

ke om å mistenkeliggjøre «Leve Tyssedal».

Som det går fram av programmet, er «Leve Tyssedal» noe langt mer enn en ren kulturell organisasjon. Vi er en tverrpolitisk forening som har som felles mål å la Tyssedal leve.

Vi har lojalt arbeidet utifra programmet og enstemmige vedtak på folkemøter i Tyssedal.

Derfor har vi også påtatt oss å arrangere Oslo-turen, i samarbeid med fagforeningene.

Tyssedal, den 3. juni  
Velforeningen  
«Leve Tyssedal»  
Agnes Lervik  
nestleder

Det kjem fram i Hardanger Folkeblad at Ellingsen sjølv er usamd i å føra kamp for Tyssedal no — om dette har samanheng med at han har vore i møte med Tor Halvorsen skal vera usagt. Dagen etter at samorgstyret *samrøystes* har vedteke at dei «står fast på representantskapet sitt vedtak om full støtte til demonstrasjonsturen til Oslo», presterer samorg-formannen å gå ut i pressa og uttrykkja tvil om det er taktisk klokt å demonstrera i Oslo. Dette til og med etter at samorg-styret — også samrøystes — har sagt seg samd i å stå som medarrangør for demonstrasjonen i Oslo 9. juni!!

At Ellingsen vel å krydra intervjuet med angrep på namngjevne journalistar i NTB, allmenne angrep på Klassekampen og AKP(m-l) utan å ha noko konkret å fara med, får vi ta med stor ro. Verre er det for dei som er ansvarlege for demonstrasjonsturen. Dei må bruka mesteparten av tida og kreftene sine til å forklara folk at Ellingsen fer med usanningar, og få folk overtydd om at Oslo-turen vert viktigare enn nokon gong. Kva skadeverknader t.d. oppslaget i Bergens Arbeiderblad hadde for kampen, kan kanskje illustrerast med følgjande fakta: frå Trondheim kom det 15 fagforeningsfaner til demonstrasjonen i Oslo — frå Bergen kom det ei.

«På samarbeidets alter:»





4.6.83

# Tyssedal-garantien skal oppfylles i høst

Av Jan Gravdal

**Regjeringsgarantien til Tyssedal skal innfris i løpet av høsten, helst før. Det er denne delen av «forliket» under regjeringsforhandlingene i går som gjør at Odda og Tyssedal tross alt kan snakke om en halv seier i en sak som til sist skulle vise seg å være på nippet til å velte hele arbeidet med å få til en trepartiregje-**

På formiddagen i går avviste nemlig Kr.F.s stortingsgruppe å gå med på en utsettelse av Tyssedal på Willoch-regjeringens premisser. Ny forhandlingsrunde førte til at avgjørelsen skal utsettes til høsten, at det skal gis et næringsfond på 100 millioner kroner til Odda kommune, at ilmenittprosjektet skal behandles når det foreligger en utredning fra et internasjonalt konsultentselskap. Og det vil også bety at aluminiumsprosjektet vil bli trukket fram igjen da. Men hovedsaken er at hele regjeringsgarantien, en garanti som omfatter 300 arbeidsplasser skal innfris snarest mulig, men senest i løpet av høsten.

Det som har skjedd på Stortinget og i Regjeringsbygningen de siste dagene har bare understreket at Høyre og regjeringen Willoch har helt andre planer for Tyssedal enn både aluminium og ilmenitt. Begge prosjektene strider mot Høyres industripolitiske filosofi selv om partiet for ett år siden lanserte ilmenittprosjektet som en ny

giv i industripolitikken. lende mange Høyre synes å ha glemt de

## «Det trepartialternativet»

— Det er vanskelig «forliket» før jeg lyden, sier ordfører til Haugesunds Avis.

— Men jeg kan næringsfond, sel oner kroner er s ger, kan løse no som har fått g beidsplaserne so Imidlertid synes sitivt at det er rantien skal in målet er bare o på dette. Willo miniumsverk 30. mai 1981. torpederte det ved å fremlegge forslag om ilmenittverk i 1982. Prosjektet ble til og med fremstilt som representativt for en ny æra i industripolitikken. I år torpederer han sitt eget forslag og stiller nærmest kabinett-spørsmål på det.

Det er slikt som kan få en til å stille spørsmålstegn ved hvordan demokratiet fungerer i parlamentarisk verdens, sier Stensland som legger til: «Opplaget nå tyder på at regjeringen legger opp til «det tredje alternativ», hva nå det måtte være.

Det er flere enn Stensland som Det er få som tviler på at

enn hva det gjør nå. Og det sier ikke så rent lite. I tillegg vil regjeringen måtte legge frem nye sysselsettingsoppgaver i indre Hardanger. Men det står ikke til å nekte, tyssedølene må enda i et halvt år leve i det uvisse. I tillegg tror de ikke lenger på ett eneste ord som kommer fra politikerne, samme hva de heter.

## Beinhardt

— det er ike til å legge skjul på at det ikke var let å komme fram til et kompromiss i Tyssedalsaken, sier Asbjørn Haugstvedt til Haugesunds Avis. Haugstvedt har sammen med Aksel Fossen kjempet en drabelig kamp for lokal-samfunnet i denne saken og synes det var en trøst, når saken først skulle utsettes, at nestformannen i fagforeningen ved DNN Helge Fedje har uttalt seg til avisa Dagen om at en utsettelse kan aksepteres på gitte premisser.

pa gitte premisser

## Fordel tross alt?

Ingenting er så galt at det ikke er godt for noe. Utsettelsen betyr at aluminiumsprosjektet vil stå enda sterkere rent økonomisk til høsten

## «Leve Tyssedal»

## Utsettelse tåles ikke

Når sentralstyret i Kr.F. møtes i dag vil det ligge et telegram fra Velforeningen Leve Tyssedal på bordet. Et telegram med et meget utvetydig innhold:

«Tyssedal tåler ingen ytterligere utsettelse. Stå fast på løftene dere har gitt oss, avgjør saken nå. Nytt aluminiumsverk til Tyssedal. La Tyssedal leve.

**Desperat hilsen  
Velforeningen  
Leve Tyssedal»**

## ODDA KOMMUNE

FORMANNSKAPSKONTORET

SENTRALBORD (054) 41 711

POSTBOKS 96  
5751 ODDAArk. 624.1  
SW/ton.

Velforeningen "Leve Tyssedal"

Postboks 107

5770 TYSSEDAL.

### SØKNAD OM ØKONOMISK STØNAD.

Deres søknad av 5. juni d.å. ble framlagt for Odda formannskap i møte 6. juni, sak nr. 232, der det ble gjort slikt vedtak:

"Saken avvises."

Dette til Deres orientering.

Odda Formannskapskontor, den 15. juni 1983.

*Karstein Bremnes*  
Karstein Bremnes,  
rådmann.

*Sigvald Waagen jr*  
Sigvald Waagen jr



## Aluminium? NÅ?!

Som det kjem fram av den ganske omfattande dokumentasjonen som er framlagt her, stod det mange stridar ein måte kjempa seg igjennom, før ein kunne koma seg avgarde til Oslo.

Det som ikkje er kome fram er det omfattande arbeidet som blei gjort av aktivistane i Leve Tyssedal. Desse auka i antal heile tida og mot slutten var det 30—40 personer, dei aller fleste kvinner (!), som kasta kreftene inn i førebuingsarbeidet.

Utan det oppofrande arbeidet frå

så mange ildsjeler er det heilt klårt at det ikkje hadde blitt nokon Oslo-tur. Folk gjekk på dørene og samla inn pengar og fekk nye til å bli med på turen, andre sende ut oppfordringar om støtte, løpesetlar, nokre malte plakater og transparenter, kort sagt: ein fantastisk innsats frå ei mengd aktivistar under ei leiing med politisk gangsyn og sterke organisatoriske evner.

Sjølvsagt blei folk forbanna når ein såg korleis enkelte oppførte seg,

men på mange måter hadde ein blitt så vandt til slike angrep «frå sidelinja» at dei etter kvart mista verknaden sin. Det folk var meir opptekne av var å få fram at vi skal sloss til siste slutt for Tyssedal og å få markert at vi får auka støtte frå heile landet.

Vi let Torstein Dahle, siviløkonom, RV sin førstekandidat i Bergen i haust, og kjær ven av Tyssedal, få oppsummera den politiske stoda i det tyssedølene set seg på bussen om morgonen 8. juni 1983 for å reisa den lange vegen over fjellet til Oslo.



Unge tyssedøler møter rallaren frå Notodden.

(Foto: A. Joramo)



## Aluminiumverket – en lønnsom bedrift som Tyssedal trenger *nå*

Når statsminister Willoch omtaler aluminiumverket som «milliardsluk», snakker han mot bedre vitende. *Alle* kalkyler tyder på at aluminiumprosjektet vil være et lønnsomt prosjekt — uten 5 øre i subsidier.

Beregningene fra Årdal og Sunndal Verk viser 20% avkastning på all den kapital som skal skytes inn i prosjektet. Regjeringens egne beregninger viser 8% avkastning (og bygger på forutsetninger som er usedvanlig pessimistiske, og dels feilaktige).

Prosjektet innebærer *ingen* milde gaver til Tyssedal. Staten skal skyte inn aksjekapital som den skal få utbytte på. Verket skal betale kraftpriser i samsvar med Stortingets vedtak om prisvilkår for kraftkrevende industri i Norge.

Det er tilsynelatende ikke noen grense for hvilket lavmål argumentasjonen kan legges på fra Regjeringen og dens støttespillere. Det har f.eks. vært anført som urimelig at «samfunnet skal betale ca. 6 millioner kr. pr. arbeidsplass i Tyssedal». Enhver økonom vet at dette argumentet er nonsens. Selv en snevert økonomisk tankegang bygger på at det er avkastningen på kapitalen, *ikke* investering pr. arbeidsplass, som er avgjørende for prosjektvurdering. Hvis investering pr. arbeidsplass var avgjørende, burde alle investeringer i oljesektoren øyeblikkelig stoppes!

For Tyssedal er det avgjørende at aluminiumverket gir følgende fortrinn:

- Det gir 262 arbeidsplasser — som er et minimum av hva Tyssedal trenger.
- Prosjektet er ferdig utarbeidet, og anleggsarbeidet kan igangsettes straks. Alle de andre alternativene er mer eller mindre luftslott. Man må

huske at det er brukt altfor mye tid allerede. Den gamle fabrikken er revet. Tyssedølene kan ikke vente på ytterligere prosjekturedninger som til overmål kanskje ikke fører til et realiserbart prosjekt. Ingen kan vente at tyssedølene skal godta å tvinne tommeltotter og leve på trygd i flere år framover.

- Aluminiumverket bygger på Tyssedals egen ressurs: *Kraften*. Når det nye verket en gang i framtiden vil være modent for nedleggelse, vil tyssedølene fremdeles ha kraften til disposisjon. Dette er et avgjørende poeng. Ingen ville ha funnet på å bygge noe industrisamfunn i Tyssedal hvis

det ikke hadde vært for at dette stedet hadde billig kraft. Tar man kraften vekk, står man tilbake med en isolert bygd som neppe har andre konkurransefortrinn enn den støtten den kan få fra staten. Da vil Tyssedal framstå som en byrde for samfunnet — uten noen framtid.

Tyssedølenes slagord *Krafta er vår* treffer kjernen i hele saken. Skal de billige kraftressursene tas vekk fra de mange lokalsamfunnene som er bygd opp omkring disse ressursene, vil resultatet uvegerlig bli at mye av ryggraden i distrikts-Norge faller sammen. Det vil være en nasjonal ulykke — og uhyre slett samfunnsøkonomi.

«Folksomt i Oslo sentrum:»







På veg til Oslo vert tyssedølene helsa av Notodden-arbeidarane som har skipa til solidaritetsmøte ved rallar-statuen.

(Foto: A. Joramo)

• Aluminiumverket som prosjekt har dessuten den fordel at det involverer mindre grad av usikkerhet enn de foreliggende alternativene. Aluminium er et metall som fortsatt har store uutnyttede muligheter. At prisene svinger mye, er ikke avgjørende; det som betyr noe er hvilken gjennomsnittpris som kan oppnås over en lengre periode. Regjeringen tabbet seg ut da den i fjor gjorde et stort nummer av de daværende rekordlave prisene. Alle som kjenner alumium-markedet vet at prisene svinger mye. Det avgjørende er imidlertid hvilket langsiktig nivå de svinger rundt. I det lange løp er det liten tvil om at aluminium har en sikrere framtid enn de andre alternativene for Tyssedal.

### Ilmenitt-prosjektet — et dårligere alternativ

Ilmenitt-prosjektet er mer konkret og bedre planlagt i dag enn for ett år siden. Slik sett er det ubegripelig at Regjeringen kunne være så entusiastisk

for ett år siden, mens den i dag bare ser negative sider ved prosjektet. Dette kan ikke forstås på annen måte enn at hele ilmenitt-prosjektet er ment som et påskudd for å torpedere aluminiumverket, og at Regjeringen nå mener tiden er moden for å ta enda et skritt fram mot det som er Regjeringens hovedmotiv: *Å ta kraften fra Tyssedal, fordi den mener å kunne tjene enda mer penger på den andre steder.*

Ilmenitt-prosjektet har følgende ulemper i forhold til et alumiumverk:

- Færre arbeidsplasser (200 i stedet for 262).

- Det gjenstår fortsatt utredningsarbeid før prosjektet kan settes i gang. Bl.a. er alle problemer omkring produksjonsprosessen ennå ikke løst.

- Anleggsarbeidet kan ikke få en slik framdrift at det sikrer beskjeftigelse i de første årene.

- Hovedproduktet, titanslagg, blir av en slik beskaffenhet at det bare kan brukes i en videreforedlingsprosess som er på vei ut. Produktet

har altså framtiden bak seg — til forskjell fra alumium.

- Markedet for titanslagg er nå et monopolmarked, der det kanadiske konsernet QIT har full kontroll. Faren er stor for at et ilmenittverk i Tyssedal straks vil bli kastet ut i en ødeleggende priskrig.

- Den større usikkerheten ved et ilmenittverk avspeiles også i de framlagte kalkylene, som spenner fra en avkastning på 28% i den meste optimistiske beregningen, til en avkastning på 2% etter de meste pessimistiske anslag.

- Til slutt et argument som er avgjørende for Tyssedals framtid: Et ilmenittverk vil medføre at Tyssedal blir fratatt  $\frac{1}{3}$  av de kraftressursene som nå er disponible. Det gir vesentlig dårligere framtidsutsikter for bygda.

### «Det tredje alternativ»

Dette gjelder diverse planer for mindre industribedrifter i Tyssedal. Felles for disse planene er at de er ganske luftige og stort sett befinner seg på





70 fagforeningsfaner frå heile Norge var med i demonstrasjonen rundt Stortinget 9. juni. (Foto: Bernt Eide)





høyttenkings-stadiet. Det mest konkrete som Regjeringen omtaler i St.meld. nr. 87, er økt kapasitetsbehov ved A/S Fjellstrand Alumium Yachts (FAY). Dette skal kunne gi grunnlag for 40 arbeidsplasser. Men det hefter stor usikkerhet ved prosjektet, og det baserer seg på at et annet lokalsamfunn skal miste tiltrente muligheter for nye arbeidsplasser.

Det må nærmest karakteriseres som uanstendig å foreslå at Tyssedal-samfunnets skjebe nå skal baseres på et antall industri-prosjekter som ennå ikke er kommet lenger enn til tanke-stadiet. Det er ganske enkelt *altfor sent* å lansere «gode ideer» som ikke kan gjennomføres straks. Den gamle fabrikken er revet, arbeidet med det nye aluminiumverket var

i gang på bails av et enstemmig stortingsvedtak, Tyssedalsamfunnet har nå i over ett år vært kasteball i et politisk spill som ikke gir noe grunnlag for tillit til framtiden. Dette spillet kan ikke fortsette.

En annen viktig svakhet ved disse «alternativene» er at de knytter seg til forutsetningen om at Tyssedal skal miste kraften. Hvis man tenker seg at det i løpet av et års tid var utviklet en industripakke bestående av 3—4 bedrifter, så sier det seg selv at det ville være stor fare for at flere av dem ikke ville kunne klare seg mer enn 5—10 år. Etter den tid ville da Tyssedals-samfunnet stå ribbet tilbake, uten kraftressurser. I tillegg til tidsfaktoren (som er argument godt nok

er dette en grunnleggende svakhet ved et tredje alternativ.

Det er bra å begynne å tenke på mulighetene for å utvikle et mer allsidig næringsgrunnlag for landets ensidige industristeder. Men det er en utvikling som må gå over en viss tid, slik at nye bedrifter kan vokse til på en noenlunde harmonisk måte. En sjokk-etablering av 3—4 bedrifter basert på en intens leting etter et hvilket som helst prosjekt som kan stoppe kjeften på tyssedølene, er ikke måten å gjøre det på. En mer langsiktig utvikling av et allsidig næringsliv må ta utgangspunkt i de sterke sidene ved vedkommende lokalsamfunn. Det er vanskelig å forstå at man da skulle komme utenom kraften i et samfunn av Tyssedals type.



*Leve Tyssedal! Leve Tyssedal! Songen og slagorda ljoma framfor Stortinget. Formann i Velforeningen, Nils Moldøen, i framgrunnen. (Foto: A. Joramo)*





Jan Salomonsen, stel Leve Tyssedal-showet frå Willoch og den nyutnemnde trepartiregjeringa. (Foto: Klassekampen)

## Situasjonen foran Stortingets behandling

Flertalls-iunnstillingen fra Industri-komiteen innebærer enda en utsettelse. Man skal ikke lese mye mellom linjene før man forstår at det er «det tredje alternativ» som det legges opp til. Et vedtak i tråd med flertallsinnstillingen kan ikke karakteriseres som annet enn en skandale.

Det er ikke til å unngå at forbitrelsen spesielt må rette seg mot Kristelig Folkeparti, som først går ut og krever avgjørelse før sommeren, og som deretter selger hele saken for å komme inn i Regjeringen. Dette kan ikke karakteriseres som annet enn et *svik* mot tyssedølene og mot alle som er opptatt av å bevare og utvikle et levedyktig distrikts-Norge.

Endeleg — på veg til Oslo kan dei ansvarlege for turen oppsummera at ein alt har vunne to små, men viktige singlar. Sjølv om alle er 99% klår over at det ikkje blir siger for aluminium i denne omgangen, så er det ein stor styrke med tanke på dei kampane som må komma, at vi stod på også denne gongen. For det andre så er turen i seg sjølv ein siger over dei som siste månaden har brukt kreftene sine på å åtvara mot «unødige demonstrasjonar» oppfylt som dei var i illujsonar om Kr.f. sitt særegne samvit og politiske moral.

Nå står det att å sjå kor godt vi har smidd einskapen med andre lokal-samfunn og fagforeningar, kor godt solidariteten er blitt utvikla og ikkje minst organisert (!) sidan året før.

I tillegg er det eit uomtvisteleg mål at vi skal visa att i media, at vi får fram den terroristiske politikken styresmaktene har ført ovanfor Tyssedal dei siste 10 åra og at også media må makta avsløra den groteske umoralen som ligg i akseptereinga av Kristeleg Folkeparti sitt taktikkeri for å koma inn i Regjeringa.



T. Dahle sørga for at Leve Tyssedal kunne leggja m.a. følgjande på Stortingstaburettane 9. juni:

«Denne systematiske svartmalingen har ett formål: Å prøve å torpedere det prosjektet som vil gjøre at Tyssedal får beholde selve eksistensgrunnlaget sitt: KRAFTEN.

Det er mer enn pinlig når Industrikomiteens flertall legger ut om hvor spesielt usikkert et aluminiumverk vil være. Dette har man mage til å si, når de alternativene som man vil satse på, er noen luftslott på høytekningsstadiet.

Til slutt noen ord som kaster ytterligere lys over den skandalen som

nå utfolder seg. I stortingsmeldingen refererer Regjeringen følgende:

*«Elkem A/S satte i brev av 29. mars 1982 fram forslag om at departementet innhentet en uavhengig vurdering av både teknologiske og kommersielle sider ved ilmenittprosjektet.»*

Merk datoen: 29. mars 1982. Denne anmodningen blåste Regjeringen i den gang. Men i dag, 15 måneder senere, er det plutselig blitt helt påkrevet å foreta den uavhengige vurderingen som slett ikke var nødvendig tidligere. Ja, denne utredningen er faktisk så viktig, at tyssedølenes

desperate behov for avklaring nå heller må vike.

Dette er et gjennomskuelig spill: Det har aldri vært Regjeringens hensikt å bygge i lmenittverk i Tyssedal! Prosjektet har bare hatt ett formål: Torpedere aluminiumverket.

Krtistelig Folkeparti lovet oss for 2 uker siden på tro og ære at de ville kreve avgjørelse før sommeren. Nå har de solgt Tyssedal for å sikre seg noen taburetter selv. Deres medlem i Industrikomiteen Asbjørn Haugstvedt har tidligere stått på aluminimverk som det eneste akseptable alternativ. Nå presterer han på den ene side å si at «de opplysninger som komi-



Dei siste parlamentariske illusjonane brist på Stortingsgalleriet.

(Foto: Klassekampen)



Vi skal la klipp fra pressa desse junidagane få lov å skildra kva betydning det hadde at fleire hundre tyssedøler på ny reise til Oslo i demonstrasjon.





**I HØYDEN?**  
er løsningen

GRAVING - TRANSPORT

**SJON A/S**

9 - 5033 Fyllingsdalen

# Bergens Tidende

FLYSENDT LØSSALG NORD-NORGE KR. 4.50

FREDAG 10. JUNI 1983

FLY / EKSPRESS LØ

Uvisst om Tyssedal får storindustri

## Bom for aluminium trass i hard kamp

Tyssedaldebatten i Stortinget i går satte ettertrykkelig bom for aluminium. Planene vil ikke en gang bli oppdatert og vurdert når ilmenittprosjektet kommer til Stortinget igjen i høst. Ilmenitt fortøner seg fortsatt som en noe usikker løsning. Vurderingen utenlandske konsuler nå skal foreta kan dermed bli nokså avgjørende for om det kommer et storindustriprosjekt til Tyssedal.

Gårsdagens debatt i Stortinget ble et knallhardt oppgjør mellom de borgerlige partier og opposisjonen, og særlig hardt gikk det utover Kristelig Folkeparti. Det ble likevel understreket fra alle hold at arbeidsplassgarantien fortsatt står ved lag. Kommunen forbereder seg imidlertid på at det nå blir alvorlige problemer med å hindre økende fraflytting.

Side 16

Statsminister Kåre Willoch hilste på en demonstrant fra Tyssedal utenfor Stortinget før han la fram regjeringserklæringen. (NPS-foto)



## — Vi skal fortsette kampen

I Oslo: Jan Grønvald 9.6.83

—Vi resignerer ikke, men vi strategiserer. Kampen skal vi fortsette. Politikerne skal ikke få fred en time. Fagforeningsledere for Tyssedal Olaf Albertsen, John Andersson og Helge Fodje sa det alle tyssedalere tenker i dag. Men tyssedalene taper likevel sin sak i stortinget i løpet av dagen. Men de er i Oslo likevel. De ønsker å se politikerne i øynene for uttalelsesvedtaket blir gjort. Og så er det noe mer enn et uttalelsesvedtak, det tror tyssedalene. De tror ikke på et eneste løfte. Og det sier de greit og klart fra om, både til politikere og til andre som vil høre dem.

200 tyssedalere kom i busser over fjellet og ble møtt av fagorganiserte i Notodden i går, hvor det ble arrangert solidaritetsutstilling i Rallarparken. I går kveld var tyssedalene samlet til et stort arrangement i Folkets Hus i Oslo. En fullsatt sal fikk se utdrag av Tyssedalereven, et kjempeskriptet arrangement. Koret besto av busadeltakerne og noen samtlige av dem var med og sang. Lars Klei-



«Busskoret» fra Tyssedal åpnet det store solidaritetsarrangementet i Folkets Hus i Oslo i går kveld, med nydiktet vise.

strand, skuespillerne Sigrav Be og Frøydis Armand var blant de mange aktørene på solidaritetsarrangementet i Folkets Hus.

En av tillitsmennene fra Sullitjema ble møtt med skende applaus da han hilste fra et samfunnsrom er i enda større vandelsøsthet: en Tyssedal. Leder for Leve Tyssedal-bevegelsen Nils Møkkem holdt en sterk og svært utvetydig appell under dette arrangementet, et arrangement som ble ledet av NRKs Bjørn Nilsen og Tyssedals egen Sigrav Tyssedalsteit.

Den store spenningen er egentlig uløst. Stortingetsdebatten i dag kan knapt gjøre noe fra eller til, men politikerne fra de borgerlige partiene, og i særdeleshett Kristelig Folkeparti, må finne seg i at de i tall har mistet sin troverdighet både i Tyssedal og Sullitjema.

Det har de da også fått demonstrert tydelig i går og i dag morges. De den nye regjeringen ble presentert og avfotografert utenfor Stortinget i går ettermiddag var det Tyssedal som stjal showet. Demonstrasjoner med svært utvetydige transparanter ble de første til å hils på Willoch og hans nye regjering. Og det var tydelig en irritasjon Willoch som oppdaget at fotografene var svært interessert i å få regjeringens arbeidstid sammen med Tyssedal-demonstrantene.

## Bratz fikk tenkepause

Trass i demonstrasjoner utenfor Stortinget (bildet) med krav om at Tyssedal-saken måtte avklares igår, vedtok Stortinget med 76 mot 54 stemmer å ta en «tenkepause» til høsten før endelig avgjørelse kan skje. Industriminister Jens-Halvard Bratz vil nå la et internasjonalt konsulentfirma utrede om et ilmenittverk i Tyssedal blir lønnsomt.









**VÆRET:**  
Devis skyet - opphold

for månedens  
beste tips!

**Haugesunds Avis**  
Sentralbord 047/29066

**1000 Kr.**

**FREDAG**  
10. juni 1983

Utfallet i Stortinget som ventet:

# Store ord i Tyssedalsaken, men tvil på troverdigheten

Av Jan Grønvald

Oslø: Selv om statsråd Jens Halvard Bratz bedyret i Stortinget i går at ilmenittprosjektet ikke er skrinlagt og at det fortsatt er dette prosjektet regjeringen setter sin lit til, benger det i lufta at det er tvilsomt om det vil bli noe ilmenittverk, eller for den saks skyld aluminiumsverk i Tyssedal om Høyre får det som de vil. Skjønt det er knapt enighet en gang i Høyre om dette. — Tyssedalsaken er ikke bare Stortingets sikreste vårtegn, som Kr.F.'s Hans Olav Tunesvik uttrykte det. Saken er etter hvert blitt en så stor belastning for nasjonalforsamlingens troverdighet at representantene får gåshud bare de hører navnet Tyssedal.

Saken ble som ventet utsett for Arbeiderpartiets og SV's stemmer. Debatten hentet ikke fra noe nytt, selv om det ikke kan være tvil om at regjering og stortingsrepresentanter holder sysselsettingsgarantien på 262 arbeidsplasser ved lag og. Og samtlige partier forlanger nå at industridepartementet legger fram konkrete og skillelige alternativer for Stortinget tidlig på høsten. Industridepartementet ble for øvrig nærmest huffet for sin behandling av Tyssedalsaken. Særlig var kritikken sterk fra Arbeiderpartiet og SV, men Kristelig



Tyssedølene som demonstrerte foran Stortinget torsdag sparte ikke på kruttet når det gjaldt å legge fram sine argumenter for politikerne som var på vei til jobben. Her er det Kr.F.s Jakob Aano som får høre demonstrantenes syn på saken.

Folkparti i ikke langt etter. Aller hardest i kritikken var saken ordføreren Inger Lise Gjerv, Ap, og partifellen Aksel Fossen.

Arbeiderpartiets forslag om aluminiumsverk i Tyssedal falt som ventet, og industriminister Jens Halvard Bratz avviste aluminiumsverket både på regjeringens og Arbeiderpartiets premisser, premisser som var nok så

forkjellige. Førstnevnte er regjeringens egne. Arbeiderpartiet er identiske med Aurdal og Sunddal Verks.

De store og gode ord manglet ikke denne gang heller og da Kr.F.'s Hans Olav Tunesvik var på talerstolen visste han at alle tyssedølene på galleriet trodde for seg at de ville få det som han sa. Tunesvik saute fram krav til regjeringen på vegne av sitt parti om

en forpliktelser om at et ilmenittprosjekt skal realiseres om det ikke dukker opp dramatiske negative beregninger utover høsten. Og han krevde at det burde bli lett for Stortinget å avgjøre at det skulle bli etablert storindustri i Tyssedal og at vedtaket måtte komme tidlig på høsten. Han fikk for øvrig ikke noe svar på sine krav fra industriminister.

Ingen, selv ikke Høyre, måtte tåle sterkere kritikk for sin rolle i Tyssedalsaken enn Kristelig Folkepartis representanter som utenfor hovedingangen av demonstrerende tyssedøler. Det samme fikk de høre i salen av politiske motstandere. Sentierpartiet derimot, den andre samarbeidspartnern, som hele tida har ført saken helt og holdent på Høyres premisser, slapp svært billig unna.

— Det er ingen tvil om at Kristelig Folkeparti skal være lønnsomme, sier de to.

Hans Olav Tunesvik:

## — Vi må rette opp vår troverdighet

Hans Olav Tunesvik hadde en utakknelig jobb da han måtte overta Tyssedalsaken for Asbjørn Haugstvedt i Stortinget i går. Det ble blant annet understreket overfor Haugesunds Avis av Kjell Magne Bondevik.

— Og skulle ilmenittprosjektet vise seg å ikke være godt nok, må aluminiumsverket igjen komme fram på bordet, sier Tunesvik. Og også dette blir bekreftet av Bondevik som mener at det er et rimelig forslag Arbeiderpartiet har satt fram om å få en oppdatering av aluminiumsverket også til høsten.

Hans Olav Tunesvik understreket at det blir en oppgave for Kristelig Folkepartis fire statsråder å arbeide for en klar og god løsning i Tyssedalsaken sine høstsesjonen starter.

Det er ingen tvil om at Kristelig Folkeparti skal være lønnsomme, sier de to.

Det er ingen tvil om at Kristelig Folkeparti skal være lønnsomme, sier de to.

Det er ingen tvil om at Kristelig Folkeparti skal være lønnsomme, sier de to.

Tillitsmenn fra Sokndal:

## - Ilmenitt redder oss begge

— Og så begynner å tro at ilmenittverket ble lantert i fjor for å torpedere aluminiumsprojektet. Det er etter hvert mye som tyder på at det har vært slik, og det er også vanskelig å tro på det som sies fra regjeringen.

Ordene stammer fra Magne Tang og Stein Aros, henholdsvis funksjonærillitsmann og tillitsmann for gruvarbeiderne ved A/S Titania i Sokndal. Begge to fulgte nøy med i Stortingetsdebatten om Tyssedal i går. I det samfunnet de to representanter setter sin sin i nettopp til et ilmenittverk i Tyssedal, og man tror på

den uvanlige foraktigheten det tradisjonelt har sett for, er det kanskje den aller beste indikasjonen på at et ilmenittverk er liv laga og så vel det.

16

POLITIKK • KOMMENTAR • DEBATT

# Ingen tårer fra tyssedølene

28 EVA GRØNHØIM OG ARNE HESJEDAL

OSLO. Nok en gang ble det lange timer for Tyssedal-folket i Stortinget. Nesten på årsdagen for fjorårets behandling kom nærmere 200 tyssedøler til Løvebakken for å kjempe til siste slutt for bygdas fremtid. Og nok en gang måtte de reise hjem med uforrettet sak. Denne gang var de imidlertid ikke alene. I morgentimene i går hadde de stiftet fra 70 lagforeninger som nærmest dannet i mai-tog med sine faner rundt Stortinget, med fagorganiserte fra utsatte industristeder og bedrifter fra hele landet.

Denne gang var det ingen tårer. Denne gang var det ingen tårer. Denne gang var det ingen tårer. Denne gang var det ingen tårer. Denne gang var det ingen tårer.

sedølene samlet seg på plenen utenfor Stortinget. Det var ingen høyde naktet å se blant staren som skulle hjem til Tyssedal i busser i natt.

Trepartitrollet — Trepartitrollet traff ikke helt, sa formannen i Leve Tyssedal-aksjonen, Nils Molden, da han kalte sine tropper sammen. — Tyssedal har ikke tapt! — De kan ikke la livet av oss. OG de kan ikke stoppe oss med dette stortingsvedtaket.

Uansvarlige — Vi kan ikke være like uansvarlige som de bak oss her, oppfordret han, og siktet til Stortingets representanter. — Den solidariteten vi har opplevd her kan bli brennende for den politikk som har blitt demonstrert her i dag, sa Molden, som lovet at veltandens i distriktet skulle bli styrt. — Men vi må innstille oss på at våre me-

toder ikke er gode nok. Vi må utvikle vår styrke. Da har vi en mulighet, men vi er ikke hodelose i fortvilelse. Vi lover hverandre at Tyssedal skal leve, sa Molden i sitt kjepp og fikk følge av hele Tyssedal-kontingenten i sitt «Leve Tyssedal» som bar langt utover den nye sommerkleiden på Løvebakken.

Tidlig krøkes... — Nå vartet ikke alle demonstrantene som holdt ut så lenge. Den desidert yngste blant solidaritetsdemonstrantene på Stortingets galleri var nok den lille damen på fem måneder som i følge med sin mor måtte forlate arenaen forholdsvis tidlig på dagen. Med diverse beroligende berøgheter som tåkesnakk, rangler og tørr bleier kunne ikke stagen herne i lengden, selv om hun til å begynne med lot til å stortvise i landets nasjonalforsamling. Nå var det for øvrig tredje gang den unge frøken demonstrerte, så det er klart at neste gang stiller hun nok sterkere.

— Den skal tidlig krøkes — som kjent...

Boller og brus — Det ble nok også lange timer for andre små. Noen stille tårer falt nok etter hvert i kjedsommelighet og i kampen for å rette seg etter Stortingets verdighet som ikke tillater «støvede uttrykk for minner og bifall» på galleriet, ifølge reglementet. Lett var det nok ikke for smårollene å mobilisere den nødvendige ærbøydhet og tilsmidighet, og stillingene boller og brus ble brakt fram for å høyne både det ene og andre i høsten oppunder tåket i Stortingssalen. Varmen gikk som kjent opp, og det var heller ikke bare ute-temperatur som påvirket gradetoken i Stortinget i går — hvis det finnes en slik. Felbar var den i hvert fall både hos tyssedølene og blant representantene — på mer enn én måte.



Selv ikke et kraftig håndtrykk fra olje- og energiminister Kåre Kristiansen kunne hjelpe tyssedølene som sto oppslitt utenfor Stortinget i går.

## Visdomsord om Tyssedal

Arvid Norvick (H) — Statsråd Bratz fortjener honnør for den nøkternhet, ansvarlighet og det mot han har vist ved å legge saken fram for Stortinget på nytt. — Det må være et hovedpoeng å sikre Tyssedal trygge arbeidsplasser, og ikke arbeidsplasser for enhver pris.

Hans Hammond Rombach (V) — Bådeilagsvis viser det seg nå at regjeringens forslag var dårlig fundert. Det er grunn til å reise kritikk overfor statsråden for sakbehandling. Stortinget må ha tillit til det som legges fram og kunne stole på de vurderinger Regeringen gjør.

Reidar Due (SP) — Samtidig vil jeg berde at Odde-samfunnet med dette — hvis det ikke blir realisert et ilmenittverk — får en helt unik sjans til å undersøke hvordan man realiserer omstillinger i praksis. Med den innstrømte lokalbefolkningen har vi i kansen om aluminium, burde det være energi til stede som kan gi et godt utgangspunkt for søkning på alternativer til et ilmenittmiljø.

Aksel Fossen (Ap) — Jeg følger medynk med dem i Kristelig Folkepartis gruppe som er blitt forledet, men ikke har mot til å si nei til dette uvertige spillet. — Hvis hjelper det å vinne noen plasser ved Kongens bord når en har skadet sin sjel? — Jeg trodde Sentierpartiet hadde en vis sans for at verdien av fedres slitt skulle gå på i arv til barna, men det gjelder vel ikke for industristeder. Nå vil både Sp og Høyre gjøre dem avveksle.

Grete Knudsen (Ap) — For oss her i Stortinget er det reppre noen som har opplevd å gå arbeidsledig. Derimot burde vi vite noe om det å ha et arbeid — at noen har bruk for vår arbeidskraft er de ting som er helt grunnleggende for vår selvrespekt.

Carl Fr. Lounonen (H) — Jeg har sympati for problemene for de i Odde. De arbeidsplasser Bue-

## Knallhardt punktum for aluminium



# Haugesunds Avis

Nr. 130 - 88. årgang

Fredag 10. juni 1983

## Tyssedal-saken utsatt, men garantien står fast

Lat oss berre få leggja til: Som einaste avis i landet har enno ikkje Hardanger Folkeblad registrert at fleire hundre tyssedøler reiste i demonstrasjon til Oslo.

Etter at dei slitne demonstrantane er komne attende, er dei aller fleste mest opptekne av å kvila ut. Einaste organisasjonen/instansen som har gjort ei oppsummering av situasjonen og utvikla ei ny plattform til å kjempa vidare på, er Velforeningen Leve Tyssedal.

Måndag 13. juni var det folkemøte på nytt i Tyssedal og det blei gjort følgjande vedtak.



Det var store demonstrasjoner utenfor Stortinget i går morges i forbindelse med Tyssedal-saken.

Da Tyssedaldebatten ble avsluttet i går og utsettelsen av saken var et faktum, slik regjeringen hadde foreslått i sin melding, hadde samtlige tilknyttede på galleriet reist seg. Under hele voteringen sto tyssedølene oppreist og opplevde at selv under voteringen holdt ikke Kristelig Folkeparti hva man hadde trodd partiet hadde lovet i debatten.

I Oslo: Jan Grævdal

Partiet stemte ihvertfall ikke en stemme for at aluminiumsplanene også skal oppdateres og legges fram i høst samtidig med ilmenitt-prosjektet. Dette var arbeiderpartiets subsidiære forslag i saken.

Men forsikringer og bekreftelse på sysselsettingsgarantien fikk tyssedølene. Høyre ble stadig spurt om denne garantien, og det var lenge uklart om hva partiet egentlig mente om den i Stortingssalen. Til sist var det ingen vei unnom. Flere av Høyres talere gav klar beskjed om at sysselsettingsgarantien står ved lag og at de 100 millioner kroner som er foreslått opprettet i et fond understreker denne garantien. Dessuten har tyssedølene fått utvetydig beskjed om at aluminiumsverk vil det aldri mer bli i Tyssedal, ikke så lenge Høyre og mellompartiene har makten.

Uansidelbart etter avstemmingen holdt tyssedølene en lynrask pressekonferanse utenfor Stortinget. Om noen skulle ha trodd noe annet: Tyssedølene gir ikke opp. De fortsetter å sloss. Formann i

Velforeningen «Leve Tyssedal», Nils Molden sa:

— Vi skal ta politikerne på ordet denne gangen også og sørge for at sysselsettingsgarantien blir oppfylgt. Vi skal minne dem på dette i et eneste kjepp, og tross alt er ikke livet ulevelig for oss, selv om vi nå fikk denne utsettelsen. Vi har vegarbeid og mange av oss trives faktisk med det. Men vi vet jo at det er midlertidige jobber. Nå har vi ikke noe valg. Vi kan ikke stanse med dette og må fortsette å sloss, og en av de hyggeligste og beste tingene er at solidariteten fra andre fagorganiserte har vært så sterk.

Samme Molden holdt en appell på Eldsvoll Plaza for de tilreisende tyssedølene og appellen ble avsluttet med et rungende, «Leve Tyssedal», som ble gjentatt 5 ganger før de ca. 200 menneskene gikk inn i busene og dro tilbake.

Også fagforeningsformann Olav Albertsen sa seg enig med Nils Molden. Det nytter ikke å gi opp, sa han. Nå tror jeg ikke lenger på noen andre enn oss sjøl. Politikerne nytter det ikke å stole på, sa han.

Siste side



Kampfellesskap som aldri før — det fikk vi demonstrert utafor Stortinget i morgentimene i går.

FOTO: BERNT EIDE



# Kr.F. mest utsatt da Tyssedal ble utsatt:



— Vi kommer tilbake om vi så skal på! Det var ingen hertelige omfavnelser da industriminister Jens Håvard Bratz i pausen under stortingsforhandlingene påtraff Tyssedalsene utenfor Løvebakken. Men Bratz, som ikke nettopp er forendt med demslags for ti-  
— Han er en sli for. Det var ikke mye vi fikk ut av ham, sa Tyssedalsene da Bratz trakk seg tilbake. Formannen i Velforeningen  
«Leve Tyssedal», Nils Molden, mente likevel at fremste på Tings hadde hatt sin virkning.  
— Vi har merket at representantene tar hensyn til folk på galleriet, og vi er mer optimistiske for muligheten til et konstruktiv Tyssedal etter stortingsdebatten enn vi var etter å ha lest komitéinnstillingen, sa han, men løvnet likevel ikke Kr.F. nye øre. Stortinget på 100 millioner betraktet han som et middel til å redde ut løftene partiene tidligere har kommet med.

## - TAR SKADE PÅ SJELEN

AV ASNE HAUGLI og TROND SOLBERG (foto)

Ingen videre utsettelse av aluminiumsalternativet, og utsettelse av Tyssedal-saken til høsten.

Som ventet gikk Kr.F. sammen med Høyre og Sp og sikret flertall for utsettelsen. Men partiet fikk gjennomgå i Stortinget i går.

— Hva hjelper det å vinne noen plasser ved Eidsvoll børs når man tar skade på sin sjel? spurte Aksel Foseth, Ap. For bare to år siden ble aluminium enstemmig vedtatt, for et år siden ble det fortalt for ilmenitt, og nå, altså flertall for utsettelse.

Til høsten — når temperaturen faller til null —

var redd Aksel Foseth hadde rett i sin konklusjon om at Regjeringens mål hele tiden har vært å hindre at det blir bygd en statsbedrift i Odda.

— Man har i Høyre aldri egentlig trodd på ilmenittalternativet, sa Ap-lederen. Etter hennes mening var hovedpoenget med fjorårets innføring av ilmenitt-alternativet å stanse moderniseringen i Tyssedal. Samtidig var forslaget i fjor godt egnet for å få miljøpartiene med på sviket av Tyssedal.

Industriminister Jens Hal-

vard Bratz avviste at ilmenittprosjektet skulle være skrinlagt, og understreket at man fortsatt vurderer det som interessant. Miljøvernminister Røed Børli holdt sin jomfrutale og sa at ilmenitt er å frakke ut av fjellet.

Samtidig med utsettelsen vedtok Stortinget at det skal opprettes et næringsfond på 100 millioner kroner for å sikre industriell sysselsetting i Tyssedal.

Gro Harlem Brundtland spurte Kr.F.-representantene om det var mulig å skape noen større troverdighet til det som nå loves enn det befolkningen til nå litt har fått.

— Det er alvorlig fare på færre når folk får mer enn god nok grunn til å tvile på politikerens troverdighet og motiver, sa hun.

Nestleder i Kr.F.s gruppe Hans Olav Tungevik fremla-



Petter Thomsen

### Politisk Forum

## Willoch står på

Det er ikke det minste bemerkelsesverdig at mange slags kommentarer følger i kjølvannet av den forslingsfulle begivenhet som fant sted på Stortet og i Stortinget onsdag. Landet har igjen fått en flertallsregjering. Det er tolv år siden sist.

Hvordan Regjeringen sammensettes og det omfattende politiske grunnlag, budene, avhenger i noen grad av hvilke øyne som ser. Høyrepartiene har lenge vært av Regjeringen støttet med 11 fra Høyre.

Det er en større representasjon og dermed en større politisk innflytelse for Kristelig Folkeparti og Senterpartiet enn det innbyrdes styrkeforhold mellom de tre samarbeidspartiene skulle tilsi. Men selv om ikke alle departementene tillegges den samme vekt, på den annen side er det ikke grunn til å legge skjul på at Høyre er tilfelle med både det politiske grunnlag som nå er lagt og den sammensetning Regjeringen har fått.

Realist  
Men det som er særlig bemerkelsesverdig ved denne regjeringssammensetningen er hvor raskt det lot seg gjøre å endre flertallsregjeringens politiske grunnlag. Mens de borgerlige folkepartier i 1982 tok 25 dager for å utløse sammenhengende Regjeringen, var det denne gangen bare tre dager å nå fram til målet.

Der skjedde altså bare et menneske i 1982 er en annen enn i 1985. Det skyldes i høy grad også at de tre partier idessett på forhånd hadde nådd fram til en felles enhetsnærhet av de hovedoppgaver Regjeringen står overfor i den økonomiske situasjonen landet er i. Det skal heller ikke legges skjul på at forhandlere fra alle tre partier gikk til verks med sikte på å oppnå positive resultater og at det hele tiden hersket en meget god atmosfære, selv om deler av pressen søkte å gi inntrykk av noe annet.

### Oppslutningskryst

At Arbeidspartiet målt videre som før både mot regjeringens innhold og Regjeringens sammensetning, er det ikke grunn til å tvile på. Det samme gjelder for Kr.F.

Onsdag 15. juni 1983 11

## «Leve Tyssedal» krev bygging av aluminiumsfabrikk

Vedtak på folkemøte i Velforeningen Leve Tyssedal 13.6.1983.

Vi i Tyssedal har nå til fulle erfart korleis stortingsfleirtallet gjer seg sjølv til brikker i kapitalkreftene sitt spel for å sikra seg kontrollen og profitten av Tyssedal-krafta. Vi har erfart kor mykje valøfta og slagorda med vyer om familjepolitikk og distriktpolitikk er verd. Vi har erfart korleis til og med dei fremste talsmenn for vår sak har falt oss i ryggen for ein statsrådpost i kabinettet til Willoch.

Men vi i Tyssedal har også erfaring frå krafta som ligg i ein-skapen i ein lokalbefolkning, styrken som ligg i gjensidig solidaritet mellom arbeidsfolk, og vi veit at einaste måten vi kan vinna kampen er å byggja opp under nettopp dette og dermed styrkja kampen for Tyssedal.

Krava som befolkningen i Tyssedal no reiser er følgjande:  
1. Sysselsettingsgarantien på 262 permanente arbeidsplassar i Tyssedal skal stå ved makt.

2. Modernisering av aluminiumsfabrikken er framleis det einaste framlagte alternativet som kan innfri garantien og dermed sikra Tyssedal som lokalsamfunn. Vi krev difor at aluminiumsfabrikken vert bygd.  
3. Vi krev midlar til sysselsetting av 262 personar inntil garantien er innfridd med like mange permanente arbeidsplassar.  
4. Vi krev Tyssedal-saka opp til endeleg avgjerd i Stortinget i haust der sysselsettingsgarantien skal innfriast.

Vi gjev styresmaktene ein frist på 6 månader for ny Stortingshandsaming. Om ikkje saka er komen opp og krav innfridd innan 9. desember d.å. vil vi gå til nødvendige aksjonar for å sikra framtida for Tyssedal.

Støtten vi har fått frå heile landet har auka kraftig i styrke. Vi kjenner det som vi har heile Distrikts-Norge i ryggen når vi no går laus på ein ny runde i Tyssedalskampen. Vi sender i dag ei varm takk til fagforeningar, samorganisasjonar, andre organisasjonar og enkeltpersonar for all oppmuntring og støtte. Vi veit at de vil stå saman med oss også i kampen framover.  
**LEVE TYSSEDAL!!**



**TYSSEDØLERI! ODDINGER!**  
Vi gir oss ikke: Tyssedal skal leve!  
Kom på  
**FOLKEMØTET I KVELD**

Kl. 18,30 i Samfunnshuset i Tyssedal. VIKTIG!

- Hvor står vi etter stortingsdebatten 9. juni?
- Rapport fra Oslo-turen!
- Hva gjør vi framover?

Allsang. Husk: Samhold gir styrke!

Velforeningen «Leve Tyssedal»

Korkje avd. 44 eller Odda kommunestyre har gjort vedtak (pr. 1. juli 1983) som kan gje noko peikepinn på korleis dei vil stilla seg framover. Men alt tyder på at det er stor politisk semje om det refererte vedtaket frå Leve Tyssedal.



## TYSSEDAL SKAL LEVE

*Mel.: Dei internerte menn*

Bak dei høge fjella ligg ei bygd med nesten tusen folk.  
Sidan først på hundreåret har vi temma watt og volt.  
i tre heile gen'rasjonar har vi våre krefter gitt.  
Men nå har dei fjerna verket —  
vi skal fjernast litt om litt.

Aldri skal dei få det til,  
vi må stoppe det dei vil.  
Heimen vår skal ikkje tynast.  
Tyssedal skal leve!

Bak, bauxitt i sot og gass vi koke til aluminium.  
Vi har støypt for milliardar kroner, dollar,  
franc og pund.  
Lønna vår var aldri raus, men stort sett nok til mat på  
bord.  
Men profitten av vårt arbeid alltid ut or landet for.

*Ref.:*

Sommar'n nittenfemogsytti vart vi kjøpt til statsbedrift.  
Endeleg, no såg vi sjansen for ei ny, moderne drift.  
Vi forstod kje godt nok den gong statens plan for DNN,  
sidan har vi gong på gong blitt minna om  
kvar dei vil hen.

*Ref.:*

Mange fagre løfter fekk vi av dei mektige som rår,  
men det var ein slu manøver for å stele krafta vår.  
Simpelt svik vert her i landet kalla for «demokrati»  
dersom staten no går frå sin soleklare garanti.

*Ref.:*

Tyssedal, ein prøvestein for statens nye politikk.  
Etter oss vil mange andre få om halsen same strikk.  
Derfor:  
Syd-Varanger, Sulis, Slemmestad, Bremanger, Mo  
ta fram fanene og kom, bli med i kampen her og no!

Aldri skal dei få det til,  
vi skal stoppe det dei vil.  
Heimane skal ikkje tynast!  
Samfunna skal leve!

*Kjell Folkvord*

## KAMPEN OM DNN

*Mel: Farewell to Carlingford*

Det var ein tidleg novemberdag  
i nittenåttiein.  
Vi måtte ta fram faner og flagg  
og stille kvar og ein.

For då stod kampen om DNN  
i Odda og i Tyssedal  
men vi kjem kje til å gi oss førenn  
aluminiumen renn  
aluminiumen renn!

Så kom ein tidleg junidag  
i nittenåttito.  
På nytt tok vi fram våre faner og flagg,  
dei gav oss ikkje ro.

For då stod kampen om DNN  
i Oslo og i Tyssedal  
men vi kjem kje til å gi oss førenn  
aluminiumen renn  
aluminiumen renn

Eit nytt år gjekk, på nytt står eit slag  
i nittenåttitre.  
Endå må vi slåst mot svik og bedrag  
Her skal kje leggst ned!

For kampen står om DNN  
og framtida til Tyssedal.  
Og vi kjem kje til å gi oss førenn  
aluminiumen renn  
aluminiumen renn!

*Kjell Folkvord*



## Kva lærdommar har AKP(m-l) hausta gjennom desse ti åra?

I AKP har vi alltid meint at leiinga i LO og DNA er ein fraksjon av borgarskapet. Derfor har vi alltid møtt dei og utspela deira med skepsis og aldri gått på limpinnen og trudd at dei nokon gong har hatt Tyssedal sine interesser i bakhovudet. Samstundes har vi vore skeptiske til lokale «arbeidarleiarar» som har hatt denne delen av borgarskapet som førebilete og rettesnor. Gjennom desse ti åra har vi erfart at kamp mot sosialdemokratiet og mot klasesamarbeidslinja i fagrørsla krev stor grad av *tolmod*. Skulle vi ha gitt opp etter første eller tiende gongen forslaga våre blei nedstemt, hadde ikkje kamplinja makta å slå seg gjennom korkje i 1981 eller seinare. Vi må tørre å «ri-va keisaren ned av hesten», tørre å reisa nødvendige forslag — sjølv om vi veit dei blir nedstemte. Vi må vera villige til å ta den tida som trengs for at kamplinja skal vinna gjennom.

I Tyssedal-saka har vi også sett det nære sambandet som fins mellom borgarskapet og lokale «arbeidarleiarar». Heilt i frå starten blei det oppretta utval der representantar frå DNA-regjering, kommune og fagforening sat samla. I denne boka har vi dokumentert korleis regjeringa nytta dette utvalet til å hindra at tyssedølane sjølv slost og aksjonera.

Vi har på andre sida dokumentert korleis bedriftsleiinga og leiinga i

fagforeninga sit saman på møter og legg opp «felles-strategi» for å «unngå unødige demonstrasjonar». Såpass krev vel bedriftsleiinga igjen for dei mange gratis delegasjonsreisene DNN har spandert på fagforeningsleiinga. Vi meiner også å ha dokumentert behovet for at arbeidsfolk fører kamp *både* mot borgarskapet og dei arbeidarleiarane som *kun* har til oppgåve å hindra at arbeidsfolk sjølv kjempar. Utan denne kampen kan ikkje kamplinja vinna fram og det er uråd å oppnå resultatlar.

Arbeidsfolk ønskjer sikre arbeidsplassar, tryggleik i jobben, at produkta er til beste for samfunnet. I Tyssedal har vi opplevd at *demokratiet* ikkje gjeld for oss. To gonger har tyssedølane vore på Stortinget og opplevd korleis landet si øvste forsamling gjer sitt beste for at lokalsamfunnet vert nedlagt. Kva hjelp er det for arbeidsfolk å få lov til kvart fjerde år å få røysta inn personar på Tinget som skal hestehandla vekk arbeidsplassane våre??

Dette «mjuke» diktaturet vert i praksis avskydd av arbeidsfolk. Det folk treng og ønskjer er at arbeidsfolk får bestemma, at borgarskapet vert detronisert, eit sosialistisk Norge. Kanskje kan vi vinna ein del mellombelse sigarar — om vi kjempar dyktig og hardt nok. Men varige, trygge arbeidsplassar kan vi berre

oppnå under sosialismen!

Kva rolle har så AKP(m-l) spela i Tyssedal-saka?

I AKP har vi heile tida hatt som målsetting å vera *leiarar*. Gjennom undersøkingar og diskusjonar blant arbeidskameratar og naboar, politiske og teoretiske studier, har vi laga analyser og stilt paroler for kampen framover.

Etter beste evne har vi prøvd å setta oss inn i borgarskapet sin strategi og planar. Vidare har vi sjølv sagt utvikla ein eigen strategi og taktikk for å setta politikken vår ut i livet. Som grunnlag for alt vårt arbeid har vore trua på at tyssedølane sjølv utgjer ei enorm kraft (noko som no skulle vera bevist) og at politikken må utviklast saman med folk utafor partiet og ikkje bak eit skrivebord.

Om vi har lukkast i målsettinga vår, får bli opp til andre å vurdere. Vi vil her berre understreka den kollektive jobbinga i partiet. Enkelt-personar som har stått fram i media har gjort det på grunnlag av dei diskusjonar som har stått på linjer, analyse og taktikk i partiet. Og «partiet» er ikkje anna enn ei samling «vanlege folk» med arbeidsdag som andre folk, som er ramma av problema som andre og som strevar og virkar i lag med resten av tyssedølane og oddingane.



## Korleis oppsummerer AKP(m-l) stoda i dag og kva muligheter har Tyssedal framover?

Tyssedal — gjennom den kampen, den innsatsen som kvar einskild tyssedøl har gjort, er blitt eit forbilde for arbeidsfolk over det ganske land.

Tyssedal er blitt eit symbol på *klassekamp*: Arbeidsfolk som kjempar for retten sin mot borgarskapet sitt «mjuke» diktatur. Tyssedal er ikkje blitt kjent fordi leiarane har kjempa så hardt (i stortingskorridorane og i møte med byråkratane i departementa). Tyssedal er blitt kjent når slike leiarar er blitt sett til sides og folk sjølve har gjort jobben — enten demonstrasjonen har vore i Tyssedal, Odda eller Oslo.

Situasjonen for Tyssedal er svært vanskeleg. Det ligg store verdiar i Tyssedalskrafta og eit samla borgarskap har bestemt seg for at dei skal hausta maksimalprofitt ut av denne krafta. Den politiske situasjonen på Stortinget er prega av denne økonomiske rettesnora.

Opp mot desse mektige kreftene skal så dei kanpt 1000 tyssedølene stå. Enno har dei ingen sterk landsomfattande organisasjon i ryggen. Landsorganisasjonen vil ikkje ta opp kampen «fordi det er så mange andre industrisamfunn som har problemer». Det tyssedølene har med seg er

førebels dei 70 fagforeningsfanene som slutta opp om ringen rundt Stortinget 9. juni.

Satsar borgarskapet hardt nok, er det kanskje ikkje nok om alle betalende medlemmer i alle 70 fagforeningane stiller opp utanfor Stortinget neste gong.

Men Tyssedal har ikkje noko val, etter vårt syn. Skal ein ha von om å berga dalen, om å få nye arbeidsplassar er ein nøydde til å planleggja nye aksjonar; evt. nye Oslo-turar, streikar, også vurdera å nytta krafta som kampmiddel når ho rammar hardast.

Vi må skunda oss å leggja til: Dette er ikkje berre AKP(m-l) sitt syn. Utan tvil vert dette synet delt av tyssedøler flest.

Men mange problem må løysast undervegs.

Truleg vil flesteparten av dei 154 som framleis er tilsett ved DNN Aluminium i første omgang bli permittert. Dermed er det lite igjen av fagforeninga på Nitriden. Velforeningen Leve Tyssedal vil måtte stå fast på oppgåva som tyssedølene sin organisasjon, som i samarbeid og solidaritet med fagrørsla i Odda og landet ellers må utløysa dei kampane som vil

måtte komma om Tyssedal skal overleva.

Sjølv om ein gjennom kamp har ein ørliten sjanse om å vinna siger, ser vi at det ein kan oppnå vil vera mellombelse ordningar. Vi ser korleis herskarklassen har utvikla eit system som gjer det «lovleg» å utøva slike brotsverk som er blitt gjort mot Tyssedal. Vi ser korleis stortingsrepresentantane vert nikkedokker i kapitalen sitt skodespel og der media oppfattar det som akseptable politiske verkemiddel t.d. å ofra eit lokalsamfunn mot å bli handelsminister i regjeringa.

For alle som har følgd Tyssedal-saka desse ti åra, for alle som har spera augene opp for ei slik framferd mot eit lokalsamfunn, for alle som kjenner redsla for at neste gong er det

vårt lokalsamfunn og *min* arbeidsplass som skal omstillast og nedleggjast — for alle oss burde det etter kvart bli sjølv sagt at vi stiller oss målet å avskaffa dette herskarsystemet, avskaffar dette diktaturet der eit heilt distrikt sine vurderingare og rettar vert sett til sides for kapitalen sin trong for maksimalprofitt til ei kvar tid.















